Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

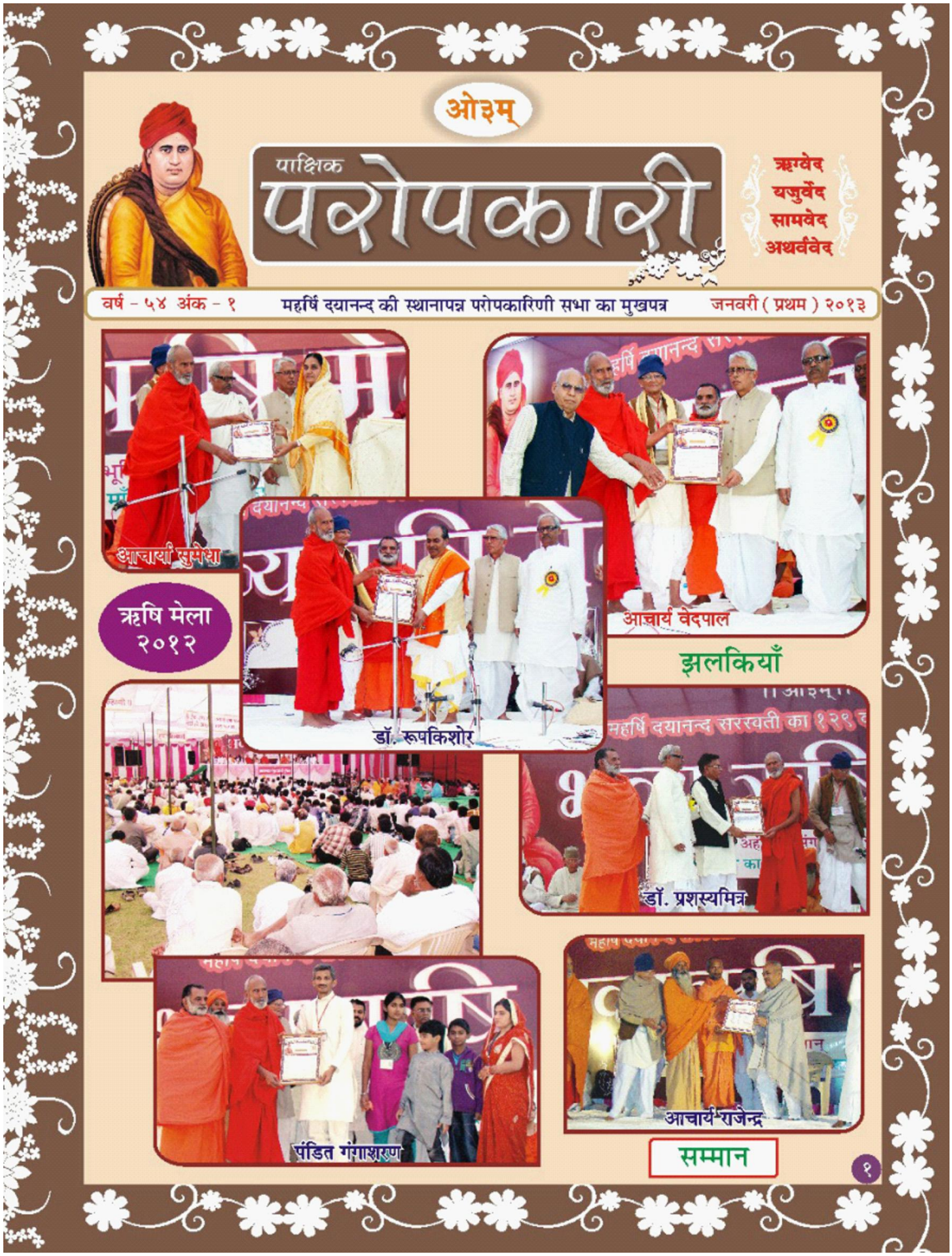

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५३ **अंक** : ०१
दयानन्दाब्द: १८८
विक्रम संवत्: पौष कृष्ण, २०६९
कलि संवत्: ५११३
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११३

सभा प्रधान-गजानन्द आर्य
अवै. सम्पादक-प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जनवरी प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. मोदी ही क्यों?	सम्पादकीय	०४
२. ज्ञान में परिवर्तन	रामगोपाल गर्ग	०७
३. जिज्ञासा-समाधान-४०	सत्यजित्	०८
४. यज्ञ विषयक गोष्ठी-२	सोमदेव, डॉ. शीतल	१०
५. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१५
६. यह शरीर देवताओं की नगरी	प्रो. चन्द्रप्रकाश	२०
७. सत्यार्थप्रकाश पर हुए कार्य	प्रो. उमाकान्त	२२
८. उन्हें चुटकुले व किस्से पसन्द..	इन्द्रजित् देव	२५
९. चतुर्वेदविद्: आमने-सामने-३६	डॉ. शीतल	२७
१०. गोवंश की रक्षा का एक प्रयास	ब्र. प्रभाकर	३१
११. गतिशीलता जीवन का उद्देश्य	डॉ. अजय	३३
१२. पुस्तक परिचय	देवमुनि	३८
१३. पाठकों की प्रतिक्रिया		३८
१४. संस्था समाचार	ब्र. प्रभाकर	४०
१५. आर्यजगत् के समाचार		४१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सम्पादकीय-

मोदी ही क्यों?

हर कार्य का कोई न कोई कारण होता है। दर्शन का सिद्धान्त है। बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता, कार्य हुआ है तो कारण अवश्य होना चाहिए। सामान्य रूप से हमारे समाज में धारणा बन चुकी है चुनाव केवल पैसे से जीते जाते हैं। कहीं धरणा घर कर गई है कि बाहुबल से लोग-चुनाव जीतते हैं। कुछ लोग मानते हैं जनता को जातिगत समीकरण में लाकर ही चुनाव की वैतरणी पार की जा सकती है। कुछ नीतिकार कहते हैं तुष्टिकरण की नीति अपनाकर ही सफलता के आंकड़े को छुआ जा सकता है। विचार किया जाए तो स्वीकार करना पड़ेगा कि ये सभी बातें दिन-प्रतिदिन के जीवन में हम देखते हैं। उनके सत्य होने से इन्कार भी नहीं किया जा सकता। चुनाव में पैसा बांटकर मत खरीदे जा सकते हैं। कभी पुराने समय में वर्तमान मुख्यमन्त्री नवीन पटनायक के पिता बीजू पटनायक ने कहा था यदि कुछ करोड़ रुपया मेरे पास हो तो मैं भारत में चुनाव जीत सकता हूँ। इसको बाद के लोगों ने सिद्ध करके बताया। लालू यादव ने अपने बाहुबल और जातीय समीकरणों के चलते लम्बे समय तक बिहार में राज्य करके बताया। मुलायम सिंह यादव और मायावती ने अपने जातीय समीकरण और तुष्टिकरण की नीति बताकर कभी सत्ता खोई, तो कभी सत्ता पाई। भारत सरकार के रूप में सत्ता कांग्रेस की रही या गैर कांग्रेस की, किसी ने भी तुष्टिकरण से सफलता पाने के प्रयासों में कहीं पर कोई कसर नहीं छोड़ी। इन बातों के सच होते हुए, गुजरात में कौनसी बात सच हुई, यह जानना आज के सन्दर्भ में विशेष महत्त्व रखता है।

इन्हीं सब बातों से सत्ता मिलती, तो गुजरात में नरेन्द्र मोदी को सत्ता नहीं मिलनी चाहिए थी। जिन साधनों से लोग समझते हैं सत्ता मिलती है, वे सब साधन नरेन्द्र मोदी के विरोधियों के पास मोदी से अधिक मात्रा में थे। मोदी के पास इसके पक्ष में नहीं बल्कि इसके विरोध में बहुत ऐसे कारण थे और हैं, जो वर्तमान समय में राजनीति करने वालों को सत्ता से उखाड़ फेंकने के लिए पर्याप्त हैं। गुजरात में हुए गोधरा काण्ड को हिन्दू मानसिकता पर मुस्लिम आक्रमकता की विजय के रूप में देखा जा रहा था। इस देश का स्वतन्त्रता के बाद से दुर्भाग्य रहा है कि इस देश की बहुसंख्यक हिन्दू कहलाने वाली जनता को उपेक्षा का पात्र ही समझा गया है। इस में सत्ता पर कब्जा करने वाले नेहरू परिवार की योरोपीय परिवेश और ईसाइयत व इस्लामिक घुसपैठ के कारण हिन्दू व हिन्दुत्व के संग नकारात्मक दृष्टि रही। जिस दिन गोधरा हत्याकाण्ड हुआ था, उस दिन भी सत्ताधारी लोगों को इस घटना की निन्दा करना तो दूर, इस पर हमें क्या? ऐसा चलता है, ऐसा दृष्टिकोण था, परन्तु हिन्दू जनमानस पर इसकी बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। जिसके परिणाम स्वरूप गुजरात में दंगे भड़के, जिसमें सैकड़ों हिन्दू और मुसलमान लोगों की जानें गईं। अनेक निरपराध लोग भी क्रूरता का शिकार बने। यह भी ठीक है कि इस हत्याकाण्ड को बहुत शीघ्र रोका जाना चाहिए था।

प्रथम तो ऐसा उपाय करना चाहिए था जिससे इस प्रकार की प्रतिक्रिया करने का अवसर ही नहीं आता। ऐसा तब संभव था जब गोधरा के हत्यारों को तत्काल गिरफ्तार किया जाता, उनको दण्ड दिया जाता, परन्तु न्याय करने के स्थान पर उस घटना को लेकर आज तक भी नये-नये बहाने बनाकर उस अपराध को अपराध न मानने का हठ किया जा रहा है, तब जनता की प्रतिक्रिया को रोकने का सामर्थ्य किसमें था? गुजरात के दंगों में जिस पक्ष से भी जो कुछ भी अनुचित हुआ, उसकी निन्दा की जानी उचित है। किन्तु इस विपरीत प्रतिक्रिया को प्रतिक्रिया न मानकर, इसे एक सुनियोजित षड्यन्त्र बताने का प्रयास आज तक भी जारी है। इस क्रम में भारत सरकार व न्याय प्रक्रिया के माध्यम से जो भी किया गया, वह न्याय तो नहीं कहा जा सकता। इस कार्य में व्यक्ति दोषी हो सकता है, परन्तु पूरी सरकार को दोषी ठहराना, पूरी गुजरात की जनता को अपराधी की श्रेणी में खड़ा करना, ये सभी विरोध गोधरा काण्ड के समर्थन की ओर संकेत करते हैं, जो गुजरात के दंगों के कारणों को नहीं देखना चाहते हैं।

गुजरात के दंगे और मोदी को इन प्रगतिशील पाखण्डी धर्म निरपेक्षता वादी लोगों ने संसार के सामने पर्यायवाची के रूप में प्रस्तुत करने में कसर नहीं छोड़ी। इसमें भारतीय सत्ता और राजनीति की बात दूर योरोप, अमेरिका, खाड़ी के देशों में बैठे लोगों ने गुजरात दंगों के बहाने मोदी को बदनाम करने का अन्ताराष्ट्रीय अभियान चलाया। यहीं से मोदी अकेले मोदी नहीं रहे, वे गुजरात के मोदी बन गये। विरोधी मोदी को दंगों का पर्याय बनाना चाहते थे परन्तु जनता ने मोदी को गुजरात का पर्याय बना दिया। मोदी ने गुजरात की जनता को

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

विश्वास में लेकर एक छोड़, तीन चुनाव जीतकर बता दिये। जनता के द्वारा मोदी को बहुमत मिलने पर भी कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने मोदी को कभी मौत का सौदागर कहा तो कभी हत्यारा कहा। मोदी के सहयोगियों को प्रताड़ित व आतंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अमेरीका ने हत्यारा कहकर वीजा देने से इन्कार कर दिया। परन्तु मोदी ने कभी हार नहीं मानी। भारत सरकार ने गुजरात को देय संसाधनों को रोककर मोदी को असफल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

अब यहां एक विचारणीय प्रश्न है क्या केवल गुजरात के दंगों ने मोदी को गुजरात का मोदी बना दिया? गुजरात के दंगों ने नहीं गुजरात दंगों की भूमिका ने मोदी को गुजरात का मोदी बनाया। दंगों के समय पत्रकारों ने पूछा था आप मुसलमानों का विरोध करते हैं? मोदी ने उत्तर दिया हम विरोध किसी का नहीं करते, हम तुष्टिकरण के विरुद्ध हैं। प्रथम जो समाज इस देश में बहुसंख्यक होने पर भी उपेक्षित और पीड़ित चला आ रहा था, जिसके साथ अन्याय और अत्याचार को उपहास का विषय बनाया जाता था, उस समाज में तुष्टिकरण के द्वारा होने वाले अन्याय का विरोध करके बहुसंख्यक समाज की सहानुभूति मोदी ने अर्जित की, इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु इतने मात्र से सत्ता प्राप्त करना और उसे बनाये रखना संभव नहीं है, जबकि विरोध में अन्ताराष्ट्रीय सरकारें खड़ी हों, भारत सरकार जिसके विरोध में हो, उसकी अपनी पार्टी और संगठन जिसके विरोध में हो, वह व्यक्ति इन सबके विरोध को परास्त करके अपनी विजय पताका फहरा सके, उसके लिए भावनात्मक सहानुभूति पर्याप्त नहीं होती। सहानुभूति सारे प्रदेश का प्रतिनिधित्व नहीं करती।

मोदी के साथ शासन का कौशल इस सफलता का कारण है, इसे आज कोई इनकार नहीं कर सकता है। मोदी निर्भीक शासक तो हैं ही, परन्तु नरेन्द्र मोदी के पक्ष में जो बात है, वह है जनसाधारण का समर्थन। जनसामान्य किसी को अपना समर्थन क्यों देगा, जब तक उसका कोई भला न किया गया हो? सामान्य जनता का हित दो प्रकार से संभव है, **प्रथम** उसमें शान्ति और सुरक्षा का भाव हो। गुजरात दंगों के पश्चात् कोई छोटी-बड़ी अप्रिय घटना गुजरात में नहीं घटी, यह निश्चित रूप से शासन की सफलता है। इसके लिए कानून व्यवस्था मजबूत होना आवश्यक है। कुछ वर्ष पूर्व नरेन्द्र मोदी को एक कार्यक्रम में निमन्त्रित करने के लिए गये, तो मोदी प्रशासन की सक्रियता के विषय में जानने-सुनने को मिला। उससे एक सामान्य व्यक्ति का मोदी के विषय में क्या विचार है, यह जानने का अवसर मिलता है। एक व्यक्ति मुख्यमन्त्री का परिचित होने के कारण उनके पास गया और उसने शिकायत की कि उसके घर में चोरी हो गई है, आप कृपा करके पुलिस को फोन कर दें। मुख्यमंन्त्री ने पूछा क्या आपने पुलिस में शिकायत की? उसने उत्तर दिया आपसे मेरा सम्पर्क है, मैंने आपके कठिन दिनों में, आपको अपने घर में रखकर आपकी सहायता की है, क्या आप मेरा इतना सा काम नहीं करेंगे? मुख्यमन्त्री मोदी का उत्तर प्रशासन की कार्यकुशलता को बढ़ाने वाला है। उन्होंने आने वाले व्यक्ति से कहा पहले आप पुलिस में शिकायत करें, उसके अधिकारी से मिलें, फिर भी कहीं पर कार्य न हो तो आप मुझसे अवश्य मिल सकते हैं। उस व्यक्ति ने जो कहा उसकी चर्चा यहां अनावश्यक है, परन्तु सामान्य व्यक्ति की शिकायत सुनी जाना, उसकी सुरक्षा का विश्वास होना, सामान्य जनता के समर्थन का प्रमुख आधार है।

जन साधारण के समर्थन का **दूसरा** महत्त्वपूर्ण कारण है उसको सुविधा मिलना। प्रतिदिन के जीवन में उसे आजीविका उपार्जित करने का अवसर मिलना तथा उसे दिन-प्रतिदिन के जीवन में सुविधा होना। यातायात की सुविधा, कार्यालयों में कार्य की सुविधा, साधन सड़कों की सुविधा, जिससे एक सामान्य व्यक्ति जिसने कभी मुख्यमन्त्री को देखा नहीं है, उसे देखने की आवश्यकता भी नहीं है, ऐसे व्यक्ति का समर्थन भी मिल सकता है, जब उसको यह सब प्राप्त होता है। इन सब बातों को गिनाने की आवश्यकता नहीं, परन्तु देखा गया है गुजरात में बिजली की कमी नहीं, उसमें कभी कटौती नहीं होती। इसके विपरीत उत्तरभारत विशेष रूप से उत्तरप्रदेश जैसे प्रान्त जहां बिजली जाती कब है पर प्रश्न निरर्थक है, वहां प्रश्न है यहां बिजली आती कब है? उद्योग, व्यापार, कृषि, परिवहन सब बिजली पर निर्भर हैं, अतः सामान्य व्यक्ति मोदी के प्रति सद्भावना रखे, यह स्वाभाविक है। एक दिन एक टैक्सी चालक के साथ गुजरात में जाते-जाते मार्ग में चर्चा हुई, गुजरात में सड़कों की दशा कैसी है? चालक कहता है जब तक मोदी है सड़कें तो अच्छी होंगी ही। अतः जनसमर्थन मोदी के केवल भावनात्मक पक्ष को ही नहीं, मोदी के द्वारा गुजरात की जनता के लिए किये गये कार्यों के भी कारण है।

लोग कितने मूर्ख हो सकते हैं इसका एक उदाहरण देख लेना उचित होगा। एक व्यक्ति का कहना था मोदी पिछड़े वर्ग से है, अतः अच्छे मुख्यमन्त्री हैं। इस भले आदमी से कोई पूछे, लालू यादव कौन से वर्ग से है? या

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मायावती का शासन आदर्श शासन रहा है? अधिकांश लोग अपनी मूर्खता को ही अपना आविष्कार समझ लेते हैं। किसी व्यक्ति की जाति उसे महान् बनाती, तो उस जाति में चोर-डाकू, अपराधी तो उत्पन्न ही नहीं होते, परन्तु ऐसा तो देखने में नहीं आता। कुछ लोग अपनी तुच्छ मानसिकता को अपने महत्त्व का आधार बना लेते हैं। यदि मराठे समझते हैं शिवाजी मराठा थे इसलिये शिवाजी थे, तो आज हर मराठा शिवाजी होना चाहिए। यदि राणा प्रताप राजपूत होने से शूरवीर थे, तो हर राजपूत राणा प्रताप हो जाता, परन्तु ऐसा देखने में नहीं आता। एक बार सड़क चलते एक बहुत बड़ा पट्ट देखा, जिस पर लिखा था 'बनिया समाज के गौरव महात्मा गाँधी'। महात्मा गांधी का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा, जो सारे देश व समाज का गौरव था, वह बनिया समाज तक सिमट कर रह गया। इससे आगे गोत्र और उपजातियां भी होती हैं।

किसी जाति में जन्म लेने मात्र से कोई महान् बन सकता है, तो रावण और कंस किसी कम ऊंचे कुल में उत्पन्न थे? वास्तव में संसार में बुराइयों की विजय देखी जाती है, परन्तु वह भौतिकता की विजय है। वह आत्मा की विजय नहीं है। जब तक मनुष्य में आत्मिक गुणों का विकास नहीं होता, तब तक सांसारिक बातें उसे बड़ी लगती हैं। सांसारिक बातों की टक्कर सांसारिक वस्तुओं से होती है। यदि कोई आत्मबल वाला व्यक्ति जनता के सामने आता है तब जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म, भाषा, क्षेत्र ये सब शब्द उसके लिए निरर्थक हो जाते हैं। आज मोदी गुजरात के चुनाव जीतकर कानून का रक्षक, शान्ति व्यवस्था का संस्थापक, गुजरात का विकास पुरुष कहलाया है, वह व्यर्थ नहीं। यह अच्छाई गुजरात की सीमाओं को जल्दी ही लांघेगी और बड़ा हिन्दू समाज ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय समाज मोदी को आदर्श नेता के रूप में स्वीकार करेगा।

आज के मोदी प्रसंग पर महाभारत का एक प्रसंग सटीक बैठता है। पाण्डव कर्ण के प्रभाव से जब भी पराजित अनुभव करते थे, तब-तब वे उसकी कुलीनता पर प्रश्न उठाते थे। कभी वे उसे राजा नहीं मानते थे, तो कभी सूत पुत्र कहकर तिरस्कृत करते थे। तब कर्ण ने उत्तर देते हुए कहा था-मैं सूत हूँ, मैं सूत पुत्र हूँ। मैं किसी राजा के यहां, किसी विद्वान्, धनवान् के यहां उत्पन्न नहीं हुआ, क्योंकि किसी कुल में उत्पन्न होना मेरे आधीन नहीं था। मेरा जन्म कहां हो यह देवाधीन है, मैं तो अपने पराक्रम और पुरुषार्थ से तुम्हारा मुकाबला कर रहा हूँ। तुम भी जो तुम्हारा है, उससे मेरी तुलना करो। आज कर्ण की ये पंक्तियां प्रसंगानुकूल प्रतीत होती हैं-

सूतो वा सूतपुत्रो वा, यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्तं कुले जन्म, मदायत्तं तु पौरुषम्।।

-धर्मवीर

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम - आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

'बृहती ब्रह्ममेधा' स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के प्रवचनों के आलोक में आध्यात्मिक चिंतन के क्षण.....

ज्ञान में परिवर्तन

-रामगोपाल गर्ग

हमारे ज्ञान में जो परिवर्तन होता रहता है, उसका एक कारण है-जीवात्मा का प्रयास और दूसरा कारण है-गुणों का प्रभाव। कहीं-कहीं मुख्य कारण शरीर आदि बन जाते हैं। यद्यपि सर्वत्र जीवात्मा का सहयोग बना रहना आवश्यक है अर्थात् जीव के बिना शरीर तो काम करेगा नहीं। दोनों मिलकर चलते हैं। परन्तु कहीं-कहीं जीवात्मा उन साधनों के प्रभावों को रोक नहीं पाता। मान लीजिए, हम कई दिनों से सोये ही नहीं हैं और यात्रा करनी है। रेल के अन्दर गए तो कहीं जगह नहीं मिल रही है। हमने सोचा छत पर बैठें, परन्तु नींद न आए, नहीं तो मृत्यु हो जाएगी। अब आप कितना ही बल लगाइए नींद आएगी। वह तमोगुण इतना प्रभाव डालेगा कि हम उसको रोक नहीं सकते। अब अतिरुग्णावस्था आ गई। कोई भयंकर रोग हो गया, तो बुद्धि का सन्तुलन बिगड़ेगा, समाधि वाला नहीं रहेगा। कितना ही बल लगाइए, समाधि नहीं लगेगी। गुणों का, पदार्थों का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता रहता है।

एक और प्रभाव है-संस्कारों का, चाहे वह जन्म-जन्मान्तरों के हों या इस जन्म के हों। हमने जान लिया कि चोरी नहीं करनी चाहिए। हम पचास वर्ष पूर्व चोरी करते थे और हम पर उसके संस्कार पड़ गए थे। तो इतना ज्ञान-विज्ञान होने पर भी थोड़े से असावधान होते ही चोरी करने की इच्छा होने लगती है। यदि हम उसको रोकेंगे नहीं, तब पहले जैसी मानसिक स्थिति पूरी-पूरी बन जाएगी कि चोरी करना ठीक है। यदि उसको नहीं रोकेंगे, तब शरीर से चोरी कर ही लेंगे।

संस्कारों के बल पर ही ऐसा होता है। हम भी जो योग विद्या पढ़ते-सीखते हैं, आत्मा-परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव को जानते हैं और परिणाम दुःख आदि का भी अध्ययन करते हैं। इतना जानने-समझने के पश्चात् भी हम उन संस्कारों को रोककर नहीं रखेंगे, उनको निर्बल नहीं बनाएँगे, तो वे ही संस्कार, जिनको हम बुरा मानते और कहते हैं, हमें वैसा ही बना देंगे जैसा योगाभ्यास सीखने-सिखाने से पूर्व थे।

यदि हमने किसी घटना से सम्बद्ध कोई अच्छी वस्तु देखने की स्मृति उभार ली, तो हमारे ऊपर उसका अच्छा प्रभाव पड़ने लगेगा और यदि बुरी वस्तु देखी हो, तब बुरी प्रवृत्तियाँ उभरकर हममें बुरी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करने लगेंगी। हमने उस प्रवाह को नहीं रोका तो और भी बढ़ता चला जाएगा और हमें न जाने कहाँ पटक देगा।

जीवात्मा की एक स्थिति है-ईश्वर की उपासना में रहना और दूसरी स्थिति है-लौकिक वस्तुओं की उपासना में रहना। वह इन दो में से एक में रहेगा ही। इन दोनों से बाहर नहीं जा सकता। यदि जीवात्मा ईश्वर की उपासना करता है और लौकिक पदार्थों को छोड़ता है, तब ईश्वर की ओर से उसको ज्ञान मिलता है, आनन्द मिलता है। सब गुण उसमें आ जाएँगे। इसके विपरीत जब वह लौकिक वस्तुओं की उपासना करता है, तब अज्ञान, अधर्म आएंगे। उसको क्लेश पीसने लगेंगे। सारी बुराइयाँ उसको घेरकर खड़ी हो जाएँगी। ये दोनों घटनाएँ सतत होंगी।

जितना-जितना हम अभ्यास करते जाते हैं, उतना-उतना और निपुण होते जाते हैं। यदि हम ईश्वर रूपी निमित्त को उपस्थित रखते हैं, तो नैमित्तिक ज्ञान, बल आदि उत्पन्न होते रहते हैं। जब तक निमित्त बना है, तब तक उसका ज्ञान मिलता रहेगा। निमित्त के हट जाने पर नैमित्तिक गुण भी हमें नहीं मिलेंगे।

-अजमेर।

देव-दयानन्द

-दाताराम आर्य 'आलोक'

आर्यावर्ती बन्धु देखो, दृष्टि उठा चहुँ ओर,
सच्चे सुख आनन्द की नींव रखी दयानन्द ने।

प्रथम तो स्वराज हेतु काज अति महान् देखा,
आर्य सेना खड़ी कर दी ऋषि दयानन्द ने।

निडर आर्यवीर देश हित गये फांसी-झूल,
ऐसी शक्ति भर दी उनमें ऋषि दयानन्द ने।

विद्या ऊपर यहाँ केवल ब्राह्मणों का राज था,
केवल कर्म से बनाये वर्ग ऋषि दयानन्द ने।

-ग्रा व पो.-बुटेरी, तहसील-बानसूर, जिला-अलवर, राज. चल दूरभाष-०९८११७४१९७६

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जिज्ञासा-समाधान-४०

-सत्यजित्

जिज्ञासा ६४-विषय-आर्यसमाज और शूद्र। प्रिय महोदय, निवेदन है कि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका अध्याय २३ वर्णाश्रम, हिन्दी के द्वितीय परिच्छेद में शूद्र के सम्बन्ध में लिखा है-''मनुष्य जाति के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये वर्ण कहाते हैं। वेदरीति से इनके दो भेद हैं-एक आर्य्य और दूसरा दस्यु। इस विषय में यह प्रमाण है 'विजानीह्यार्य्यान्ये च दस्यवो०' अर्थात् इस मन्त्र से परमेश्वर उपदेश करता है कि हे जीव! तू आर्य्य अर्थात् श्रेष्ठ और दस्यु अर्थात् दुष्ट स्वभाव युक्त डाकू आदि नामों से प्रसिद्ध मनुष्यों के ये दो भेद जान ले। तथा 'उत शूद्रे उत आर्य्ये' इस मन्त्र से भी आर्य्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और अनार्य्य अर्थात् अनाड़ी जो कि शूद्र कहाते हैं, ये दो भेद जाने गये हैं। तथा 'असुर्या नाम ते लोका०' इस मन्त्र से भी देव और असुर अर्थात् विद्वान् और मूर्ख ये दो ही भेद जाने जाते हैं। **१.** दयानन्द ग्रन्थमाला द्वितीय खण्ड, वर्ष १९८३, पृष्ठ ४९८। **२.** युधिष्ठिर मीमांसक सम्पादित, वर्ष २००२, पृष्ठ २७५।

इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास में लिखा है-''श्रेष्ठों का नाम आर्य्य, विद्वान्, देव और दुष्टों के दस्यु अर्थात् डाकू, मूर्ख नाम होने से 'आर्य्य' और 'दस्यु' ये दो नाम हुए। 'उत शूद्रे उतार्ये' अथर्ववेद वचन। आर्य्यों में पूर्वोक्त प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए। द्विज विद्वानों का नाम 'आर्य्य' और मूर्खों का नाम शूद्र और अनार्य अर्थात् 'अनाड़ी' नाम हुआ।''

''यह लिख चुके हैं कि 'आर्य' नाम धार्मिक, विद्वान्, आप्त पुरुषों का और इनसे विपरीत जनों का नाम 'दस्यु' अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है। तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, द्विजों का नाम आर्य्य और शूद्र का नाम 'अनार्य्य' अर्थात् 'अनाड़ी' है। **१.** दयानन्द ग्रन्थ माला प्रथम खण्ड, वर्ष १९८३, पृष्ठ २११, पंक्ति १८-२२; पृष्ठ २१२, पंक्ति २५-२८। **२.** आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, वर्ष २००६, पृष्ठ १५१, पंक्ति २५-२८, १७-२०

इस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ही आर्य्य, श्रेष्ठ, देव, विद्वान्, धार्मिक, आप्त होते हैं और वे ही द्विज हो सकते हैं। इसके विपरीत शूद्र वर्ण- दस्यु, दुष्ट स्वभावयुक्त, डाकू, अनार्य्य, अनाड़ी, असुर, मूर्ख, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् होते हैं, अत: द्विज तो हो ही नहीं सकते। यद्यपि स्वामी जी के अनुसार ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य वर्ण कर्मानुसार हैं, पर मोटे तौर पर आज ये जातियों के रूप में ही हैं, इनके अतिरिक्त अन्य सभी जातियां शूद्र समुदाय की मानी जाएंगी।

आर्यसमाज आर्यों का समाज है, आर्यों की संस्था है, और उपर्युक्त उद्धरणों के अनुसार शूद्र आर्य ही नहीं है, तो आर्यसमाजी भी नहीं हो सकता। वेद आर्यों का धर्मग्रन्थ है, अत: शूद्र वेद से भी वंचित रहेगा। और आर्य न होने से वेद का सुनना भी उसका धर्म नहीं। यद्यपि स्वामी जी ने अपने लेखों में शूद्र की कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं लिखी है। कहीं अनपढ़ तो कहीं मूर्ख को शूद्र बताया है, पर आर्यसमाज के किसी भी वर्गीकरण के अनुसार कोई न कोई तो शूद्र होगा ही।

अत: उपरोक्त उद्धरणों के प्रकाश में, कृपया स्पष्ट करने का कष्ट करें कि द्विज वर्ण की जातियों के अतिरिक्त शूद्र वर्ण की जातियों/व्यक्तियों की आर्यसमाज में क्या स्थिति होगी? दलित संगठनों द्वारा उपरोक्त उद्धरणों में शूद्रों के लिए प्रयुक्त विशेषणों पर आपत्ति उठाये जाने पर आर्यसमाज की प्रतिक्रिया क्या होगी?

कृपया मार्गदर्शन करने का कष्ट करें। शीघ्र उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी। धन्यवाद सहित। **-हरिकृष्ण वाप्ता,**

सुरूप, २७-३० ए रोड़, किनारा कॉलोनी, विजयनगर, कालेवाड़ी, पिम्परी, पुणे-४११०१७
दूर. ०२०-२०२७०४१५, मो-९८८१२५२१८१

समाधान-आर्यसमाज और शूद्र के विषय में जिज्ञासा रखी गयी है। एतदर्थ महर्षि दयानन्द के वचन भी उद्धृत किये गये हैं। महर्षि दयानन्द के वचनों पर विचार करते हुए यह बात सदा स्मरण रखनी चाहिए कि वे ब्राह्मणादि वर्णों को गुण-कर्मानुसार मानते थे, जन्मना नहीं। आजकल समाज में 'शूद्र' शब्द को जन्मना जातिवाचक माना जाता है, उसे महर्षि के वचनों पर विचार करते हुए लागू नहीं करना चाहिए।

'आर्य' शब्द का प्रयोग महर्षि दो भिन्न-भिन्न अर्थों में करते हैं। वे गुण-कर्म की श्रेष्ठता से व आर्यावर्त देश में निवास से 'आर्य' नाम का प्रयोग करते हैं। आर्योद्देश्यरत्नमाला ४० में वे लिखते हैं-''जो श्रेष्ठस्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यविद्यादि गुणयुक्त और आर्य्यावर्त देश में सब दिन से

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

रहने वाले हैं, उनको 'आर्य' कहते हैं।'' यहां उन्होंने आर्यावर्त देश में रहने को भी जोड़ा है। एक ओर वे मनुष्य मात्र में धार्मिक, विद्वान्, आप्त पुरुषों को 'आर्य' कहते हैं, अर्थात् उसमें 'आर्यावर्त देश में रहने' की बात नहीं जुड़ी है, दूसरी ओर 'आर्यावर्त देश में रहना' भी लिखा है।

यदि हम दोनों को मिलाकर एक लक्षण मानें, तो यह महर्षि के मन्तव्य के विपरीत जाता है कि मनुष्य मात्र आर्य हो सकता है। यदि हम मनुष्य मात्र को श्रेष्ठ-धार्मिक होने से 'आर्य' नाम देना मानें, तो 'आर्यावर्त देश में सब दिन से रहने वाले' यह कथन संगत नहीं होता है। अतः आर्योद्देश्यरत्न माला वाले लक्षण को मिलाकर नहीं देखना चाहिए। उसे दो दृष्टि से देखना चाहिए। **पहला**-जो भी धार्मिक, विद्वान् श्रेष्ठ हो वह 'आर्य' है। **दूसरा**-आर्यावर्त देश में रहने वाला भी 'आर्य' कहा जाता है। आर्यावर्त में रहने मात्र से जो 'आर्य' कहाता है, वह अनपढ़-मूर्ख होते हुए भी 'आर्य' नाम से कहा जा सकता है, अधार्मिक होते हुए भी 'आर्य' नाम से कहा जा सकता है, किन्तु उसे वह 'आर्य' नहीं कहा जा सकता जो धार्मिक विद्वान् श्रेष्ठ होने के कारण 'आर्य' कहलाते हैं।

जिज्ञासा में उद्धृत सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास के ये वचन इस संदर्भ में विचारणीय हैं-''आर्यों में पूर्वोक्त प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए। द्विज विद्वानों का नाम 'आर्य' और मूर्खों का नाम 'शूद्र' और 'अनार्य' अर्थात् 'अनाड़ी' नाम हुआ।'' पहले यहां आर्यों के चार भेद में 'शूद्र' नाम लिखा है, फिर अगले ही वाक्य में 'शूद्र' को 'अनार्य' भी लिखा है। यहां स्थूल दृष्टि से देखें तो महर्षि के वचनों में विरोध दिखेगा। पहले 'शूद्र' को 'आर्य' कहा, फिर 'अनार्य' कहा। यदि हम महर्षि को अतिसामान्य बुद्धि वाला व अविद्वान् मानें (जो कि वे थे नहीं) तब तो इस परस्पर विरोध की संगति लगाने की आवश्यकता ही नहीं है, किन्तु यदि महर्षि को अतिविशिष्ट बुद्धि वाला विद्वान् मानते हैं (जो कि वे थे), तो संगति लगानी ही होगी।

वस्तुतः यहां प्रथम वाक्य में जो चारों को आर्य कहते हुए 'शूद्र' को भी आर्य कहा है, वह आर्यावर्त देश में रहने के कारण कहा है। दूसरे वाक्य में 'शूद्र' को आर्य नहीं माना, उसे 'अनार्य' कहा, वह गुण-कर्मानुसार कहा है। सत्यार्थप्रकाश के इस प्रकरण को आगे-पीछे देखने से स्पष्ट होता है कि महर्षि 'आर्य' नाम दो दृष्टि से दिया जाना मानते थे। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के अनुसार 'शूद्रों' को एक दृष्टि से 'आर्य' कहा जा सकता है, दूसरी दृष्टि से 'आर्य' नहीं कहा जा सकता।

अतः यह कहना अनुचित होगा कि 'शूद्र' आर्य नहीं हैं, अतः आर्यसमाज उनका समाज नहीं है, वे आर्यसमाज में नहीं आ सकते। 'शूद्र' आर्यसमाज में आते रहे हैं, आते हैं, सम्मान से वे भी सबके साथ यज्ञादि करते हैं, साथ-साथ भोजनादि करते हैं। संस्कारविधि सामान्यप्रकरण पूर्णाहुति से पूर्व महर्षि ने शूद्र को भी यज्ञ करने का उल्लेख किया है-''यदि कोई कार्यकर्ता जड़, मन्दमति, काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो, तो वह शूद्र है, अर्थात् शूद्र मन्त्रोच्चारण में असमर्थ हो, तो पुरोहित और ऋत्विज् मन्त्रोच्चारण करे और कर्म उसी मूढ़ यजमान के हाथ से करावे।'' संस्कार विधि में लिखी यह बात किसी भी देश के शूद्र पर लागू हो सकती है। अतः आर्यसमाज में जहां 'आर्य' विद्वान् श्रेष्ठ आ सकते हैं, वहां अनपढ़, मूर्ख 'अनार्य' भी आ सकते हैं, आते हैं, उनका सदा स्वागत है। आर्यसमाज ने जन्मना 'शूद्र' कहे जाने का व उनसे दुर्व्यवहार करने का सदा विरोध किया है, उनके हित में आन्दोलन किये हैं, इतिहास साक्षी है।

यह ठीक है कि 'द्विज' संज्ञा मात्र तीन वर्णों की होती है, 'शूद्र' की नहीं, किन्तु इससे उनके आर्यसमाज में आने व वेद पढ़ने का अधिकार छिन नहीं जाता। वेद मात्र द्विजों-आर्यों का धर्मग्रन्थ नहीं है, यह मनुष्य मात्र का धर्मग्रन्थ है। वेद ऐसा धर्मग्रन्थ है जो मानव मात्र को आर्य=श्रेष्ठ बनाता है, इस दृष्टि से यह आर्यों का धर्मग्रन्थ अवश्य कहा जा सकता है। किन्तु यह कहना अनुचित होगा कि इसे अद्विज शूद्र-अनार्य पढ़-सुन नहीं सकते। मनुष्य मात्र वेद को पढ़ने-सुनने योग्य बन सकता है, वेद को समझकर वैसा आचरण कर श्रेष्ठ बन सकता है। वेद मन्त्र स्वयं कहता है-'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥ (यजुर्वेद-२६.२)। इस मन्त्र को महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश तृतीय सम्मुल्लास में उद्धृत किया है व इससे मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने-सुनने के अधिकार को प्रमाणित किया है।

जब महर्षि ने गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था स्वीकारी है, तो तदनुसार नाम रखे जा सकते हैं। शूद्र नाम रखा जाना इतना निंदित क्यों समझा जाये कि इस नाम को गाली ही मानने लगें? महर्षि दयानन्द के वचनों में 'शूद्र' शब्द का प्रयोग गाली रूप में नहीं हुआ है, उसे उसी दृष्टि से देखना चाहिए, आज समाज में प्रचलित अर्थ की दृष्टि से नहीं। महर्षि ने 'शूद्र' को कहीं भी दुष्ट, अधार्मिक, असुर, डाकू,

शेष पृष्ठ ३७ पर.....

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

यज्ञ विषयक गोष्ठी-२ सम्पन्न

-आचार्य सोमदेव, आचार्या शीतल

आर्यसमाज की यज्ञपद्धति में निर्दुष्टता व एकरूपता हेतु परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में यज्ञ विषयक विद्वद् गोष्ठी ११-१४ दिसम्बर, २०१२ **वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुजरात)** में हुई, जिसमें लगभग ३२ विद्वान्-विदुषियों ने भाग लिया। श्रोता के रूप में भी गुरुकुल के ६-७ नये स्नातकों व २०-२५ साधक-साधिकाओं आर्यों ने भाग लिया। गोष्ठी में २९ प्रश्न रखे गये थे, उनमें से २१ पर विचार हुआ। २१ में से १४ प्रश्न निर्णीत और ७ अनिर्णीत रहे। पहले और अन्तिम दिन कुल तीन सत्र चले और बीच के दो दिनों में तीन-तीन सत्र चले। जिनमें १२ का रात्रि कालीन और १३ को प्रात: कालीन सत्र सत्यार्थप्रकाश के संशोधन विषय में परिचर्चा के रूप में चला। चारों दिन यज्ञ के पश्चात् स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के भी उपदेशामृत होते रहे।

प्रथम दिन पहला सत्र २.३०-४.३० तक चला, जिसमें अध्यक्ष पद पर स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी रहे और संचालन आचार्य सत्यजित् जी ने किया। इस सत्र में ईश-प्रार्थना के बाद सभी विद्वानों का परिचय नाम, स्थान, योग्यता, कार्य के रूप में हुआ, पश्चात् गोष्ठी के नियम निर्धारण सम्बन्धी सूचनायें व गोष्ठी-१ में अनिर्णीत रहे विषयों पर आये विचारों पर चर्चा हुई। **दूसरा सत्र** रात्रि ८.००-९.३० तक रहा जिसमें डॉ. वेदपाल जी अध्यक्ष व संचालक आचार्य सत्यजित् जी रहे। इस सत्र में भी गोष्ठी-१ के अनिर्णीत विषयों पर चर्चा हुई।

द्वितीय दिन दिनांक १२ के **प्रथम सत्र** की अध्यक्षा आचार्या सूर्यादेवी जी रहीं और संचालन आचार्या शीतल जी ने किया। इस सत्र से गोष्ठी-१ के अनिर्णीत बचे प्रश्नों पर विचार आरम्भ हुआ। ४ प्रश्न रखे गये जिनमें से २ प्रश्नों पर निर्णय हुआ। **अगला सत्र** २.३०-४.३० तक चला, जिसके अध्यक्ष आचार्य आनन्द प्रकाश जी और संचालक आचार्य सोमदेव जी रहे। इस सत्र में पिछले दो प्रश्नों पर चर्चा हुई, जिनका निर्णय न हो सका। **रात्रिकालीन सत्र** सत्यार्थप्रकाश के विषय में हुआ। सत्यार्थप्रकाश के विषय में जो दुष्प्रचार किया जा रहा कि परोपकारिणी सभा ने सत्यार्थप्रकाश में परिवर्तन कर दिया, इसका स्पष्टीकरण डॉ. वेदपाल जी, डॉ. सुरेन्द्र जी व डॉ. धर्मवीर जी ने किया। इस सत्र के अध्यक्ष आचार्य ज्ञानेश्वर जी व संचालक आचार्य सत्यजित् जी रहे। यह सत्र देर रात तक चला। सत्यार्थप्रकाश के विषय को सुनकर श्रोताओं के मन में जिज्ञासा-प्रश्न बने हुए थे। चर्चा सुनकर अनेक जिज्ञासाएं शान्त हुईं, पर अनेक जिज्ञासाएं नई भी पैदा हुईं, जिनका उत्तर अगले सत्र में देने की व्यवस्था हुई।

दिनांक १३ के प्रात:कालीन सत्र में सत्यार्थप्रकाश विषयक प्रश्नों के उत्तर डॉ. सुरेन्द्र जी, डॉ. वेदपाल जी, डॉ. धर्मवीर जी व आचार्य विरजानन्द दैवकरणी जी ने दिये। सभी प्रश्न-उत्तरों को सुनकर सत्राध्यक्ष आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने कहा कि आज सत्यार्थप्रकाश के विषय में मेरे भ्रम दूर हो गये। **दूसरे सत्र** की अध्यक्षा आचार्या सूर्या देवी जी और संचालिका आचार्या शीतल जी रहीं। इस सत्र में दो प्रश्नों पर विचार हुआ, एक निर्णीत और एक अनिर्णीत रहा। **रात के सत्र** के अध्यक्ष डॉ. धर्मवीर जी रहे व संचालन आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने किया।

दिनांक १४ को अन्तिम समापन सत्र चला, जिसमें अध्यक्ष पद पर आचार्य ज्ञानेश्वर जी रहे और संचालन का कार्यभार आचार्य सत्यजित् जी ने संभाला। इस सत्र में अनेक प्रश्नों पर विचार हुआ और निर्णय तक पहुंचे।

अगली यज्ञगोष्ठी-३ के स्थान व समय पर विचार विमर्श हुआ। स्वामी ऋतस्पति जी ने गुरुकुल होशंगाबाद में गोष्ठी के आयोजन का प्रस्ताव रखा, जिसे सहर्ष स्वीकार कर लिया गया, एतदर्थ स्वामी ऋतस्पति ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अगली गोष्ठी २७-३० जून २०१३ को होगी।

अन्त में विद्वानों के प्रतिनिधि के रूप में स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने संयोजक व व्यवस्थापक का धन्यवाद किया, उन्हें आशीर्वाद दिया। आचार्य सत्यजित् जी 'गोष्ठी संयोजक' ने आये हुए सभी विद्वानों का हार्दिक धन्यवाद व आभार प्रकट किया। आचार्य ज्ञानेश्वर जी का भी धन्यवाद किया जिन्होंने सभी विद्वानों के भोजन व ठहरने की उत्तम व्यवस्था की। आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गोष्ठी का आयोजन बहुत ही सफल व उत्साहवर्द्धक रहा। आर्यसमाज की विद्वत् गोष्ठियों के लिए यह आश्रम सदैव खुला रहेगा। इस प्रकार ईश प्रार्थना करते हुए गोष्ठी सम्पन्न हुई।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गोष्ठी में पूर्व निर्धारित कुल २९ विचारणीय प्रश्नों में से २१ प्रश्नों पर चर्चा हो पाई। उनमें से १४ निर्णीत रहे, ७ अनिर्णीत रहे। ८ प्रश्नों पर चर्चा नहीं हो पाई।

जो प्रश्न निर्णीत हुए, वे इस प्रकार हैं-

प्रश्न १-क्या यज्ञोपवीत धारण किए बिना यज्ञ नहीं किया जाना चाहिये?
स्थिति-निर्णीत। यज्ञोपवीत धारण किए बिना यज्ञ नहीं किया जाना चाहिये। किन्तु अपवाद की स्थिति में बिना यज्ञोपवीत धारण किये भी यज्ञ करना अनुचित नहीं है।
प्रश्न २-यज्ञ हेतु घी को हवनकुण्ड में यज्ञाग्नि में ही उष्ण किया जाना क्या उचित है?
स्थिति-निर्णीत। उचित नहीं है। यज्ञ से पूर्व ही घृत उष्ण कर लेना चाहिये। किन्तु अपवाद की स्थिति में यज्ञाग्नि में भी घृत उष्ण किया जा सकता है। जैसे, अतिशीत प्रदेशों में जहां पूर्व से उष्ण किया हुआ घृत, घृताहुति के समय तक जम जाता है, तो ऐसी स्थिति में यज्ञाग्नि में घृत का पुनः उष्ण किया जाना अनुचित नहीं है।
प्रश्न ३-यज्ञ के आसनों पर कब बैठें? प्रार्थना मन्त्रों से पहले या आचमन, अग्न्याधान से पहले?
स्थिति-**(क)** निर्णीत (ऋत्विग् अभाव पक्ष में)। दैनिक यज्ञ, जिसको यजमान स्वयं करता है, जिसमें ऋत्विग्-वरण नहीं होता है, उसमें यजमान प्रार्थना मन्त्रों के पहले से ही यथास्थान बैठ जाये, उसके बाद ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासनादि कृत्यों व यज्ञ को करे। **(ख)** अस्थायी रूप से निर्णीत (ऋत्विग्-वरण पक्ष में)। विशेष-यज्ञ, जिसमें ऋत्विग्-वरण किया जाता है, ऐसे यज्ञों में पहले अन्यत्र बैठकर ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर लेनी चाहिये। तत्पश्चात् यज्ञ के आसनों पर यथास्थान बैठना चाहिए।
प्रश्न ४-जो अग्न्याधान जिस व्यक्ति के द्वारा किया गया है, उस अग्नि में क्या कोई अन्य व्यक्ति भी अग्निहोम कर सकता है?
स्थिति-निर्णीत। कर सकता है।
प्रश्न ५-क्या यज्ञाग्नि में साक्षात् हाथ से द्रव्य (सामग्री/मिष्ट) की आहुति दी जा सकती है अथवा द्रव्य की आहुतियों के लिए भी चम्मच आदि पात्र का प्रयोग होना चाहिये?
स्थिति-निर्णीत। हाथ से ही द्रव्य (सामग्री/मिष्ट) की आहुति दी जानी चाहिये। किन्तु आवश्यक होने पर (बड़े यज्ञकुण्डों में, जहां हाथ से आहुति देना सम्भव नहीं है और भात के अति उष्ण होने पर) चम्मचादि भी प्रयोग किये जा सकते हैं।
प्रश्न ६-यज्ञ करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
स्थिति-निर्णीत। पर्यावरण शुद्धि→आरोग्य→सुख की वृद्धि व ईश्वर की प्राप्ति।
प्रश्न ७-यदि यज्ञकर्त्ता एक ही हो तो, घी के साथ सामग्री की भी आहुति दे या नहीं?
स्थिति-निर्णीत। घृत के साथ सामग्री की भी आहुति दे। देने का प्रकार-१) घृताहुतियों तक केवल घृत की आहुति दे। तत्पश्चात् बचे हुए घृत को अपेक्षित सामग्री में मिलाकर बची हुई आहुतियां दे। २) घृताहुतियों तक केवल घृत की आहुति दे। पश्चात् जब सामग्री की भी आहुति देनी हो, तब एक मन्त्र से प्रथम घृत की आहुति देकर तत्काल बाद सामग्री की आहुति दे अथवा पूर्व में सामग्री की आहुति देकर तत्काल बाद घृत की आहुति दे।
प्रश्न ८-पूर्णाहुति व स्विष्टकृत आहुति केवल यजमान द्वारा दी जावे या कुण्ड के चारों ओर बैठे व्यक्तियों द्वारा या यज्ञ में सम्मिलित सभी लोगों द्वारा?
स्थिति-निर्णीत। केवल यजमान द्वारा दी जावे।
प्रश्न ९-यज्ञ समापन में पूर्णाहुति के तुरन्त पश्चात् घृतपात्र में शेष घृत में से घृत को हाथों में लेकर शरीर के अंगों पर लगाना क्या उचित है?
स्थिति-निर्णीत। उचित नहीं है।
प्रश्न १०-'यज्ञ प्रार्थना' यज्ञ का अंग है अथवा नहीं?
स्थिति-निर्णीत। अंग नहीं है।
प्रश्न ११-यज्ञ के पश्चात् बहुप्रचलित आरती 'जय जगदीश हरे' आदि गाना अनुचित और वर्जित है?
स्थिति-'जय जगदीश हरे' आदि (जो अवैदिक है) गाना अनुचित है।
प्रश्न १२-अग्निहोत्र पूर्ण होने के पश्चात् प्रार्थना 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'सब का भला करो' आदि करनी चाहिये या नहीं? क्या हो, क्या न हो?
स्थिति-निर्णीत। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' आदि का गान अनिवार्य नहीं है। समय हो तो कर सकते हैं। जितना चाहें, जिसको चाहें, उतना व उसको कर सकते हैं। किन्तु ध्यान रहे, वे सब गान-प्रार्थनायें वैदिक होनी चाहियें।
प्रश्न १३-सामूहिक यज्ञ के अवसर पर पंचकुण्डी, सप्तकुण्डी, शतकुण्डी आदि के रूप में यज्ञ-विधान की व्यवस्था की जानी उचित है?
स्थिति-निर्णीत। सामूहिक यज्ञों का होना अनुचित नहीं है।
प्रश्न १४-यज्ञ के अन्त में जयकार क्या-क्या हो?
स्थिति-निर्णीत। जयकारे बोलना अनिवार्य नहीं है। यदि

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

बोलना चाहें तो **वैदिक-नारे** यथाकाम बोल सकते हैं।

विचारित किन्तु अनिर्णीत-प्रश्न

प्रश्न १-संकल्प पाठ कब करें? संध्या, स्तुति-प्रार्थना-उपासना के पहले या बाद में (अग्न्याधान से पूर्व)?

प्रश्न २-एक अग्निहोत्र में कितने यजमान हो सकते हैं? यज्ञकुण्ड के चारों और कितने व्यक्ति बैठें? दो-दो करके आठ व्यक्ति अथवा चारों कोनों पर भी चार और, यानि १२ व्यक्ति, या अधिक या मात्र एक/चार?

प्रश्न ३-स्तुति-प्रार्थना-उपासना कब करनी चाहिये? आचमन के पहले या बाद में?

प्रश्न ४-आचमन तथा अंग-स्पर्श, प्रार्थना, स्वस्तिवाचन, शांतिकरण मन्त्रों से पूर्व होना चाहिये अथवा मन्त्रपाठ के उपरान्त अग्न्याधान से पूर्व?

प्रश्न ५-यज्ञ-प्रार्थना में 'हाथ जोड़ झुकाएं मस्तक' शब्दों का प्रयोग किया जाना क्या उचित है?

प्रश्न ६-लक्ष्मी-सूक्त, श्रद्धा-सूक्त आदि के पश्चात् उस-उस सूक्त के देवता के लिए भी आहुति दी जाती है, यथा 'इदं लक्ष्म्यै इदन्न मम', यह उचित है या अनुचित?

प्रश्न ७-यज्ञ-वेदी के चारों ओर बैठे व्यक्तियों के अलावा पीछे बैठे या देर से आने वाले बन्धुओं से भी गायत्री-मन्त्र से आहुतियां दिलवाते हैं। आगे बैठे व्यक्तियों को पीछे कर दिया जाता है, जिन्होंने आचमन आदि क्रिया से यज्ञ आरम्भ किया था। क्या जिन्होंने आचमन, अङ्ग-स्पर्श नहीं किया, वे आहुति दे सकते हैं?

गोष्ठी में पधारे विद्वान्-स्वामी चित्तेश्वरानन्द (देहरादून), स्वामी ऋतस्पति (होशङ्गाबाद), डॉ. वेदपाल (मेरठ), डॉ. धर्मवीर (अजमेर), डॉ. सुरेन्द्र (गुड़गांव), आचार्य ज्ञानेश्वर (रोजड़), आचार्य विरजानन्द दैवकरणी (झज्जर), आचार्या सूर्यदेवी (शिवगंज), आचार्या अन्नपूर्णा (देहरादून), आचार्या शीतल (अजमेर), आचार्य सत्यजित् (अजमेर), आचार्य आनन्द प्रकाश (हैदराबाद), आचार्य रवीन्द्र, आचार्य वेदव्रत (मारकंडा), आचार्य भद्रकाम (दिल्ली), आचार्य अर्जुनदेव वर्णी (गुड़गांव), आचार्य राजेन्द्र (कालवा), आचार्य सत्यव्रत (रोहतक), स्वामी सत्यानन्द (फलौदी), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी (होशङ्गाबाद), आचार्य सत्येन्द्र (अजमेर), आचार्य सोमदेव (अजमेर), भगवानदेव चैतन्य (हिमाचल), ब्र. अरुण आर्यवीर (मुम्बई), आचार्य ओम्प्रकाश (हैदराबाद), श्री मोहनचन्द (अजमेर), श्री इन्द्रजित् देव (यमुनानगर), श्री जीवनलाल (दिल्ली), श्री महावीर मुमुक्षु (मुरादाबाद), ब्र. ज्ञानेन्द्र (हरियाणा), ब्र. सुमेधा (दिल्ली) व श्रीमती उषा (दिल्ली)।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता (१ से १५ दिसम्बर २०१२ तक)

१. देव श्रीराम आर्य, सिरसा, हरियाणा, २. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, ३. एम.एल.गोयल, अजमेर, ४. आनन्द अग्रवाल, मैसूर, ५. हरिशरण, चूरू, ६. देव मुनि, अजमेर, ७. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, ८. रजनीश कपूर, नई दिल्ली, ९. नाथूलाल त्रिवेदी, भीलवाड़ा, १०. रामप्यारी त्रिवेदी, भीलवाड़ा, ११. सीताराम गोयल, सूरत।

-मंत्री, परोपकारिणी सभा अजमेर

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता (१ से १५ दिसम्बर २०१२ तक)

१. डॉ. हरिदत्त द्विवेदी, फर्रुखाबाद, २. वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर, ३. राजेश त्यागी, अजमेर, ४. गीता देवी बांगड़, अजमेर, ५. सत्यप्रकाश झंवर, ब्यावर, अजमेर, ६. अशोक राठी, ब्यावर, अजमेर, ७. गोविन्द कुमार शर्मा, किशनगढ़, अजमेर, ८. आरती जादौन, जयपुर, ९. डॉ. ओमवीर सिंह शिवपुरी, जयपुर, १०. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, ११. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, १२. दिवाकर गुप्ता, अजमेर, १३. यतीन्द्र, अजमेर, १४. राजपुताना म्युजिक हाउस, अजमेर, १५. सूर्या कुमार माहेश्वरी, अजमेर, १६. पद्माराम, बालोतरा, बाड़मेर, १७. दिव्या जौली, नई दिल्ली, १८. रामकिशोर शर्मा, जयपुर।

-मंत्री, परोपकारिणी सभा अजमेर

ई-मेल द्वारा परोपकारी नि:शुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही नि:शुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा।

अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह नि:शुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

मनुष्यों को योग्य है कि सर्वथा आलस्य को छोड़कर पुरुषार्थ ही में निरन्तर रह के मूर्खपन को छोड़कर वेदविद्या से शुद्ध की हुई वाणी के साथ सदा वर्तें और परस्पर प्रीति करके एक दूसरे का सहाय करें। जो इस प्रकार के मनुष्य हैं, वे ही अच्छे-अच्छे सुखयुक्त मोक्ष वा इस लोक के सुखों को प्राप्त होकर आनन्दित होते हैं, अन्य अर्थात् आलसी पुरुष आनन्द को कभी नहीं प्राप्त होते।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-३.४७।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

विचित्र आक्षेप-श्रद्धेय पं. रामचन्द्र जी देहलवी आर्यों को सानुरोध कहा करते थे कि यदि कोई पूछे कि वेद क्या है तो आप उत्तर दें-''अनादि ईश्वर का अनादि ज्ञान''। मैंने साठ वर्ष पूर्व उनके मुख से यह सुना था। मैं तब से लेकर आज पर्यन्त यही सीख वाणी तथा लेखनी से देता चला आ रहा हूँ। सर्वज्ञ प्रभु का सद्ज्ञान होने से चारों वेद सच्चे हैं। अग्नि, वायु आदि ऋषियों से लेकर गुरु नानकदेव जी तक सब महात्मा, ऋषि-मुनि, गुरुज्ञानी डंके की चोट से यह घोष करते आये हैं। इस युग में महर्षि दयानन्द ने यह मार्मिक सत्य आर्यों को हृदयङ्गम करवाया। इस सत्य को ग्रहण करने वाले आर्य लोग आत्मविश्वास से भरपूर हृदय से पं. लेखराम जी की ये पंक्तियाँ अपने विज्ञापनों पर ऊपर दिया करते थे:-**नगाड़ा धर्म का बजता है आये जिसका जी चाहे। सदाकत वेद-अकदस अज़माये जिसका जी चाहे।।** अर्थात् वेद के सत्य सिद्धान्तों को जिसका जी चाहे जाँच ले और परख ले।

वेद के एक-एक सिद्धान्त पर किये गये प्रत्येक आक्षेप तथा प्रत्येक शङ्का का आर्य-विद्वान् उत्तर देते रहे। प्रश्न करने वाले भी बड़े-बड़े विचित्र आक्षेप करते रहे। आज एक ऐसे ही आक्षेप का उत्तर दिया जाता है। दो+दो=चार होते हैं। यह सत्य है। कोई कहे कि दो+दो=पाँच होते हैं, तो यह सत्य नहीं हो सकता। सत्य एक ही है। ऐसे ही ईश्वर सर्वव्यापक है-यह सत्य है। ईश्वर एक देशी है-यह सत्य नहीं हो सकता। आर्यों के इसी तर्क को लेकर महर्षि दयानन्द के घोर निन्दक जीयालाल जैनी ने अपनी कुख्यात पुस्तक 'दयानन्द छल-कपट दर्पण' में आर्यों पर यह आक्षेप किया है, ईश्वर सत्य है, या जगत् सत्य है? जो ईश्वर सत्य और जगत् भी सत्य है तो दो सत्य नहीं हो सकते। इस कारण ईश्वर सत्य है, ऐसा कहना चाहिये। जब ईश्वर सत्य है तो जगत् स्वप्न समान मानना पड़ेगा।

इस विषय में आगे भी कुछ कुतर्क किये हैं। यथा जब जगत् मिथ्या है, तो असत्य का त्याग क्या करें? कारण जगत् तो है ही नहीं। ये सब कुतर्क भोले-भाले लोगों को भ्रमित करने के लिये हैं। हमारा सीधा सा उत्तर है कि आप अपने पिता के पुत्र हैं, यह सत्य है। आप अपने पुत्र के पिता हैं, यह भी सत्य है। फिर यह दो सत्य आपको मान्य हैं या नहीं? ऋषि ने तो यह बोध करवाया था कि दो परस्पर विरोधी बातें कदापि सत्य नहीं हो सकतीं। वैसे तो सत्य एक नहीं, अनेक हैं। अन्न से भूख मिटती है। जल से प्यास बुझती है। गुड़ मीठा होता है। गाजर मीठी होती है। भेड़िया मांसाहारी जन्तु है। गाय दूध देती है। क्या ये सब सत्य नहीं? पृथ्वी गति करती है। सब ग्रह-उपग्रह गति करते हैं। यह भी सत्य है। सब सृष्टि नियम सत्य हैं या नहीं? ये अनेक सत्य क्या आक्षेप कर्ता को मान्य हैं या नहीं?

आर्यसमाज के नियम व ऋषि के कथन को लेकर किया गया आक्षेप केवल वाक् छल है। जगत् मिथ्या है ही नहीं, फिर (आर्यसमाज के नियमानुसार) इस असत्य का त्याग क्या करें? आर्यसमाज के नियम में सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के छोड़ने की बात सब समझते हैं। आलस्य, छल, कपट, दुराचार, अनाचार भी मेज, कुर्सी, कम्बल सरीखे पदार्थ नहीं, फिर भी जैनी विद्वान् पाँच महाव्रतों का उपदेश करते हुए पांच दोषों को छोड़ने का उपदेश देते रहते हैं। जीयालाल जैनी सरीखे निन्दक सब कुछ समझते हुए भी जन साधारण को भ्रमित करने के लिए ऐसे ऐसे आक्षेप करते हैं। हमने यहाँ एक बानगी ही दी है। शेष फिर कभी।

इस पुस्तक पर हम लिखते बोलते तो रहे हैं। इसमें क्या है-यह तो पता था, परन्तु पूरी पुस्तक देखने की इच्छा थी। बहुत भागदौड़ करने पर भी यह कहीं से न मिली। ऋषि-जीवन का अनुवाद व सम्पादन करते हुए सिर तोड़ प्रयास किया तो **अकोला (विदर्भ) के आर्यवीर श्री राहुल** ने इसे खोज निकाला। हम उनके धर्मभाव पे बलिहारी!

रणवीर कारित प्रायश्चित्त-परोपकारी के अक्टूबर द्वितीय २०१२ अंक में कश्मीर के महाराजा द्वारा प्रकाशित करवाई गई शुद्धि व्यवस्था के नाम का प्रश्न हमने उठाया था। हमें स्वयं ही इस विषय में कुछ शङ्का थी। परोपकारी के कुछ जागरूक पाठकों ने यह गुत्थी सुलझा दी है। चण्डीगढ़ से हमारे कृपालु और अनुभवी विद्वान् डॉ. धर्मवीर जी आर्य ने 'तड़प-झड़प' पढ़कर फोन किया कि जम्मू जाने की आवश्यकता नहीं। इस ग्रन्थ की एक प्रति चण्डीगढ़ के एक पुस्तकालय में है। इस विशालकाय ग्रन्थ के तीन खण्ड हैं और यह १३०० पृष्ठों से भी ऊपर का है। इसका नाम 'रणवीर

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रायश्चित्' है। प्रिय श्री राहुल ने अकोला से पता दिया है कि इसका नाम 'रणवीर कारित प्रायश्चित्त' है। पं. लेखराम जी ने अपनी प्रायश्चित्त पुस्तक में 'रणवीर प्रकाश' नाम कैसे लिख दिया? अल्पज्ञ जीव से भूल का हो जाना सम्भव है। इस अशुद्धि का कारण कुछ-कुछ समझ में आता है। वैसे पं. लेखराम जी ने तो इसे देखा था। इसके प्रमाण भी दिये। राहुल जी द्वारा बताया गया नाम एकदम शुद्ध है। हम बड़ी विनम्रता से अपनी भूलचूक का सुधार करते हैं। जाने व अनजाने से हो गई किसी भी भूल का सुधार करने में हमें कभी भी संकोच नहीं हुआ। उपरोक्त दोनों सुयोग्य परोपकारी प्रेमियों तथा अपने कृपालुओं को हम इन किन शब्दों में धन्यवाद देवें?

क्या किया जा सकता है? 'शान्तिधर्मी' मासिक के सितम्बर अंक में श्री डॉ. विवेक आर्य के लेख 'भगतसिंह के प्रेरणा स्रोत' के विषय में कई स्वाध्यायशील आर्यों ने कुछ प्रश्न पूछे हैं। हमें दिल्ली में दो-तीन प्रेमियों ने इस सम्बन्ध में दो-तीन बातें पूछीं। हमने कहा-लेखक से मिलकर अपनी शंकाओं का समाधान कर लें। तब तक हमने उक्त लेख नहीं पढ़ा था। अब अधिक पढ़ना ही छोड़ रखा है। प्रश्नकर्ता हमीं से ये प्रश्न पूछते हैं। अब लेख देख लिया है सो आर्य युवक तथा स्वाध्यायशील बड़े सज्जन नम्र निवेदन नोट कर लें। इस लेख में डॉ. विवेक ने भगतसिंह के प्रेरणास्रोत उनके दादाजी की चर्चा छेड़कर कई बातें ऐसी लिख दीं, जो तथ्य नहीं-सत्य नहीं।

१. पाठक यह भी ध्यान रखें कि वीर भगतसिंह को बाबा अर्जुनसिंह से तो प्रेरणायें मिली हैं, किन्तु उनके और भी कई मार्गदर्शक थे यथा-सूफी अम्बाप्रसाद जी (भले ही उनके चरणों में वह न बैठ पाये), श्री आचार्य उदयवीर जी, पं. जयचन्द्र जी इत्यादि।

२. आर्यसमाजी अब बाबा अर्जुनसिंह तथा उनकी एक पुस्तक की चर्चा छेड़े रखते हैं। उनकी इस पुस्तक का नाम तक भी आर्यसमाजी नहीं जानते थे। केवल पं. निरञ्जन जी को और इन पंक्तियों के लेखक को ही इसका ज्ञान था।

३. वीरेन्द्र सिन्धु जी की पुस्तक में भी इसका नाम अशुद्ध छपा। परिवार वालों को कहीं से भी यह पुस्तक देखने को न मिली। कुँवर यशपालसिंह जी के ग्राम में जब अमर स्वामी जी की व मेरी श्री कुल्तार सिंह जी से बात हुई तो उन्हें प्रीतिपूर्वक कहा गया कि आप सम्पर्क करते तो पुस्तक के दर्शन भी करवा दिये जाते। तब पं. ओ३म् प्रकाश जी वर्मा भी वहीं थे।

४. ''यज्ञ योग ज्योति' रोहतक के एक अंक में तथा कुछ पुस्तकों में बाबा अर्जुनसिंह, उनके साहित्य तथा परिवार पर हमने समय-समय पर बहुत लिखा। श्री डॉ. रामप्रकाश जी व श्री लक्ष्मीचन्द्र जी मेरठ को भी बाबा अर्जुनसिंह की सिखमत विषयक पुस्तक की छायाप्रति उपलब्ध करवा दी। पुस्तक का नाम 'हमारे गुरु साहिबान वेदों के पैरोकार थे'। शान्तिधर्मी में तो नाम ही अधूरा छपा है।

५. यह कोरी कल्पना है कि बाबा अर्जुनसिंह जी ने यह पुस्तिका भाई काहनसिंह जी नाभा की किसी पुस्तक के उत्तर में लिखी थी। बिना जाँच-पड़ताल किये भ्रान्ति फैलाना बहुत हानिकारक है। न तो डॉ. विवेक जी ने भाई काहनसिंह का साहित्य देखा व पढ़ा है और न ही बाबा अर्जुनसिंह की पुस्तिका देखी पढ़ी है। बाबा अर्जुनसिंह जी ने अपनी पुस्तिका की भूमिका में ही इसके लिखने का कारण लिखा है। भीषण ज्वर में यह पुस्तक बाबा जी ने लिख डाली।

६. इस पुस्तक में केवल गुरु ग्रन्थ साहिब के ही शब्द उद्धृत नहीं किये गये। अन्य-अन्य सिख विद्वानों के साहित्य से भी बहुत प्रमाण दिये गये हैं।

७. पटियाला के राजद्रोह के केस में गुरु ग्रन्थ साहिब के सात सौ श्लोकों की खोज करके बाबा अर्जुन सिंह सक्रिय हुए, यह मेरे जैसे व्यक्ति के लिए एक नई खोज है। इस पर हम फिर कभी लिखेंगे। पटियाला में आर्यसमाज पर एक और अभियोग चलाया गया। प्राय: सब आर्यसमाजी दोनों केसों को एक ही समझते हैं। दूसरे केस में दो आर्य पुरुष अभियुक्त बनाये गये। यह केस ला. वजीरचन्द जी रावलपिण्डी ने बड़ी योग्यता से लड़ा था। श्री धर्मेन्द्र आर्य ने अपनी पुस्तक में इसकी चर्चा की है। बरनाला के लाला पृथ्वीचन्द्र जी स्थानीय वकील ने इस केस में अविस्मरणीय साथ दिया। इस केस की सारी फ़ाईल मेरे पास रही, परन्तु.....।

इस अभियोग में डॉ. इकबाल को भी सिखों ने साक्षी के लिए बुलवाया था। सरदार किशनसिंह जी आर्यसमाज की ओर से साक्षी के लिए उपस्थित हुए। धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु ने अपनी पुस्तक में इस केस में बाबा अर्जुनसिंह का भूलवश नाम दे दिया है। झूठ जब एक बार प्रचारित हो जाता है तो बड़े-बड़े विद्वान् भी उसके जाल में फंस जाते हैं। श्री धर्मेन्द्र जी ने एकदम भूल स्वीकार करते हुए इसका सुधार करना मान लिया है। सरदार किशनसिंह का कोर्ट में दिया गया वक्तव्य तथा सरकारी वकील से उनके प्रश्नोत्तर हमने साप्ताहिक प्रकाश में भी पढ़े और फाईल में भी सब कुछ पढ़ा था। मैंने एक जिल्द में कुछ पत्रिकायें परोपकारिणी सभा को भेंट की

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

थीं। उनमें ला. पृथ्वीचन्द्र जी का इस केस पर एक ऐतिहासिक लेख देखना चाहिये। डॉ. विवेक को तो यह भी भ्रम हो गया है कि राजद्रोह वाले पटियाला केस में सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने की सरकार की इच्छा या योजना थी। पता नहीं मेरे बताने पर भी उनका भ्रम मिटा या नहीं। अधिकार पूर्वक लिखने के लिए व्यापक स्वाध्याय चाहिए।

८. जिन सज्जनों ने मेरा साहित्य पढ़ रखा था, उनका यह कहना था कि आपकी बात और शान्तिधर्मी का लेख अलग-अलग कहानी बताते हैं। यह स्पष्ट कीजिये। मेरा दोष तो यही है कि मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ। एक-आध लेख पढ़ सुनकर किसी भी महत्त्वपूर्ण विषय पर लेखनी नहीं चला देता। सबको यही परामर्श व सीख दिया करता हूँ कि सौ-पचास पुस्तकें पढ़कर फिर अन्य मतों पर तथा महत्त्वपूर्ण विषयों पर कुछ लिखा करें। शेष फिर कभी।

चौ. मातूराम के यज्ञोपवीत की कहानी-एक बार नहीं कई बार जब श्री भूपेन्द्र सिंह हूडा को आर्यसमाजी अपने उत्सवों में आमन्त्रित करते हैं, तो उनके दादा चौधरी मातूराम के यज्ञोपवीत धारण करने की कहानी अवश्य सुनाई जाती है। यह घटना महत्त्वपूर्ण तथा प्रेरणाप्रद है। यह कौन नहीं मानेगा। इस प्रसंग को सुनाने की तो नेताओं व वक्ताओं में प्रतिस्पर्धा मैंने कई बार देखी है। दिल्ली में तो एक पढ़े-लिखे नेता ने यहाँ तक कहा बताते हैं कि उत्तर भारत में सर्वप्रथम यज्ञोपवीत लेने वाले आप थे। कभी किसी ने गम्भीरता से इसकी प्रामाणिक तथा विस्तृत जानकारी नहीं दी। गुणियों के विचारार्थ कुछ तथ्य रखे जाते हैं-

१. हरियाणा में ऋषि केवल रेवाड़ी पधारे थे। रेवाड़ी तब पंजाब में ही था। ऋषि पंजाब के कई नगरों में गये। चौधरी मातूराम जी जैसे कर्मठ निर्भीक आर्य पुरुष ने ऋषि से कहाँ पर यज्ञोपवीत लिया? यह कोई नहीं बताता।

२. आर्यसमाज की स्थापना से आठ-नौ वर्ष पूर्व महर्षि ने वेद-प्रचार, गायत्री, सन्ध्या, हवन यज्ञ तथा यज्ञोपवीत का आन्दोलन छेड़ा था। इस आन्दोलन ने लोकप्रियता प्राप्त की। इसकी सफलता का श्रेय कर्णवास, सोरों, छलेसर के राजपूत रणबाँकुरों को प्राप्त है। इससे यह तो सिद्ध हो ही गया कि उत्तर भारत में हरियाणा पंजाब से बहुत पहले उ. प्र. के राजपूतों से यज्ञोपवीत के आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। उत्तर भारत में चौधरी मातूराम जी ने सबसे पहले यज्ञोपवीत लिया, यह जाँचने वाला तथ्य नहीं। गौरवपूर्ण तो अवश्य है।

३. हरियाणा में ब्राह्मणेत्तर वर्ग को विशेष रूप से जाटों में यज्ञोपवीत लेने की जो लहर चली, तो इसका कड़ा विरोध हुआ। यह बात ठीक है। उस संघर्ष में सब आर्य एकजुट थे। आर्यों ने तब अपने धर्मानुराग तथा शूरता की धाक जमा दी। तब सांधी के आर्यसमाज ने इतिहास को एक नया मोड़ दिया। चौधरी मातूराम जी तब आर्यों के एक सिरमौर सेनानी थे। यह आन्दोलन-यह घटना बीसवीं शताब्दी की है। इसमें बनिये, ब्राह्मण, अहीर, धीमान, गुर्जर व राजपूत सब आर्य ओ३म् ध्वज के नीचे पाखण्ड गढ़ को ध्वस्त करने में सफल हुए थे।

मित्रो! यह घटना स्वामी श्रद्धानन्द युग की है। ठीक सन् सम्वत् कभी फिर बताऊँगा। कैथल करनाल के आर्य नेता ला. बनवारीलाल भी इसके एक कर्णधार थे। यह लड़ाई केवल रोहतक के जाटों ने लड़ी, यह सत्य नहीं है। करनाल, हिसार, गुड़गांवाँ के सब आर्य इसमें चौ. मातूराम आदि के साथ थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के झण्डे तले यह आन्दोलन छेड़ा गया। महाशय कृष्ण जी के 'प्रकाश' साप्ताहिक का इसमें बड़ा योगदान कभी बाद में लिखूंगा।

किंवदन्ती तो कुछ भी हो-मेरे पास ला. बनवारी लाल जी लिखित इसका प्रामाणिक इतिहास है। पं. लेखराम के चेले ला. बनवारी लाल इस संग्राम के एक सेनापति थे। ऋषि-जीवन का कार्य पूरा हो जाने दीजिये। प्रभु कृपा से यह कार्य भी सिरे चढ़ा दूँगा।

४. यह समझ नहीं आता कि भूपेन्द्र हूडा स्वयं व उनके प्रशंसक श्री डॉ. रामजी लाल की चर्चा चौ. मातूराम के साथ क्यों नहीं करते? डॉ. रामजी लाल भी तो चौ. मातूराम के भाई थे। उनकी आर्यसमाज के प्रति सेवाओं का इतिहास साक्षी है। उनकी डायरियों में चौ. मातूराम जी के उपनयन संस्कार का कोई संकेत नहीं मिलता। इसका कारण यह भी हो सकता है कि डायरी सन् १९०४ से आरम्भ होती है।

गौरवपूर्ण इतिहास की सुरक्षा के लिये इस विषय को उठाया है। कोई विद्वान् इसे अन्यथा न लेवे। जब आन्दोलन का इतिहास प्रकाश में आयेगा तो नई-नई जानकारी पाकर भावनाशील आर्यजन फड़क उठेंगे।

बड़ों के पुण्य प्रताप से-३१ अक्टूबर रात्रि श्रीमान् आचार्य बलदेव जी ने चलभाष पर सन्देश भिजवाया कि मुसलमान बन्धु आपकी पुस्तिका '**फित्राय कादियानी**' पुनः प्रकाशित करके वितरित करना चाहते हैं। पहले भी एक बार अनुमति लेकर जमायते इस्लामी ने इसे मुद्रित करके निःशुल्क बाँटा था। आचार्य जी का सन्देश पाकर उन्हें फिर से इस अत्यन्त खोजपूर्ण पुस्तिका को प्रकाशित प्रचारित करने की अनुमति दे दी है। कहना कठिन है कि आर्यसमाज

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ने लेखक की इस कृति का मूल्याङ्कन किया है या नहीं? यह अपने विषय की एक बेजोड़ कृति है। मेरी तो ऐसी इच्छा थी कि इस विषय पर २५० पृष्ठों की एक पुस्तक लिखी जावे, जो पं. लेखराम जी के बलिदान विषयक मिर्ज़ा के इल्हामों तथा मिर्ज़ाइयत पर निर्णायक हो।

मुसलमान बन्धुओं ने लेखक की पुस्तक का मूल्याङ्कन करके दूसरी बार इसे प्रकाशित करने का निर्णय लिया है, यह इन पंक्तियों के लेखक का सन्मान व उपलब्धि नहीं, प्रत्युत यह बड़ों के पुण्य प्रताप का फल है। श्रद्धेय पं. शान्तिप्रकाश जी, पूज्य महाशय चिरञ्जीलाल जी 'प्रेम' आदरणीय श्री पं. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री तथा दूरदर्शी सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को बारम्बार नमन करता हूँ जिन्होंने एक दुबले-पतले ग्रामीण युवक को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। एक सुयोग्य मुसलमान गवेषक श्री शहरयार की चाहना व प्रेरणा से मेरे दो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गये। आर्यसमाज के इतिहास में ये अभूतपूर्व घटनायें हैं। कृतज्ञता का प्रकाश करते हुए एक बार आर्यजगत् के सबसे लोकप्रिय पत्र परोपकारी के माध्यम से सब पूर्वजों को श्रद्धा से शीश झुकाता हूँ।

डाक की गड़बड़-दु:शासन-पाँच सात वर्षों में डाक की गड़बड़ होने लगी है। पहले तीन-चार दिन में पत्र देश के एक भाग से दूसरे भाग तक पहुँच जाया करते थे। अब अक्टूबर मास का परोपकारी का अंक पन्द्रह दिन में हमें मिला है। कहीं पत्र भेजा तो ग्यारह दिन में वहाँ पहुँचा। एक-एक मास में भी पत्र पहुँचते हैं। सुशासन भले ही सरकार न दे सके, परन्तु दु:शासन की भी तो रोकथाम आवश्यक है। जनता को इससे त्रास होता है। सरकार ऐसा करके जनता पर कोई उपकार नहीं करती। यह तो सरकार का एक सामान्य कर्त्तव्य है।

अलभ्य साहित्य का प्रकाशन-इन दिनों कुछ पुरुषार्थी प्रकाशकों ने कुछ महत्त्वपूर्ण अलभ्य पुस्तकें प्रकाशित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। श्री सत्यानन्द जी ने 'ओंकार निर्णय' का एक उत्तम संस्करण पुन: उपलब्ध करवा दिया है। श्री लाजपतराय जी ने पं. देवप्रकाश जी का 'कुरान परिचय' तीनों भाग निकाल दिया है। गोविन्दराम हासानन्द ने पं. भगवद्दत्त जी की अद्वितीय देन 'भाषा का इतिहास' डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित, श्री डॉ. बालकृष्ण जी का ग्रन्थ 'वेद ईश्वरीय ज्ञान है' तथा स्वामी श्रद्धानन्द लिखित पं. लेखराम जी का जीवन चरित्र फिर से प्रकाशित कर दिये हैं। आर्य प्रकाशन ने श्री पं. इन्द्र जी कृत पठनीय ग्रन्थ 'आर्यसमाज का इतिहास' छपवा दिया है। ये सब करणीय कार्य थे। आर्य जनता को इन्हें सहयोग करना चाहिये। ये महानुभाव बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं।

कुछ सज्जनों को एक रोग लगा है कि वे प्रत्येक पुरानी पुस्तक का प्रकाशन करवाने का सुझाव देते रहते हैं। कुछ पुस्तकें ऐसी भी छपवा दी जाती हैं, जिनका कुछ भी लाभ नहीं। अभी एक ऐसी पुस्तक भी छपवा दी गई है, जिसका लेखक आर्यसमाजी था ही नहीं। पुस्तक कचरा मात्र है। यह कार्य सोच विचार कर करने वाला है।

सरकार का साम्यवाद व पूंजीवाद-कभी श्री पं. भगवद्दत्त जी ने साम्यवाद तथा पूँजीवाद विषयक एक प्रश्न के उत्तर में लिखा था कि धर्मात्मा, परोपकारी नागरिक के पास असीम धन भी हो, करोड़ों-अरबों की उसकी सम्पदा हो तो वैदिक राज्य व्यवस्था के अनुसार यह आपत्तिजनक नहीं है। कारण? ऐसा व्यक्ति लोक-कल्याण की वृत्ति से कमाता और लोकहित में सब कुछ व्यय करता है, परन्तु एक धनलोलुप, स्वार्थी, भोगी, विलासी और कृपण व्यक्ति जिसके पास अपार सम्पदा हो, राज्य का कर्त्तव्य है कि उसके पास एक फूटी कौड़ी भी न रहने दे। कारण? वह इसे उत्पीड़न में लगायेगा। वह अन्यायी व क्रूर बनेगा, जैसे आज का भू माफिया है।

नेहरू जी ने साम्यवाद का स्तुतिगान किया। पूंजीवाद को कोसा। देश को समाजवादी शासन लाने का वचन दिया। इस लोक लुभावने नारे को देकर अपना शासन चलाया। उनकी पुत्री ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया। राजाओं के प्रिवीपर्स बन्द करके भीड़ अपने पीछे जुटाई। काँग्रेस के एक अरबपति नेता ने गौरव से एक बार कहा-'मेरे जैसा समाजवादी.....'' हमने अपने कानों से आपातकाल में यह भाषण सुना था। अब फिर मनमोहनसिंह युग आया। वही काँग्रेस विदेशी पूंजीपतियों को देश में आने का निमन्त्रण दे रही है। विदेशी पूंजीपतियों को गले लगाने के लिये तड़प रही है। अब सब पार्टियों के नेता प्राय: पूंजीपति, करोड़पति तथा उद्योगपति हैं। पैट्रोल पम्प व गैस एजेन्सियाँ नेताओं की हैं। होटल तथा फार्म हाऊस नेताओं के हैं। अपवाद भी कुछ है। अब तो भूलकर भी कोई काँग्रेसी 'समाजवाद' शब्द मुँह से नहीं निकालता। कभी Simple living and high thinking 'सादा जीवन उच्च विचार' देश के युवकों को दी जाने वाली जीवन घुट्टी थी। अब यह विचार बासी हो गया। देश किधर जा रहा है? धन कुबेर बनना ही युवकों का उद्देश्य बन चुका है। शिक्षा का प्रयोजन लोकोपकार, देश सुधार तथा दीनों का

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

उद्धार नहीं रह गया है।

जो सोचा भी नहीं था–महर्षि के जीवन चरित्र का कार्य हाथ में लिया तो यदा कदा परोपकारी में कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं व प्रेरक प्रसंगों की चर्चा करता रहा। जब रात-दिन ऋषि जीवन पर ही चिन्तन करने में खोया रहता हूँ तो ऐसा होना स्वाभाविक ही है। हमारे भण्डार में ही ऐसी पर्याप्त सामग्री है, जिसका इस समय धरती तल पर किसी को पता नहीं। यही सोचा था कि इसमें से अधिकांश का आर्य जाति को मानव समाज को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाया जावे।

कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा हम देशभर में ऋषि जीवन की छोटी बड़ी घटनाओं के लिए प्रातः से सायंकाल तक चलभाष पर भी गुणियों से कुछ घटनाओं के बारे में पूछते आ रहे हैं। चार-पाँच अलभ्य पुस्तकों को देखकर कुछ पाद टिप्पणियाँ देने की उत्कट इच्छा थी। आशा नहीं थी कि ये मिल जायेंगी, परन्तु हम इसे पूर्वजों का पुण्य प्रताप मानते हैं कि जिनके मिलने की कतई आशा नहीं थी-वे पुस्तकें हमें प्राप्त हो गईं।

एक आर्यवीर (जिसका नाम अभी नहीं बताया जा सकता) ने तो कुछ ऐसा दुर्लभ साहित्य उपलब्ध करवाया है, जिसकी प्राप्ति के बारे में इस विनीत ने कभी सोचा ही नहीं था। यह कैसे कृपादृष्टि प्रभु ने कर दी? हम इस उपलब्धि के लिये परोपकारिणी सभा अथवा आर्यसमाज पर अपना एहसान नहीं लादते। यह तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, आचार्य प्रवर उदयवीर जी, श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी, पूज्य मीमांसक जी के आशीर्वाद व साधना का फल है, जिन्होंने इस महान् कार्य के लिए हमें भरपूर प्रेरणायें दीं। उनके चमत्कारी आशीर्वादों का मधुर फल अब सारा संसार चखेगा।

-वेद सदन, अबोहर।

कृपया ''परोपकारी'' पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक-पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा ''परोपकारी'' शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।**

-व्यवस्थापक

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की योजना

सभी धर्म प्रेमी सज्जनों, आर्यसमाजों व संस्थाओं से निवेदन है कि इस कार्य को सफल बनाने हेतु शीघ्रता से अपना आर्थिक सहयोग परोपकारिणी सभा को भिजवायें ताकि तदनुरूप कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। सहयोग भिजवाते समय **सत्यार्थप्रकाश का प्रचार-प्रसार** शीर्षक लिखना ना भूलें। धन्यवाद।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-आचार्य दिनेश शास्त्री, ऋषि उद्यान, अजमेर। चल दूरभाष-०७७३७९०४९५०, ०९६०२९२१३७३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

यह शरीर देवताओं की नगरी है-वेद

-प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य

वेदों में कहा है कि यह शरीर देवताओं की नगरी है, 'अष्टाचक्रा.....देवानां पूरयोध्या (अथर्व. १०/२/३१)। इस शरीर के द्वारा ब्रह्म या ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु पहले इस शरीर अथवा जीवन की तो रक्षा हो। योग और आयुर्वेद इसी स्वास्थ्य की रक्षा के लिए है, परन्तु भूखे पेट भजन एवं योग साधना नहीं हो सकती। शरीर अथवा जीवन की रक्षा के लिए भोजन, जल, बीमारी में चिकित्सा तथा आवास/घर को संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा पत्र (१९९५) में जीवन की मूलभूत आवश्यकतायें बताया गया है। इनके अभाव का नाम गरीबी है। देश के ८२ से ८४ करोड़ लोगों के पास इन मूलभूत जरूरतों का अभाव है, क्योंकि सेनगुप्ता कमेटी के अनुसार उनकी दैनिक आय २०/- रुपये भी नहीं है। योजना आयोग के अनुसार ३२/-रु. भी हो जाए अथवा ५०/- रु. भी रोजाना हो जाए तो भी गुजारा कठिन है। ऐसे में इनके जीवन की रक्षा किसके जिम्मे है? सरकार अथवा स्वयंसेवी संगठनों के? इन जरूरतों के अभाव में सैकड़ों लोग मर रहे हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी यह गरीबी चलती रहती है। इनके बच्चों को शिक्षा आदि की बात तो दूर है।

प्रधानमन्त्री के आर्थिक सलाहकार सुरेश तेन्दुलकर के अनुसार देश में ४१.८ प्रतिशत लोग प्रतिमास ४४७/- रुपये पर गुजारा करते हैं, उनकी दैनिक आय १५/- रुपये भी नहीं। यानि ५० प्रतिशत से ऊपर लोग देश में गरीब हैं। सेनगुप्ता कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार देश में ८३.६ करोड़ लोग प्रतिदिन २० रुपये भी नहीं खर्च कर सकते अर्थात् उनकी दैनिक आय २०/- रुपये भी नहीं है। क्या २० रु. में ८३.६ करोड़ लोग अपने शरीर (जीवन) की रक्षा कर सकते हैं? एक ताजा अध्ययन के अनुसार देश में २० करोड़ लोग रोजाना भूखे सोते हैं, जबकि दस हजार लोग प्रतिवर्ष भूख के कारण मौत का शिकार होते हैं। भारत में ४६.५० प्रतिशत लोग भुखमरी एवं गरीबी का शिकार हैं। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार १२१ करोड़ जनता में से ७५.६० प्रतिशत लोग गरीब हैं, यानि ८२ करोड़ से ऊपर गरीबी का शिकार हैं। ग्लोबन हंगर इंडैक्स-२०११ के अनुसार विश्व के १०० करोड़ भूखे लोगों में ३२ प्रतिशत लोग भारत के हैं। (पंजाब केसरी 'पानीपत' २७/११/११ करनाल केसरी-१)

देश के ४२ प्रतिशत बच्चे कुपोषण का शिकार हैं। ११ जनवरी २०१२ के अखबार 'दैनिक जागरण' (पानीपत ११/१/१२ पृ. १) में प्रकाशित 'हंगामा' रिपोर्ट के अनुसार विश्व में कुपोषण का शिकार हर तीसरा बच्चा भारतीय है। पांच वर्ष से कम आयु के ४० प्रतिशत से अधिक बच्चे न केवल कमजोर हैं, बल्कि ५९ प्रतिशत बच्चों का कद भी उनकी उम्र के हिसाब से बेहद कम है। नौ राज्यों के ११२ जिलों और ७३ हजार घरों के सर्वेक्षण के बाद जारी रिपोर्ट में एक लाख बच्चों और ७३ हजार महिलाओं को शामिल किया गया था। देश के सौ फोकस जिलों में दो वर्ष तक की आयु के ४१ प्रतिशत बच्चे दुर्बल और ५८ प्रतिशत बच्चे निर्धारित ऊंचाई मानकों के अनुसार बौने पाए गए। यह है बच्चों के कुपोषण की अवस्था?

देश में अनाज की कमी नहीं है, फिर भी लोग भूख और कुपोषण का शिकार हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार ('दैनिक जागरण' पानीपत के १५/४/१२ पृ. ९) देश में पिछले १० वर्षों में १० लाख टन अनाज बर्बाद हो गया है। इससे एक करोड़ लोगों को एक साल तक या छः लाख लोगों को १० साल तक भोजन मिल सकता था। एक अन्य रिपोर्ट कहती है ('दैनिक जागरण' पानीपत १० मई २०१२, पृ. १) कि देश में २ करोड़ टन गेहूं सड़ना निश्चित है। एक तरफ इतना अनाज बर्बादी की ओर है, तो दूसरी ओर भूख से लोग मर रहे हैं। इसके लिए दोषी अधिकारियों को दण्डित करना चाहिए। लोगों को पीने का स्वच्छ पानी भी प्राप्त नहीं? एक ओर देश में पानी की भारी किल्लत है, दूसरी ओर नगरों, कस्बों, बस, रेलवे आदि के स्थानों पर पानी बेचा जा रहा है। पानी का भी व्यापार हो रहा है, ऐसे में बिना भोजन और जल के जीवन (शरीर) की रक्षा कैसे होगी?

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार देश में गरीबी, कुपोषण, कुप्रबन्धन के कारण मां बनने के दौरान हर दस मिनट में एक महिला की मौत होती है। रिपोर्ट आगे कहती है कि भारत में २०१० में मां बनने के दौरान ५७ हजार महिलाओं की मौत हुयी। २०१० के आंकड़ों के अनुसार भारत में प्रतिदिन १५० महिलाओं की मौत मां बनने के दौरान हो जाती है (देखें द्र. 'दैनिक जागरण' पानीपत ४/८/१२ पृ. १-हर १० मिनट में मां मर रही है।) क्या इनके

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जीवन की रक्षा करना सरकार, शासन तथा अस्पताल प्रबन्धन की जिम्मेदारी नहीं है? उधर एक समाचार के अनुसार ('दैनिक जागरण' पानीपत १७/८/१२ पृ. ११) देश में पिछले तीन साल में ५५ हजार बच्चे लापता हैं। २००९ में साठ हजार बच्चे गुम हुए थे। सर्वोच्च न्यायालय ने इस बारे में केन्द्र और राज्य सरकारों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। जीवन की रक्षा के बिना बच्चे क्या करेंगे?

देश के सामान्य व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात करें तो भारत का आम आदमी/जन साधारण देश के ६ लाख गांवों में रहता है, जबकि केन्द्र और राज्य सरकारों का ७०-८० प्रतिशत स्वास्थ्य बजट शहरों के २०-३० प्रतिशत लोगों तक ही सीमित रह जाता है। उस पर भारत सरकार का सार्वजनिक स्वास्थ्य बजट जी.डी.पी. (कुल राष्ट्रीय आय) का १.१ प्रतिशत है। लोक लेखा समिति (PAC) की रिपोर्ट के अनुसार ('The Tribune', Chandigarh 7/11/11 P-9) १८ राज्यों में बहुत सी जगह स्वास्थ्य केन्द्रों को खाद्य गोदामों, में, दफ्तरों, पशु शरणगाह आदि में तबदील कर दिया गया है। फिर उनमें योग्य डॉक्टरों तथा प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मचारियों का अभाव है। बहुत से स्वास्थ्य केन्द्रों में सामान्य दवाइयां भी नहीं हैं। समिति (PAC) के अनुसार ६ लाख गांवों के लिए २ लाख से अधिक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की आवश्यकता है, फिर एक केन्द्र को दो-तीन गांवों से जोड़ने की जरूरत है। इस तरह देश की जनता के स्वास्थ्य की रक्षा कैसे होगी? सरकार जनता के स्वास्थ्य के प्रति कर्जदार है। जनता को प्राथमिकता से स्वास्थ्य सेवायें प्रदान करनी होंगी। स्वास्थ्य ही उनके जीवन की सुरक्षा है। ("The Times of India' New Delhi, 24/1/12, P-12, when Health is Security) आयुर्वेद में स्वास्थ्य या आरोग्य को धर्मार्थकाममोक्ष का आधार माना है-'**धर्मार्थकाममोक्षाणाम् आरोग्यं मूलमुत्तमम्**'।

चरक ने 'शरीर स्थान' में 'स्वास्थ्य' (आरोग्य) को जीवन का एक पुरुषार्थ बताया है। महाकवि कालिदास ने शरीर को ही धर्म का साधन बताया है-'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'। आज संसार के हर भाग में खेल प्रतियोगितायें होती हैं। विश्व स्तर पर 'ओलम्पिक' खेल होते हैं। उनका आधार शरीर या स्वास्थ्य ही है, दूसरी ओर विश्व में विभिन्न सौन्दर्य प्रतियोगितायें होती हैं, उनका साधन भी शरीर है। कालिदास ने 'कुमार संभव' में लिखा है कि सुन्दर, स्वस्थ एवं बलिष्ठ शरीर वाले व्यक्ति लोगों के सम्मान एवं आकर्षण का पात्र होते हैं'**भवन्ति वपुर्विशेषेषु अतिगौरवाः क्रियाः**'। इसलिए वेद ने कहा है कि 'यह शरीर देवताओं की नगरी है'-शरीर के विभिन्न अंग/इन्द्रियाँ तथा मन एवं प्राण इस शरीर में रहने वाले देवता हैं। अग्नि, वायु, जल आदि पंचमहाभूतों को भी शरीरस्थ देवता कहा है। इस शरीर में ब्रह्म का वास भी है, जिसको ब्रह्मवेत्ता ही जान सकते हैं। अतः वेद ने कहा कि हम सौ साल या उससे अधिक जीवन जीयें-'जीवेम शरदः शतम्.....भूयश्च शरदः शतात्'। यजु. (३४/५५) कहता है कि इस शरीर में सात ऋषि-५ ज्ञानेन्द्रियाँ+मन+बुद्धि-रहते हैं। अतः इसकी रक्षा परमावश्यक है। **लेखक-प्रो. चन्द्र प्रकाश आर्य, एम.ए. (संस्कृत व हिन्दी, गोल्ड मेडलिस्ट (पं.यू.चं.), सदस्य-ऑल इण्डिया ओरियन्टल कॉन्फ्रेंस, पूना, सदस्य-वि. वैदिक रिसर्च संस्थान, होशियारपुर, (पं.), ४३२, सैक्टर-८, करनाल, ०१८४-२२३१४३२**

राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यकता है

आंदोलनात्मक रूप में वेद-प्रचार करने एवं महिलाओं को संस्कारित व जागरित करने के लिए एक महत्वपूर्ण अभियान तैयार किया गया है। इस कार्य के लिए गुरुकुल में शिक्षित समर्पित बहनों की आवश्यकता है। चयनित बहनों के लिए आजीवन आवास, भोजन, औषधि, वस्त्रादि एवं समस्त जरूरतें पूरी करने की व्यवस्था के उत्तरदायित्व के साथ उन्हें प्रतिमाह सम्मानजनक मानदेय भी दिया जाएगा (उतना मानदेय दिया जाएगा जितना बाहर कहीं भी नौकरी करने पर मिलता हो)। बहनें निम्न पते पर आवेदन भेजें। सिर्फ वे बहनें ही आवेदन भेजें, जिनके जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक हो।-**श्रीमती दुर्गा शर्मा, मो-: ९८२९६६५२३१**

आवेदन भेजने का पता :-जी-१, रुक्मणी गार्डन, प्लॉट नंबर बी-२ ई एफ, शिव मार्ग, बनीपार्क, जयपुर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सत्यार्थप्रकाश पर हुए कार्य

–प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

सन् १९९० ई. में एक पुस्तक आई थी–**''युगनिर्माता सत्यार्थप्रकाश सन्दर्भ दर्पण''**। ग्रन्थ की महत्ता को देखते हुए हिण्डोन सिटी का प्रसिद्ध पुरस्कार **'घूड़मल प्रह्लाद कुमार पुरस्कार'** प्राप्त हुआ था। इस ग्रन्थ में विषय सूची निम्न प्रकार है–

(१) प्रथम अध्याय: इस प्रयास की कथा, कलकत्ता की घटना, विचार बिन्दुओं का उदय।

(२) द्वितीय अध्याय: ऐतिहासिक सन्दर्भ, विचार स्वतन्त्रता, सर्वतन्त्र सिद्धान्त, ग्रन्थ का इतिहास।

(३) तृतीय अध्याय: ग्रन्थ परिचय, भूमिका, प्रथम समुल्लास, द्वितीय समुल्लास, तृतीय समुल्लास, चतुर्थ समुल्लास, पंचम समुल्लास, षष्ठ समुल्लास, सप्तम समुल्लास, अष्टम समुल्लास, नवम समुल्लास, दशम समुल्लास, उत्तरार्द्ध, अनुभूमिका १, एकादश समुल्लास, अनुभूमिका २, द्वादश समुल्लास, अनुभूमिका ३, त्रयोदश समुल्लास, अनुभूमिका ४, चतुर्दश समुल्लास, समुल्लास का समापन, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश।

(४) चतुर्थ अध्याय: प्राशासनिक एवं साम्प्रदायिक आक्रमण, परतन्त्र भारत में, पटियाला का अभियोग, संयुक्त प्रान्त में सरकारी चेष्टा, पेशावर का मुकदमा, भोपाल राज्य में प्रतिबन्ध, जम्मू-कश्मीर में प्रतिबन्ध, साम्प्रदायिक आक्रमण, सिन्ध में प्रतिबन्ध की चेष्टा, कलकत्ता काण्ड।

(५) पंचम अध्याय: सत्यार्थप्रकाश का विस्तार, अनुवाद, भाषानुवाद, बाल तथा लघु संस्करण, सत्यार्थप्रकाश पृथक् समुल्लासों का प्रकाशन, सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न भाषाओं में अनुवादों की तालिका, अंग्रेजी में विभिन्न समुल्लासों का पृथक्श: प्रकाशन, विभिन्न प्रकाशकों के प्रकाशन, वैदिक पुस्तकालय अजमेर, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, आर्य साहित्य मंडल, विरजानन्द वैदिक संस्थान, श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, गुरुकुल आमसेना, हरियाणा साहित्य संस्थान, दयानन्द संस्थान, गोविन्दराम हासानन्द, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, विभिन्न प्रकाशनों का सर्वयोग।

(६) षष्ठ अध्याय: सत्यार्थ प्रकाश वाङ्मय, भाष्य, खण्डन-मण्डन साहित्य, सत्यार्थप्रकाश के काव्यानुवाद, सत्यार्थप्रकाश के विशिष्ट संस्करण, सत्यार्थप्रकाश के हिन्दी काव्यानुवाद, सत्यार्थप्रकाश विषयक व्याख्या ग्रन्थ, सत्यार्थप्रकाश विषयक आलोचनात्मक साहित्य, सत्यार्थ प्रकाश विषयक आलोचनात्मक अंग्रेजी ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश पर विपक्ष के खण्डनात्मक ग्रन्थ।

(७) सप्तम अध्याय: सत्यार्थप्रकाश की खण्डन पद्धति।

(८) अष्टम अध्याय: उपसंहार।

पिछले २५-३० वर्षों में अनेक नये-पुराने प्रकाशकों ने सत्यार्थ प्रकाश के अनेकों संस्करण प्रकाशित किये हैं। इतिहास की दृष्टि से इन आकड़ों का संकलन आवश्यक है, जिसे संकलित करना भविष्य के लिए बहुत उपयोगी रहेगा।

इधर २५-३० वर्षों में सत्यार्थप्रकाश के समर्थन और विरोध में, टीका टिप्पणी के रूप में कुछ ग्रन्थ अवश्य ही प्रकाशित हुए हैं। स्वामी विद्यानन्द जी ने **'सत्यार्थ भास्कर'** दो खण्डों में महाग्रन्थ प्रकाशित किया है। हमने भी अंग्रेजी में 'Understanding Satyartha Prakash' लिखा जिसका पहला संस्करण श्रीमद् दयानन्द पीठ दिल्ली ने प्रकाशित किया। इसका पहला संस्करण समाप्राय है और द्वितीय संस्करण की अपेक्षा है।

जहां तक सत्यार्थप्रकाश के ऊपर अभियोगों की बात है या समर्थन और विरोध में साहित्य प्रकाशित होने की बात है, यह सब अन्वेषणीय है। कई अच्छी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डॉ. सत्यकेतु द्वारा सम्पादित सात खण्डों में प्रकाशित आर्यसमाज के इतिहास में भी नई सामग्री उपलब्ध हो सकती है। अंग्रेजी में एक अच्छी पुस्तक 'Raj and Samaj' दिल्ली से प्रकाशित हुई, इसके लेखक श्री शिवकुमार जी हैं। एक बड़ी पुरानी पुस्तक श्री स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य रामदेव जी ने संयुक्त रूप से लिखी थी, ऐसा हमने सुना है, पुस्तक का नाम है-The Detractors of Arya Samaj। इस पुस्तक को भी खोजकर सामग्री संकलन करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार के ग्रन्थों में पूर्णता या इतिमात्रम् कभी हो नहीं सकता। ऋषि भक्तों को चेष्टा करते रहना चाहिए।

-ईशावास्यम्, पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता,
-०३३-२५२२२६३६, **दूरभाष**-०९४३२३०१६०२

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

'वैदिक क्रान्ति' वेबसाइट आरम्भ

इस वेबसाईट **www.vedickranti.in** पर दुर्लभ ग्रन्थ, आर्टिकल और वीडियो हैं और वे भी नि:शुल्क। इसी वेबसाइट के अंतर्गत अभी कुछ ही दिनों पूर्व सत्यार्थप्रकाश का एक सुन्दर android application भी लॉन्च किया है, जिससे कि कोई भी व्यक्ति अपने मोबाइल फोन पर इन्टरनेट के माध्यम से किताब को डाउनलोड करके पढ़ सकता है। पर सिर्फ वे ही लोग जिनके पास android phone है। ये भी नि:शुल्क है।

'www.vedickranti.in' इस वेबसाईट को बनाने का उद्देश्य है कि हमारे भाइयों और बहनों में पढ़ने की रुचि बढ़े। आज हमारे युवाओं में स्वाध्याय के प्रति रुचि कम होती जा रही है और अन्य ऐसे कई विषय हैं, जिसमें उनकी रुचि बढ़ती जा रही है, हम उन्हें यहाँ लिखना उचित नहीं समझते क्योंकि विषय एक नहीं है। ये सारे विषय उनके लिए, समाज के लिये और राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध हो रहे हैं। स्वाध्याय न करने की वजह से वे स्वयं से, वैदिक संस्कृति और सभ्यता से अनभिज्ञ हैं और दूसरे मतों के सिद्धांतों से भी अपरिचित हैं। इसलिए आज परिस्थितियां विकट होती जा रही हैं और हम सब इन परिस्थितयों से परिचित होने पर भी इन्हें दुर्लक्ष कर रहे हैं।

अगर हमारा युवा स्वाध्याय करने लगेगा तो वह सत्य और असत्य में निर्णय करने योग्य होगा, जिससे कि वह सत्य मार्ग का अवलंबन कर सकेगा और तुलनात्मक अध्ययन करके सत्य मार्ग का पथिक बन सकेगा। चार वर्णों में से ब्राह्मण ही एक ऐसा वर्ण है, जो समय पड़ने पर शीघ्र ही क्षत्रिय बन सकता है, पर क्षत्रिय शीघ्र ही ब्राह्मण नहीं हो सकता। इसलिए यह छोटा सा प्रयास है कि हमारे युवाओं को सृष्टि (ब्रह्म, जीवात्मा और प्रकृति) का ज्ञान हो, अपने कर्तव्य और अकर्तव्य, वैदिक ज्ञान, सभ्यता और संस्कृति, महान् पुरुषों, बलिदानियों का बोध हो। इस सब ज्ञान को प्राप्त करने में ग्रंथों से अच्छा मित्र और कौन हो सकता है? इसलिए आप इन ग्रंथों का उत्साहपूर्वक पूर्ण रूप से आनन्द उठायें, अपने ज्ञान को बढ़ायें और इन धन्य लेखकों की कृतियों को पढ़कर इनके साहित्य को धन्य बनायें। 'वैदिक क्रान्ति' की ज्ञान रूपी मशाल को हम सब आगे बढ़ावें।

कार्यकारी प्रधान

-रवीन्द्र जी

बधाई हो बधाई गृहस्थ के फकीर को।
देव दयानन्द भक्त प्यारे धर्मवीर को॥

कूड़े करकट बीन इतिहास साकार बना डाला,
लाखों पुर्जे जोड़ एक पत्रहार बना डाला।
चिंगारी बना डाला तूने ठण्डे नीर को,
देव दयानन्द भक्त प्यारे धर्मवीर को॥

विरोधियों पर भी अपना प्यार आप बरसाते रहे,
उनकी दी हुई गाली-गाथा हंस-हंस सुनाते रहे।
उनकी छुए बिना बड़ी किया अपनी लकीर को,
देव दयानन्द भक्त प्यारे धर्मवीर को॥

हर आर्य जन तेरा गुणगान गा रहा,
ऋषि उद्यान विकास की ऊँचाईयों को जा रहा।
परोपकारी से जगाया तूने लाखों के जमीर को,
देव दयानन्द भक्त प्यारे धर्मवीर को॥

हस्तलिखित दयानन्द का प्रचार तुम्हारा निराला है,
दस्यु कहते ऋषि हत्यारा, देव कहें ऋषि रखवाला है।
सम्भाल करके रखा तूने ऋषि जागीर को,
देव दयानन्द भक्त प्यारे धर्मवीर को॥

ऋषि सन्मार्ग पर आप आगे को बढ़ते रहना,
सत्य सनातन वैदिक धर्म के लक्ष्य को करते रहना।
आलोचकों का क्या है, पीटते रहेंगे लकीर को,
देव दयानन्द भक्त प्यारे धर्मवीर को॥

हे धर्मवीर तुम जैसे ही धर्म को जिन्दा करें,
धर्मी को साहस देकर पापी को शर्मिन्दा करें।
राजपाल आपकी निन्दा करे प्रभु हर ले उसकी बुद्धि की पीर को,
देव दयानन्द भक्त प्यारे धर्मवीर को॥

-महादेव, सुन्दरनगर-१७४४०१, हि.प्र.।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

एक धर्म, मानव का

-दाताराम आर्य 'आलोक'

हँसने का सबका एक ढंग, दु:ख मर्म भिन्न कैसे होगा।
सब मनुष्य एक हैं दुनियां में, फिर धर्म भिन्न कैसे होगा॥

उत्पत्ति का वही एक मार्ग, सब उसी ढंग से आये हैं।
त्याज्य कर्म की सदा मना, शुभ कर्म भिन्न कैसे होगा॥

चोर को कहते सभी चोर, जार से नफरत सब करते।
सब शर्म हया का मान करें, बेशर्म भिन्न कैसे होगा॥

सब प्यास में पानी पीते हैं, और भूख में भोजन करते हैं।
जब बर्फ सभी की ठण्डी है, तो गर्म भिन्न कैसे होगा॥

'आलोक' सभी को राह दिखा, अंधियारे से मुक्ति देता।
सबकी इन्द्रियां एक समान, तो कर्म भिन्न कैसे होगा॥

-ग्रा व पो.-बुटेरी,
तहसील-बानसूर, जिला-अलवर, राज.
चल दूरभाष-०९८११७४१९७६

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

समय

-महात्मा चैतन्यमुनि

वह पैदा हुआ
बालक के बाद किशोर हुआ
फिर जवान हुआ
और बूढ़ा भी।
न जाने कितने ही बसन्त देखे
पतझड़ झेले
मंगल देखे, जंगल देखे
दर देखे, घर देखे
रात हुई तो सोया
सुबह हुई तो जागा
पर जागा फिर भी नहीं.....

उसके पास एक गुप्त खजाना था
जिससे वह अनजाना था।
अन्त समय जब खजाने ने कहा-
'अच्छा मैं चला।'
तो पश्चाताप में डूबकर
वह उसे बेहद बेचारगी से देखने लगा
और बोला-
'अब तक तुम्हारी याद ही नहीं आई,
तनिक तो रुको मेरे भाई।'

उत्तर मिला-
'समय क्या किसी के लिए रुका है कभी?
रुकना मेरा स्वभाव ही नहीं.....
मैं तो बस निरन्तर चलता ही जाता हूँ
मेरे कदमों से कदम तो तुम्हें मिलाने थे,
नैसर्गिक मोती पाने थे
मैं तो नदी के पानी सा हूँ.....
जो बह गया सो बह गया।
मैं कभी मुड़कर नहीं देखता हूँ.....
जो रह गया सो रह गया॥

-महादेव, सुन्दरनगर-१७४४०१, हि.प्र.।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वरिष्ठ भजनोपदेशक पं. ओम्प्रकाश वर्मा के प्रेरक व रोचक संस्मरण

उन्हें चुटकुले व किस्से पसन्द न थे

-इन्द्रजित् देव

स्वनामधन्य श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी का जन्म हापुड़ (उत्तर प्रदेश) में रामनवमी के दिन हुआ था तथा इसी आधार पर उनके परिवार ने उनका नाम रामचन्द्र रखा था। आर्यसमाज, हापुड़ अपना वार्षिकोत्सव भी उनके जन्म दिवस व रामनवमी के अवसर पर प्रतिवर्ष मनाता है। सन् १९५८ अथवा १९५९ में अपने वार्षिकोत्सव पर उस समाज ने मुझे आमन्त्रित किया था। मेरे अतिरिक्त दो-तीन संन्यासी व विद्वान् उपदेशक भी वहाँ पधारे थे। श्री पं. रामचन्द्र देहलवी तो उत्सव की शोभा में अभिवृद्धि कर ही रहे थे।

वहाँ पहुँचने से पूर्व ही मैंनें सुन रखा था कि श्री पं. जी अपने प्रवचन के उपरान्त किसी के भी भजन श्रोताओं को सुनाने का विरोध करते थे। मैं उस नगर से पूर्व पं. जी के साथ अन्य नगरों में प्रत्यक्ष ऐसा होता हुआ देख भी चुका था। उनका विचार था कि प्रवचनोपरान्त भजन व गीत नहीं सुनाए जाने चाहिएं। इससे प्रवचन का अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ता। शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी का विचार इसके विपरीत था। उनका मानना था कि यदि प्रवचन कमजोर होगा, तभी तो उपरान्त में भजन गाने से उसका प्रभाव घटेगा। वे कहा करते थे कि 'प्रवचन पर भजनों से पानी फिर जाता है' ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि जिस खेत में पानी फिर जाएगा, उस खेत की फसल लहलहाएगी ही।

हापुड़ के उस कार्यक्रम में रामनवमी के दिन एक विशेष आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी ने की। मुझे आशंका थी कि पण्डित जी उसमें मुझे बोलने से रोक देंगे, परन्तु उनकी कृपा व श्रोताओं का मेरे प्रति आकर्षण था। इन कारणों से मुझे भी समय दिया गया तो अपने अभ्यास के अनुसार मैंने पहले एक गजल के दो शेर व तत्पश्चात् कुछ व्याख्यान दिया। मुझ से पूर्व श्री पण्डित जी अपना व्याख्यान दे चुके व मेरी बारी उनके प्रवचन के पश्चात् ही आई थी। श्री पण्डित जी के विचार के कारण मैं भयभीत सा था, परन्तु उस दिन मेरा भय उत्साह में परिवर्तित हो गया। सबसे पहले मैंने एक गज़ल के २ शेर सुनाए-

धर्म पर ऋषिवर जैसे ज़हर खाओ तो हम जानें,
पं. लेखराम आर्य मुसाफिर की तरह गर पेट फड़वाओ तो हम जानें।
मिशन पर गुरु के गुरुदत्त ने अपना जिस्म फूँका,
उस भट्ठी में राख तुम भी बनो तो हम मानें।

इन शेरों को सुनकर श्रोताओं ने करतल ध्वनि से बहुत देर तक मेरा उत्साह बढ़ाया। मेरा भय दूर भाग गया। मैंने श्री पण्डित जी द्वारा विधर्मियों से किए कुछ शास्त्रार्थों की घटनाएं सुनाईं।

उस दिन रामनवमी होने के कारण मैंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी व सुग्रीव की मैत्री का प्रसङ्ग सुनाना आरम्भ किया। लक्ष्मण जी मूर्च्छित पड़े थे, तो सुग्रीव के परामर्श से वैद्यराज सुषैण को राम जी ने हनुमान के माध्यम से बुलाया। वैद्यराज ने घटना-स्थल पर आने के बाद लक्ष्मण का उपचार करने से इनकार कर दिया। कारण पूछने पर उसने यह बताया कि "मैं लंकेश का वैद्यराज हूँ तथा लंकेश अर्थात् रावण की अनुमति के बिना यहाँ लाया गया हूँ। मेरा धर्म लक्ष्मण का उपचार करने से गिरेगा। अतः मैं यह उपचार नहीं करूँगा। मुझे क्षमा करें।"

वैद्य सुषैण की बात सुनकर श्री रामचन्द्र ने कवि के शब्दों में यह कहा-

चन्द्र टरे, सूर्य टरे, चाहे सब जग टर जाये,
धर्म छोड़ने की कभी राम न देगा राय।
जिस धर्म पर सारा राज्य गया, श्री पितृदेव का मरण हुआ।
जिस धर्म पर भाई भरत छूटा, और सीता प्यारी का हरण हुआ।
उसी धर्म पर लक्ष्मण भी यदि मरता है तो मर जाए।

मैंने जब यह काव्यांश सुनाया, तो श्रोताओं के नेत्रों से अश्रुधाराएं बहने लगीं। मैंने आगे यह कहा-राम के ये शब्द सुनकर सुषैण भी द्रवित हो गया व बोला-"आर्यपुत्र! तुम्हारी परीक्षा लेने हेतु ही मैंने अपने धर्म पर प्रश्न किया था। वैद्य का धर्म तो सभी रोगियों की सेवा व उपचार करना ही है। मैं लक्ष्मण का उपचार अवश्य ही करूँगा।" मेरी बातें सुनकर सभा के अध्यक्ष श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी अपने आसन से उठ खड़े हो गए व मेरे पास आकर बैठे। उन्होंने मुझे अपनी बाहों में भरकर समेट लिया व बोले-"मैं सभी भजनीकों के द्वारा मेरे बाद गीत व भजन सुनाने का विरोधी

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नहीं हूँ। पं. कुँवर सुखलाल आर्यमुसाफिर जी को तो सभी उपदेशकों के अन्त में ही बुलवाया जाता रहा है। मैंने उनका कभी भी अपने बाद भजन सुनाने का विरोध नहीं किया। मैंने अपने प्रवचन के बाद उन्हीं भजनों को बोलने का विरोध किया है, जो चुटकले व किस्से सुना-सुनाकर अपना समय पूरा कर देते हैं। ऐसे लोग मेरे गम्भीर व सिद्धान्तनिष्ठ प्रवचनों का प्रभाव भी कम कर देते हैं।'' श्री पं. जी की बातें सुनकर मैं गद्‌गद् हो गया व उनके चरण-स्पर्श करके उठ खड़ा हुआ।

-चूना भट्टियाँ, सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर, हरियाणा।

अष्टाध्यायी-मङ्गलाचरणम्

अस्तीह वैयाकरणं मुनित्रयं,
दाक्षीसुतः कात्यपतञ्जलीति।
सूत्राणि भाष्याणि च वार्तिकानि,
त्रिभ्यो नमः व्याकृतिशास्त्रकृद्‌भ्यः॥

अपारविद्योदधिमध्यमेकं,
ज्ञानस्यमूलं परमेश्वरश्च।
सर्वेश एवास्ति समुद्रमत्र,
आच्छादितं खे समुदीर्णब्रह्म॥

संक्षिप्त वर्णेषु यणादि सूत्रम्,
सर्वाणि सूत्राणि चतुर्दशैव।
सूत्रप्रणेताऽस्य महेश्वरश्री,
आयान्ति सूत्राणि पदेपदेऽपि।।

तेनैव सूत्राणि विरच्य लोके,
सोऽध्यापयामास समस्तच्छात्रान्।
एतद् विधानं सुकरं समेभ्यः,
क्रमेण गच्छन्ति सवर्णयोगम्।।

शब्दौदनं चर्वणपानमम्,
हास्यप्रयोगेऽश्रुविमोचनेऽपि।
सर्वाणि शास्त्राणि सुशब्दयुक्तम्,
शब्दस्य शोभा लभतेऽत्र भूमिम्।।

सूत्रप्रणेत्रा घटकं प्रणीतम्,
वर्णान् समाहृत्य समाससूक्तिः।
वर्णानुपूर्वं रचितं प्रकोष्ठम्,
रम्यो महेशस्य विचित्रयोगः।।

शब्दप्रयोगे प्रकृतिर्न मात्रम्,
नोक्तं सदा प्रत्ययशेषमेव।
एकं विनान्यस्य न पूर्णकार्यम्,
ब्रूतः सहार्थौ पदवाक्यनिष्ठौ।।

प्रारम्भ मध्येऽस्तु सुमङ्गलञ्च,
नाशाय दुःखस्य सुवाचमाह।
ग्रन्थेऽपि पूर्णे न कटुः न हीनः,
तस्मात् पठेत् सुन्दरवाक् विशेषम्।।

पूर्णोदकं पश्य घटं सुमंगलम्,
सौभाग्यसंकेत विचारमग्नः।
अत्राथ ग्रन्थेऽपि सुमङ्गलार्थं,
शास्त्रे प्रबुद्धाः प्रवदन्ति शंसाम्।।

वृद्धिर्गुणश्चेति सुमङ्गलाय,
संज्ञारूपेण प्रथमं नियुक्तम्।
शस्यस्य लाभाय जनाभिवृद्ध्यै,
धातोः न लोपः गुणिनां कदापि।।

सत्यं शिवं सुन्दरमेव वाच्यम्,
वाक्यं मुनेः लोकहितप्रदातृ।
पञ्चोपदेशाः सरला महर्षेः,
किं किं गदान्यष्टकगौरवम्।।

सूत्रेषु नित्यं रमते महात्मा,
लक्ष्येण हीनं न कार्यजातम्।
कालेतर व्याकृत सूत्ररम्यम्,
पाणिन्युपज्ञा नव बोध्यम्।।

नान्योऽस्ति पन्थाश्च सुशब्द शोधे,
संसार विख्यातयशो नमामि।।

-डॉ. वेदप्रिय प्रचेता, ११९, गौतमनगर,
नई दिल्ली-११००४६, दू-०९८६८०२०६०५

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

चतुर्वेदविद् : आमने-सामने-३६

–आचार्या डॉ. शीतल

['चतुर्वेदविद् : आमने-सामने' नामक पुस्तक में **पं. उपेन्द्रराव जी** के **१०० प्रश्न** हैं, इन १०० प्रश्नों के आचार्या सूर्यादेवी जी द्वारा दिये गये उत्तर क्रमशः दिये गये हैं, इन उत्तरों पर **पं. उपेन्द्रराव जी की टिप्पणियां** क्रमशः दी गई हैं, अन्त में इन सब पर **आदित्यमुनि जी** द्वारा क्रमशः **सम्पादकीय निष्कर्ष** दिया गया है। स्थान-स्थान पर तीनों की टिप्पणियां भी दी गई हैं। इस लेखमाला में पं. उपेन्द्रराव जी व आदित्यमुनि जी के प्रश्न, टिप्पणी, सम्पादकीय-निष्कर्ष व पाद-टिप्पणी की समीक्षा और प्रश्नों/आक्षेपों के उत्तर दिये जा रहे हैं।]

प्रश्न २३ (पं. उपेन्द्रराव जी)-क्या यह 'सोमस्वर्ग' वास्तविक है एवं मनुष्यों के लिए गन्तव्य है?

यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम्। तस्मिन्मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव।। (ऋ. ९/११३/७) [ऋषि :-काश्यपो मारीचः; देवता-पवमानः सोमः; छन्दः-पंक्तिः]

यत्र राजा वैवस्वतो० (ऋ. ९/११३/८)
यत्रानुकामं चरणं० (ऋ. ९/११३/९)
यत्र कामा निकामाश्च० (ऋ. ९/११३/१०)
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च० (ऋ. ९/११३/११)

ऋग्वेद के नवममण्डल के अन्तिम-भाग में इस स्वर्ग (सोमस्वर्ग) की कल्पना की गई है। अथर्ववेद में भी एक (घटिया) स्वर्ग की कल्पना है (अ.४/३४), जो पौराणिक-स्वर्ग की (और कुरानी-स्वर्ग की भी) कल्पना का आधार है।

प्रश्नकर्ता पं. उपेन्द्रराव की टिप्पणी-नवम मण्डल के ११३वें सूक्त के अध्ययन से कोई भी बुद्धिमान् कहेगा कि वहाँ का वर्णन काल्पनिक-मनोविलास है। उसको वास्तविक मानना एवं गन्तव्य समझना वैसा ही व्यर्थ-मनोविनोद है, जैसे पौराणिकों के लिए पौराणिकस्वर्ग!

वैदिक लोगों ने ही, अर्थात् सोमपरमात्मा ने ही, स्वर्ग की कल्पना को भक्तों के मस्तिष्कों में भर दिया, ताकि वे जीवन के कष्टों को भूल जाएँ एवं 'मूर्खस्वर्ग' (fools' paradise) में आनन्दित रहें!

अथर्ववेद के स्वर्ग को गृहस्थाश्रमस्वर्ग का उत्तमवर्णन मानना वैसा ही है, जैसे कवि अपनी ही रचनाओं को स्वयं पढ़-पढ़कर आनन्दित हो रहा हो!

सम्पादकीय निष्कर्ष-(आदित्यमुनि जी) प्रश्नकर्ता का कथन ही अधिक सही है।

समीक्षा (शीतल)-पं. उपेन्द्रराव जी का प्रश्न है-''क्या यह 'सोमस्वर्ग' वास्तविक है एवं मनुष्यों के लिये गन्तव्य है?'' पं. उपेन्द्रराव जी द्वारा प्रस्तुत प्रश्न के विवरण से स्पष्ट है कि पण्डित जी 'सोमस्वर्ग' को काल्पनिक मानते हैं और काल्पनिक होने से उसे मनुष्यों के द्वारा प्राप्तव्य भी नहीं मानते हैं। इसके पीछे छिपी हुई उनकी भावना यह प्रतीत होती है कि ऐसी काल्पनिक=व्यर्थ की वस्तुओं का वर्णन जिसमें किया गया हो, वह सर्वज्ञ परमात्मा की कृति नहीं हो सकती।

सुधी पाठक भी इसी प्रश्न की समीक्षा में भाग ले सकें, इस हेतु आवश्यक प्रतीत होता है कि समीक्षा से पहले, ऋग्वेद के जिस मन्त्र को आधार बनाकर पं. उपेन्द्रराव जी ने प्रश्न के रूप में आक्षेप किया है, उस मन्त्र का अर्थ कर दिया जाए।

मन्त्र का छन्द 'पंक्ति' है। अतः पादच्छेद होगा-'यत्र ज्योतिरजस्रम्'; 'यस्मिँल्लोके स्वर्हितम्'; 'तस्मिन्मां धेहि पवमान', 'अमृते लोके अक्षिते', 'इन्द्रायेन्दो परिस्रव'। प्रथम चार पाद मिलकर एक वाक्य है, पांचवां पाद दूसरा वाक्य है। इस प्रकार इस मन्त्र में दो वाक्य हैं। भाषा का एक नियम है, जिसको '**प्रथमोपस्थिति-न्याय**' कहते हैं। जिसका अर्थ है, वक्ता जिस बात को मुख्यरूप से कहना चाहता है, उसको वाक्य में प्रथम पढ़ता है। जैसे-'होटल में खाने का आनन्द ही अलग है'। इस वाक्य में वक्ता खाने के विषय में आनन्द देने वाले स्थान के रूप में 'होटल' को प्रधानता से बताना चाह रहा है। अतः वाक्य में 'होटल' शब्द प्रथम पढ़ा है। ठीक ऐसे ही प्रस्तुत मन्त्र में प्रथम तीन पाद में 'यत्र, यस्मिन्, तस्मिन्'-ये प्रथम पठित सर्वनाम-पद हैं। अतः प्रत्येक पाद में इनकी प्रधानता मानी जायेगी अर्थात् मन्त्ररचियता प्रधानरूप से इनको बताना चाह रहा है।

'यत्र, यस्मिन्, तस्मिन्'-ये तीनों सर्वनाम हैं और सर्वनाम का स्वभाव होता है कि वह किसी 'नाम-पद' से वाच्य वस्तु को इंगित करता है। यहां 'नाम-पद' से वाच्य वह वस्तु

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कौन सी है, जिसके लिये ये तीनों सर्वनाम प्रयुक्त किये गये हैं? वह वस्तु चतुर्थ-पाद में वर्णित है-'अमृते लोके' अर्थात् 'अमृतलोक'। प्रथमोपस्थिति-न्याय से चतुर्थ-पाद में भी 'अमृत-लोक' को मन्त्ररचयिता प्रधानरूप से बताना चाहता है। किन्तु इस पाद में 'अक्षिते' यह पद 'अमृते लोके' का विशेषण है। भाषा में दूसरों को बताने की दृष्टि से सामान्यरूप से स्वभावत: विशेष्य की अपेक्षा से 'विशेषण' की, प्रधानता होती है। क्योंकि 'अक्षित' पद यहां विशेषण है, अत: प्रथमोपस्थिति न्याय से 'अमृत-लोक' की प्रधानता के साथ-साथ मन्त्ररचयिता 'अक्षित' को भी प्रधानरूप से कहना चाहता है। अर्थात् चतुर्थपाद के सब पद प्रधानरूप से ही वर्णित हैं। प्रधानरूप से वर्णन करने का अर्थ है कि इन पदों से वर्णित अर्थ इस मन्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। चतुर्थ पाद का अर्थ है-वह अमृतलोक, जिसमें होने वाला सब कुछ अक्षित=क्षयरहित है अर्थात् ह्रासरहित है, जिसमें कभी न्यूनता या कमी नहीं होती। तृतीय पाद में प्रार्थना की गई है-(तस्मिन्) उसमें (माम्) मुझको (धेहि) रखो (पवमान!) हे पवित्र सोमस्वरूप परमेश्वर! उसमें अर्थात् किसमें? 'अक्षिते अमृते लोके'-उस अक्षय अमृत लोक में। जिसकी कोई भी वस्तु ह्रास, न्यूनता वा क्षय को प्राप्त नहीं होती है, ऐसे अमृत=नष्ट न होने वाले=चिरकाल तक बने रहने वाले लोक में=स्थिति में, मुझ को रक्खो।

वह अमृतलोक कैसा है? उसमें क्या-क्या है? तो बताया-(यस्मिन्) जिस (लोके) लोके में (स्वर्हितम्) केवल मात्र सुख है, दु:ख का लेश भी नहीं है, (यत्र) जहां (ज्योति:) प्रकाश=ज्ञान (अजस्रम्) निरन्तर बना रहता है। पूरा मन्त्रार्थ है-जहां निरन्तर ज्ञान की ही सत्ता है, अज्ञान का लेश भी नहीं है; जहां सुख ही सुख है, तनिक भी दु:ख नहीं; ऐसे उस अक्षित=क्षयरहित अमृत-लोक में हे पवमान! मुझको रक्खो अर्थात् उस अमृत-लोक को मुझे प्राप्त कराओ। (इन्द्राय) ऐश्वर्य की कामनावाले जीवात्मा के लिये (इन्दो) हे परमैश्वर्यवान् प्रभो! (परिस्रव) चारों ओर से ऐश्वर्य की वर्षा करो=ऐश्वर्य को प्राप्त कराओ।

जब 'प्रथमोपस्थिति-न्याय' को पादों के बीच में लगाया जायेगा, तब प्रथम वाक्य के चारों पादों में से प्रथम-पाद अर्थात् 'यत्र ज्योतिरजस्रम्' की प्रधानता मानी जायेगी। प्रथम-पाद की प्रधानता का अर्थ है-इस मन्त्र में जिस अमृत-लोक की कामना की गई है, जिस अमृत-लोक को प्राप्त करवाने की प्रार्थना की गई है, उस अमृत-लोक की प्रशस्यता का मुख्य कारण है-ज्ञान की सत्ता का निरन्तर बना रहना। क्योंकि जहां-जहां अज्ञान है, अंधकार है, वहां-वहां ही दु:ख, बाधा, न्यूनता, अशान्ति, अपराध.....आदि विद्यमान होते हैं। इस संसार में जितने भी दोष-कमियां दिखाई दे रहे हैं, वे सब केवल अज्ञान के कारण से हैं। जैसे-जैसे अज्ञान हटता चला जाता है, वैसे-वैसे यही दु:खमय संसार सुखमय प्रतीत होता चला जाता है। यदि व्यक्ति ज्ञान की अवस्था में ही निरन्तर बना रहता है, तो वह निरन्तर सुख की अनुभूति करता है। मन्त्र में वर्णित अमृत-लोक में=मोक्ष की स्थिति में, केवलमात्र सुख है, दु:ख का लेश भी नहीं, उसका मुख्य कारण है-ज्ञान का निरन्तर बने रहना। अत: 'ज्योतिरजस्रम्' को 'अमृतलोक' का वर्णन करते हुए प्रथम पढ़ा गया है।

मन्त्र में कितनी सूक्ष्मता के साथ अमृतलोक का वर्णन किया गया है। वेद का प्रत्येक मन्त्र अपनी विशिष्ट वाक्यरचना के द्वारा किसी सूक्ष्म-गहरे तत्त्व का वर्णन करता है। यह हमारी बुद्धि की सीमा है, कि हम वेदमन्त्रों में छिपे रहस्यों को पूरा समझ नहीं पा रहे हैं। वेदमन्त्रों की बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ किसी वस्तु का प्रतिपादन करने की सामर्थ्य के कारण ही कहा जाता है-वेद में वाक्यरचना बुद्धिपूर्वक की गई है। बुद्धिपूर्वक वाक्यरचना बुद्धिमान् ही कर सकता है। क्या किसी बुद्धिमान् का कथन व्यर्थ की कल्पना हो सकता है?

इसी सूक्त के अन्य चार मन्त्र-'यत्र राजा वैवस्वतो०', 'यत्रानुकामं चरणं०', 'यत्र कामा निकामाश्च०', 'यत्रानन्दाश्च मोदाश्च०'-भी पं. उपेन्द्रराव जी ने संकेतरूप में उपस्थित किये हैं, जो इस 'अमृत लोक' की ही विशेषता को बताते हैं। उसका यहां संकेत रूप में ही अर्थ किया जा रहा है। मन्त्रविस्तार को पाठक कृपया वेदभाष्य में देख लेवें। वह 'अमृत-लोक' कैसा है? तो आगे कहा '**यत्र राजा वैवस्वत:**'=जहां वैवस्वत राजा है अर्थात् जहां वैवस्वत=शुद्धज्ञानयुक्त जीवात्मा का साम्राज्य है अर्थात् मन-बुद्धि-अहंकार-इन्द्रियादि का प्रभाव जहां पर नहीं है, जहां जीवात्मा पूर्णरूप से स्वाधीन है, विवस्वान् (=प्रकाशस्वरूप परमात्मा) पिता के संरक्षण में है। '**यत्रानुकामं चरणम्**'=जहां जीवात्मा कामना=इच्छानुसार विचरण करता है। '**यत्र कामा निकामाश्च**'=जहां सब कामनायें निश्चित रूप से पूर्ण होती हैं, अथवा जहां सब लौकिक कामनायें छूट जाती हैं। '**यत्रानन्दाश्च मोदाश्च**'=जहां आनन्द ही आनन्द है, मोद (=हर्ष) ही मोद है, ऐसे 'अमृतलोक' में मुझ को स्थिर करो।

अहो! कितना उत्कृष्टवर्णन है 'अमृतलोक' का। इसी 'अमृतलोक' के लिये पं. उपेन्द्रराव जी ने 'सोमस्वर्ग' शब्द का प्रयोग किया है। आइये, अब समीक्षा करते हैं पं. उपेन्द्रराव

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जी के प्रश्नरूपी आक्षेप की।

'सोमस्वर्ग' को पं. उपेन्द्रराव जी ने काल्पनिक माना है। 'सोमस्वर्ग' काल्पनिक क्यों है, इस बात को पं. उपेन्द्रराव जी ने नहीं खोला है। कोई भी बात केवल कह देने मात्र से सिद्ध नहीं हो जाती, प्रमाणों से, तर्क-युक्ति से सिद्ध करनी पड़ती है। यूं तो मैं भी कह सकती हूँ-'खरगोश के सींग होते हैं'। 'बंद मुट्ठी लाख की, खुल गई तो खाक की'-इस बात को अच्छी तरह जानने वाले पं. उपेन्द्रराव जी ने स्वभावानुसार फिर एक बार मुट्ठी बंद रख कर ही प्रश्न करने का आनन्द लूटा है।

अतीन्द्रिय-विषय अर्थात् ऐसे विषय, जो वास्तविक तो हैं, किन्तु इन्द्रियों से नहीं जाने जा सकते। ऐसे विषयों के लिये तो केवलमात्र शास्त्र ही प्रमाण होते हैं। प्रत्यक्ष होने से पूर्व तक ऐसे अतीन्द्रिय विषय केवल मात्र शास्त्र से ही जाने जाते हैं और शास्त्रों के आधार पर अनुमान से उनको समझने की कोशिश की जाती है। जिन्होंने शास्त्र-रूपी आंख को फोड़ दिया है, प्रमाणकोटि से बाहर कर दिया है, ऐसे अन्धे लोगों को न कुछ दिखता है और न ही कुछ दिखाया जा सकता है। उनके लिये तो केवल 'कल्पना' ही शरण है।

जब तक बच्चा 'play' अथवा 'KG' में पढ़ रहा होता है, तब यदि उसको १२वीं कक्षा के पाठ्यक्रम के बारे में बताया जाए, तो वह बात उसके दिमाग में ही नहीं बैठती। वह उसको सुनने की ही स्थिति में नहीं होता, कल्पना करना तो बहुत दूर की बात है। यदि पहली-दूसरी कक्षा के बच्चे को १२वीं कक्षा के पाठ्यक्रम की बात बता दी जाये, तो वह बात इसको मिथ्या कल्पना व मनोविनोद सी प्रतीत होगी। यदि सातवीं-आठवीं कक्षा के बच्चे को वही बातें बतायी जायें तो वह उसको संभावना के रूप में देखेगा। 'हो सकता है, ऐसा भी हो'-इस रूप में वह इसको स्वीकार करेगा। किन्तु जब बच्चा स्वयं १२वीं कक्षा में पहुंच जाता है, तब वास्तविकता सामने होती है। वास्तविकता को देखने के लिये बच्चे को १२वीं कक्षा में पहुंचना अनिवार्य है, इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है। पं. उपेन्द्रराव जी को भी मन्त्र में वर्णित 'सोमस्वर्ग' काल्पनिक लग रहा है, मनुष्य के द्वारा प्राप्त करने के अयोग्य लग रहा है, मनोविलास मात्र लग रहा है, उसमें पण्डित जी का दोष नहीं है, स्तर का भेद है। अभी पं. उपेन्द्रराव जी उस स्तर पर नहीं पहुंचे हैं, जहां पर यह 'सोमस्वर्ग' वास्तविक हो जाता है। इसके लिये पं. उपेन्द्रराव जी को इसी 'काल्पनिक' स्वर्ग के स्वामी पवमान सोम की उपासना करनी पड़ेगी। उसकी जब कृपा होगी, तब ही पण्डित जी को इस 'सोमस्वर्ग' की वास्तविकता नज़र आयेगी और उसको प्राप्त करने के लिये पण्डित जी प्रयत्न भी करेंगे।

स्वविवेक को पं. उपेन्द्रराव जी प्रमाणरूप में स्वीकार करते हैं। अत: स्वविवेक से अब विवेचना करेंगे कि मन्त्र में वर्णित 'सोमस्वर्ग' मनुष्यों के द्वारा गन्तव्य है या नहीं।

लोक में हम देखते हैं तो पाते हैं कि प्रत्येक बुद्धिमान् व्यक्ति दु:ख से छूटना चाहता है और सुख को प्राप्त करना चाहता है। कोई भी बुद्धिमान् ऐसा नहीं मिलेगा जो ये चाहे कि दु:ख तो छूट जायें, पर सुख न मिले अथवा दु:ख भी बने रहें और सुख भी मिलते रहें। वास्तविकता तो यह है कि प्रत्येक व्यक्ति विशुद्ध सुख की, दु:ख रहित सुख की, पूर्ण सुख की सदा कामना करता है। व्यक्ति का हर प्रयत्न दु:ख की निवृत्ति व सुख की प्राप्ति के लिये ही होता है। ऐसे ही 'सोमस्वर्ग' की बात मन्त्र में की गई है, जहां केवल सुख ही सुख है, दु:ख का लेश भी नहीं। जब सब लोग 'सोमस्वर्ग' को ही चाहते हैं, तो फिर वह मनुष्यों के द्वारा गन्तव्य क्यों नहीं? बल्कि **एकमात्र गन्तव्य-स्थान 'सोमस्वर्ग' ही है**। अन्य सब सांसारिक सुख की स्थितियां तो पड़ाव मात्र हैं।

पं. उपेन्द्रराव जी ने लिखा है-'अथर्ववेद में भी एक (घटिया) स्वर्ग की कल्पना है, जो पौराणिक-स्वर्ग की (और कुरानी-स्वर्ग की भी) कल्पना का आधार है। उन्हें पहले यह सिद्ध करना चाहिए कि अथर्ववेद का स्वर्ग घटिया है और वह 'पौराणिक स्वर्ग' व 'कुरानी-स्वर्ग' का आधार है। शेखचल्ली की तरह व्यर्थ ही मन के घोड़े नहीं दौड़ाने चाहिएं।

टिप्पणी में पं. उपेन्द्रराव जी ने लिखा है-'नवम मण्डल के ११३ वें सूक्त के अध्ययन से कोई भी बुद्धिमान् कहेगा कि वहां का वर्णन काल्पनिक-मनोविलास है'। अर्थात् ऋग्वेद में वर्णित स्वर्ग को काल्पनिक मनोविलास मानने वाला बुद्धिमान् है। बिना किसी आधार के स्वयं को बुद्धिमान् व दूसरों को मूर्ख समझना-यह मूर्खता का मुख्य लक्षण है।

पं. उपेन्द्रराव जी! कल्पना का नशा कुछ ज्यादा ही चढ़ गया है। अत: आपको 'वैदिक लोग' भी 'सोमपरमात्मा' ही दिखने लगे हैं। धन्य है वह कल्पना-लोक, यत्रानुकामं चरणम्। 'fools' paradise' का आनन्द तो अभी आप ही लूटते नज़र आ रहे हैं, अपने साथी आदित्यमुनि जी के साथ।

टिप्पणी में आगे पं. उपेन्द्रराव जी लिखते हैं-'जैसे कवि अपनी ही रचनाओं को स्वयं पढ़-पढ़कर आनन्दित हो रहा हो!'। यदि रचना उत्तम है, तो स्वयं पढ़-पढ़कर आनन्दित

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

होना, कोई दोष नहीं है। उलाहना देने से पहले अपेक्षित था कि पं. उपेन्द्रराव जी यह सिद्ध करते कि अथर्ववेद के ४/३४ वें सूक्त में गृहस्थाश्रम का उत्तमवर्णन नहीं है। किन्तु क्या करें! वही पुराना रोग! कभी भी, किसी भी बात को खोलकर के न कहना, मुट्ठी बंद रखना और दूसरों को मूर्ख सिद्ध करते रहना।

सम्पादकीय निष्कर्ष लिखते समय लग रहा है कि श्री आदित्यमुनि जी शायद कल्पना लोक से थोड़े बाहर आ चुके थे। इसीलिये इस बार उन्होंने अपने तात प्रश्नकर्ता पं. उपेन्द्रराव जी के कथन को '**पूरा सही**' नहीं कहा है, किन्तु '**अधिक सही**' कहा है। अर्थात् आदित्यमुनि जी भी अपने तात के कथन=उत्तर को पूरा स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। जितना भी स्वीकार कर पाये हैं, लगता है, वह भी दोस्ती का प्रभाव है। दोस्ती में थोड़ा तो निभाना ही पड़ता है।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. विद्वद् गोष्ठी-'**आर्यसमाज की ध्यान पद्धति**' **तृतीय**, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए) १३-१५ मार्च २०१३, ऋषि उद्यान, अजमेर।

२. आर्यसमाज की ध्यान पद्धति-ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर। ११ से १७ अप्रैल २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००६९६१, समय-रात्रि ८ से ८.३०। पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

३. विद्वद् गोष्ठी-'**आर्यसमाज की यज्ञपद्धति**' तृतीय, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए), २७ से ३० जून २०१३, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद, मध्यप्रदेश।

ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम

नवगठित '**वैदिक आध्यात्मिक न्यास**' का **वार्षिक सामूहिक स्नेह सम्मेलन** २३-२४ फरवरी २०१३ को ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित किया गया है। इसमें वैदिक आध्यात्मिक न्यास के सदस्य जहां परस्पर एक दूसरे के कार्यों से परिचित होंगे, वहां सामूहिक उपासना, यज्ञ, आध्यात्मिक प्रवचन और तीन संगोष्ठी-परिचर्चा में भी भाग लेंगे। **संगोष्ठी-परिचर्चा के विषय** हैं-**१.** आर्ष विद्वानों का निर्माण अधिक व शीघ्र कैसे हो? **२.** कैसे ज्ञात हो कि हमारे पाप-पुण्य कितने-कितने प्रतिशत हैं, कितने-कितने प्रतिशत हो रहे हैं? **३.** चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की सृष्टि के बाद होने वाली प्रलय, समस्त ब्रह्माण्ड की एक साथ होती है या उसके कुछ-कुछ अंशों की?

इस कार्यक्रम में दर्शन-व्याकरण आदि शास्त्रों के ५० से अधिक विद्वान्-विदुषियां भाग लेंगे। इसमें वैदिक आध्यात्मिक न्यास की भावी योजना पर भी विचार किया जायेगा। आचार्य ज्ञानेश्वर जी (वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़) इस न्यास के अध्यक्ष हैं व आचार्य सत्यजित् जी (महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर) इसके सचिव हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गोवंश की रक्षा का एक प्रयास

-ब्र. प्रभाकर आर्य

दिनांक १२.१२.१२ को आर्यवीर दल अजमेर व परोपकारिणी सभा की जागरूकता व सतर्कता से ट्रेन की तीन बोगियों में भरे गोवंश को कटने से बचाया गया। १२ दिसम्बर बुधवार के दिन आर्यवीर दल को दूरभाष से सूचना प्राप्त हुयी कि सियालदाह एक्सप्रेस से बहुत सारे बैलों को अजमेर से कलकत्ता कटने के लिये ले जाया जा रहा है। सूचना मिलते ही सुनील जोशी (शिक्षक आ.वी.द.) अन्य कार्यों को छोड़कर तुरन्त रेलवे स्टेशन पर पहुंच गये, जहाँ पर गोवंश को ट्रेन की तीन बोगियों में रात्रि २.०० बजे भरा गया था। वैसे तो प्रशासन की ओर से गाय आदि पशुओं को ले जाने के लिये ऊपर से खुले डब्बों में ले जाने का विधान है, लेकिन नियमों की परवाह न करते हुये गोवंश को बिलकुल बन्द डब्बों में भरा गया था, जहाँ पर सांस लेने के लिये हवा भी उपलब्ध नहीं थी। गोवंश भरने व ले जाने में समस्या ना हो इसके लिये पहले उन्हें नशे के इन्जेक्शन लगाये गये थे।

जोशी जी ने वहां पहुंचकर गुप्त रूप से जांच की। जांच के सही पाये जाने पर आर्यवीर दल के अन्य कार्यकर्ताओं, पत्रकारों व हिन्दू संगठनों को दूरभाष से सूचना कर दी। कुछ ही देर में आ.वी.द. के प्रान्तीय अधिष्ठाता श्री यतीन्द्र, शिक्षक-पंकज आर्य, अभिषेक आर्य, सुशील शर्मा, विश्वास पारीक, मृत्युंजय शर्मा व अन्य संगठनों के लोगों ने घटना स्थल पर पहुंचकर ट्रेन के आगे लेटकर ट्रेन को रुकवाया और कार्यवाही करने की मांग की। परन्तु प्रशासन की ओर से सकारात्मक कार्य न होने पर गो-भक्तों ने रेलवे स्टेशन-सड़क को जाम कर दिया। लगभग एक घण्टे के जाम के बाद प्रशासनिक अधिकारियों की आंखें खुलीं। अधिकारियों द्वारा दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही का आश्वासन मिलने पर ही जाम को खोला गया।

बोगियाँ खोली गयीं। अन्दर देखते ही गोवंश पर कसाईयों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों की पराकाष्ठा नजर आई। जिस डब्बे में केवल ५ या ६ पशु बांधे जाने चाहियें, वहां पर बीस पशुओं को क्रूरता पूर्वक बांधा गया था। इस प्रकार तीन डब्बों में ६४ बैल बन्धे हुये थे, जो कि कई दिनों से चारा-पानी न मिलने के कारण निढाल थे। रेलवे के पार्सल अधिकारी के पास से देखने के लिए कागज लिये गये, जिनमें एक बोगी तो पूरी ही फर्जी थी। ये सारा कार्य पुलिस की देख-रेख में हुआ।

इस प्रकार बैल तो छुड़वा लिये गये, परन्तु अब उन्हें रखा कहां जाये? उनके चारे आदि की व्यवस्था कौन करे? इस पर ''बजरंग दल'', ''विश्व हिन्दू परिषद्'', ''शिवसेना'' आदि सभी उपस्थित संगठनों ने हाथ खड़े कर दिये, और सभी एक-एक करके वहां से निकल गये। अब सच्चे गोरक्षक बचे थे। अन्त में आ.वी.द. के अधिष्ठाता श्री यतीन्द्र व परोपकारिणी सभा ने ये जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। बैलों को ''ऋषि उद्यान'' में लाया गया। बैलों को लाने के लिये नगरपालिका की केवल एक गाड़ी थी, जिसमें एक बार में पांच बैल लाये जा सकते थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों व आ.वी.द.के कार्यकर्ताओं की रातभर की मेहनत से सब बैलों को रात २.३० बजे तक ऋषि उद्यान पहुँचाया गया। एक बैल रेलवे स्टेशन से ही छूटकर भाग गया, जिसे पकड़ने के लिये रात को ही ब्र. शोभित, ब्र. लक्ष्यवीर व ब्र. प्रभाकर लगभग १० कि.मी. तक दौड़े। इसमें ब्र. शोभित के पैर में चोट भी आ गयी।

अगले दिन तक गोरक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष सतीश कुमार, हरियाणा गोरक्षा दल के अध्यक्ष आ. योगेन्द्र आर्य (गुरुकुल ऋषि उद्यान के पूर्व छात्र), राजस्थान गोरक्षा दल के अध्यक्ष बाबूलाल जांगिड़ एवं उत्तरप्रदेश व पंजाब आदि के २०० कार्यकर्ता ऋषि उद्यान पहुँच गये। इनके निवास व भोजन की व्यवस्था परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में ही की गई। वहां सभी की बैठक हुयी। दोपहर को सभी गोरक्षकों ने ऋषि उद्यान से जिलाधीश कार्यालय तक रैली निकाली व जिलाधीश से मिलकर छुड़ाये गये गोवंश की व्यवस्था व दोषियों के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग की। प्रशासन के आश्वासन के बाद अगले दिन १४ दिसम्बर को सभी कार्यकर्ता चले गये, परन्तु प्रशासन ने फिर आंखें मूंद लीं।

एक सप्ताह से अधिक दिनों तक बैलों के चारे-पानी की व्यवस्था परोपकारिणी सभा ने की। अनेक गोभक्तों का भी सहयोग प्राप्त होता रहा। कुछ बैलों के पैरों में (कीड़े) खुरपका रोग हो गया था। आ. वेदनिष्ठ जी, आ. आत्मवीर जी व दीपक जी के नेतृत्व में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने एक-एक बैल के पैरों से कीड़ों को निकाला, सफाई की, पट्टियां बांधी। पशु स्वभावानुसार बैल के लात मारने से ब्र. सोमेश व ऋषि उद्यान के कर्मचारी घायल भी हो गये, परन्तु

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

फिर भी अध्ययन के साथ-साथ रातभर जाग-जागकर गोवंश की सेवा करने में कोई भी ब्रह्मचारी पीछे नहीं हटा।

गोवंश को विभिन्न गोशालाओं में यथास्थान पहुंचवाने की व्यवस्था का दायित्व यतीन्द्र जी ने अपने कन्धों पर लिया। प्रशासन की अनदेखी करने पर उन्होंने जिलाधीश कार्यालय के चक्कर लगाये। सप्ताह भर लगातार भाग-दौड़ करते रहे। अजमेर के अधिकारियों-निशु अग्निहोत्री उपखण्ड अधिकारी, समीर सिंह अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, वीरभान अजवानी जी.आर.पी., किशोर कुमार जिला रसद अधिकारी, सी.आई. चैनाराम चौधरी जी.आर.पी व पार्षद ज्ञान जी सारस्वत ने भी इस पुनीत कार्य में सहयोग किया। समाचार लिखे जाने (दि. २०.१२.१२) तक २५ बैलों को विभिन्न गोशालाओं में स्थानान्तरित किया जा चुका है। शेष भी कुछ दिनों में गोशालाओं में भेजे जायेंगे।

महर्षि दयानन्द ने 'गौ करुणा निधि'' पुस्तक में गायों के प्रति संवेदना प्रकट की है। उसी का अनुकरण करते हुए महर्षि की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने ऋषि के कार्य को आगे बढ़ाया है। आर्यवीर दल के नवयुवकों ने जिस जागरूकता व निष्ठा से कार्य किया एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं। थोड़ी सी जागरूकता संस्कृति की रक्षा करने में अहम भूमिका निभा सकती है। यह सारा घटना क्रम प्रतिदिन समाचार पत्रों व दृश्य प्रसारणों में स्थान पाता रहा।

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

-गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर।

गौशाला ऋषि उद्यान का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

ऋषि उद्यान पुष्कर मार्ग अजमेर में परोपकारिणी सभा की ओर से गौशाला संचालित है, जिसमें ४५-५० (छोटे-बड़े सभी) गाय व बछड़े-बछड़ियाँ हैं। सभी पशु सुन्दर, स्वस्थ व हष्ट-पुष्ट हैं। गौशाला की शोभा देखते ही बनती है।

पुष्कर में प्रतिवर्ष पशु मेले का आयोजन किया जाता है, जो कि प्रान्तीय स्तर का होता है। पशु मेले में अनेक नस्ल की गायों की प्रतियोगितायें करायी जाती हैं। इन प्रतियोगिताओं में गौशाला ऋषि उद्यान के पशु भी प्रतिवर्ष भाग लेते हैं एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ प्रथम स्थान प्राप्त करते हैं। इस वर्ष भी ऋषि उद्यान गौशाला ने प्रतियोगिता में भाग लिया, जिनमें से तीन पशुओं ने (दो बछड़ी, एक साण्ड) प्रथम स्थान प्राप्त किया और साण्ड ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 'सर्वश्रेष्ठ गीर पशु' (चैम्पियन) का पुरस्कार भी जीता। पहले सभी पशुओं की अपने-अपने विषय (यथा दूध की मात्रा, सुन्दरता आदि) में प्रतियोगिता कराई जाती है। उनमें प्रथम आने वाले पशुओं में भी जो प्रथम होता है, उसे सर्वश्रेष्ठ की उपाधि, सम्मान चिह्न एवं राशी से पुरस्कृत किया जाता है। ये पुरस्कार अजमेर के सांसद व केन्द्रीय मन्त्री सचिन पायलेट ने अपने हाथों से प्रदान किये।

इस सफलता में परोपकारिणी सभा के पदाधिकारियों व गौशाला में दान देने वाले महानुभावों के साथ-साथ गौशाला के गौसेवक श्रीमान् सांवरलाल एवं उनकी धर्मपत्नी का सहयोग विशेष सराहनीय है, जो कि पूर्ण कार्यनिष्ठा, लगन व रुचि से गायों की सेवा करते हैं एवं गौशाला में घर जैसा वातावरण बनाये रखते हैं। गौशाला का दुग्ध ऋषि उद्यान में संचालित गुरुकुल के आचार्यों-ब्रह्मचारियों के साथ अन्य संन्यासी-वानप्रस्थी-साधकों-अतिथियों व कर्मचारियों के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

-ब्र. प्रभाकर आर्य, गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर।

कोई भी मनुष्य मङ्गलमय, सब की पालना करने वाले परमेश्वर की आज्ञा-पालन के विना संसार वा परलोक के सुखों को प्राप्त होने को समर्थ नहीं होता। न कदापि किसी मनुष्य को नास्तिक पक्ष को लेकर ईश्वर का अनादर करना चाहिये। जो नास्तिक होकर ईश्वर का अनादर करता है, उसका सर्वत्र अनादर होता है। इससे सब मनुष्यों को आस्तिक बुद्धि से ईश्वर की उपासना करनी योग्य है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-३.६३।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गतिशील जीवन का उद्देश्य, एकाग्रता का अभिप्राय और ग्रहण शक्ति की पृष्ठभूमि

-डॉ. अजय शुक्ला

प्रभावशाली भूमिका : मानवीय दृष्टिकोण का सशक्त प्रस्तुतिकरण किसी सामाजिक पृष्ठभूमि में किया जाना और उसे व्यावहारिक धरातल पर क्रियान्वयन हेतु सम्पूर्ण शक्तियों के साथ समर्पित कर देना अत्यन्त विशिष्ट कार्य होता है। व्यक्तिगत जीवन को अग्रसर करने के विभिन्न उपाय प्राय: व्यक्ति को किसी बृहद् स्थिति तक नहीं पहुँचने देते हैं, क्योंकि निजी स्वार्थ का दबाव कहीं न कहीं बाधक बन जाया करता है। यदि स्वयं कुछ हासिल करने के उद्देश्य से प्रयासरत होने की कोशिश की जाती है, तब भी परिणाम केवल जीवन की गतिशीलता के उद्देश्य तक सुनिश्चित हो पाते हैं। जनमानस के बहुत बड़े समूह पर विचार किया जाए तो यह ज्ञात हो जाता है कि सीमित सोच तथा उनसे सम्बद्ध स्थितियाँ अब किस सीमा तक न्यूनतम स्तर पर पहुँच चुकी हैं कि जिसमें जीवन का कोई सार्थक उद्देश्य नहीं होता है। निजी परिश्रम के बल से किसी प्रकार का कोई लक्ष्य निर्धारित करने की स्थितियाँ निर्मित भी हुईं, तब भी विभिन्न कोशिशें किसी तरह से स्थूल संसाधनों के एकत्रीकरण एवं उनके उपभोग तक बनी रहीं।

जीवन में कुछ प्राप्त होने पर सुख, नहीं मिलने पर दु:ख, तथा परिस्थितिवश व्यग्रता से व्यथित होते हुए निराशाजनक स्थितियों में परिणित हो जाना नि:शक्त स्थिति का परिचायक होता है। जब अन्त:करण के द्वारा गतिशील जीवन के उद्देश्य का विश्लेषण किया जाता है, तब इस तथ्य का स्पष्टीकरण परिलक्षित होता है, जिसमें एकाग्रता के वास्तविक अभिप्राय और ग्रहण-शक्ति की पृष्ठभूमि का रहस्य छिपा रहता है। किसी बृहद् उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जिन मूलभूत गुणों की आवश्यकता होती है, उनमें 'लक्ष्य के प्रति एकाग्रता' प्रमुख पहलू है, क्योंकि विरोधाभासी परिस्थितियों के पश्चात् भी उद्देश्य की निरन्तर स्मृति एवं उसे प्राप्त करने की दृढ़ता के साथ पुरुषार्थ करना अदम्य इच्छाशक्ति का परिणाम होता है। सामान्य स्थितियों के अन्तर्गत सीखने की प्रवृत्ति को इस प्रकार से विकसित करना होता है कि किन्हीं कारणों से अनुकूलता के क्रम में यदि प्रतिकूल वातावरण का जन्म हो जाए और अन्तर्मन चाहते हुए भी बुद्धि को सकारात्मक भाव सम्प्रेषित नहीं कर सके, तब भी कुछ न कुछ अच्छाई ढूंढ लेने की आन्तरिक शक्ति बनी रहनी चाहिए। गतिशील जीवन के उद्देश्य को पूर्ण करने में जागृति की श्रेष्ठ अवस्थाओं का निरन्तर बोध अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है, जिससे लक्ष्य के प्रति अन्तर्ध्यान बना रहता है और विभिन्न प्रकार की मानसिक एवं भावनात्मक वेदनाओं के पश्चात् भी ग्रहण-शक्ति की व्यावहारिकता उजले पक्षों पर कार्यरत रहती है।

सार्थक उपस्थिति : व्यक्तिगत जीवन में विभिन्न अपेक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन यह बताता है कि सर्वाधिक अपेक्षा स्वयं की स्वयं से ही होती है, परन्तु बाह्य जगत् में यह सत्य सामान्य रूप से उजागर नहीं हो पाता है। कर्मक्षेत्र के अन्तर्गत जब उत्साहजनक एवं निराशापूर्ण स्थितियों की विवेचना स्वयं को केन्द्र में रखते हुए करने का प्रयास किया जाता है, तब इस वास्तविकता का आभास प्रत्यक्ष अनुभूति का आधार बन जाता है। स्वयं के जीवन के प्रति साधारण सोच के द्वारा कार्य को पूर्ण करने की कोशिश करना और इसकी निरन्तरता को बनाये रखना किसी मजबूरी से जुड़ी मानसिकता का पर्याय होता है। सामाजिक जीवन के स्वरूप को उस समय अत्यधिक मदद प्राप्त होती है, जब व्यक्ति स्वयं से सकारात्मक संवाद स्थापित करते हुए अपनी उपलब्धियों को सहजता से अभिव्यक्त करता है और उसे अन्तत: पारिवारिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत स्वीकार कर लिया जाता है।

कई बार निजी स्तर पर इस अहसास के साथ गुजरना पड़ता है, जिसमें सत्यता का अनुभवजन्य परिणाम व्यक्ति की उपयोगिता से सम्बन्धित रहता है। जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में आशाजनक परिणामों की अपेक्षा का निर्माण होना और उसके लिए सार्थक पुरुषार्थ की व्यावहारिकता तक पहुँचना गतिशील जीवन के उद्देश्य में स्वत: ही सन्निहित रहता है। सामान्य जीवन की दिनचर्या में जब विशिष्ट कर्मों का प्रतिपादन किया जाता है, तब वह सामाजिक संरचना के अन्तर्गत मनन-चिन्तन की विषय-वस्तु से जुड़ जाया करता है। उच्चकोटि के चिन्तन से उत्पन्न श्रेष्ठ स्थितियों का नैसर्गिक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आकर्षण व्यक्ति को महान् कार्यों के द्वारा स्वयं की सार्थक उपस्थिति को सिद्ध करने के लिए सदैव प्रेरित किया करता है। सहज दृष्टि से अवलोकन करने पर व्यक्तित्व की वास्तविकता का पता लगाना कठिन होता है, क्योंकि गतिशील जीवन के उद्देश्य हेतु किये जाने वाले कर्मों का स्तर एवं उससे सम्बद्ध एकाग्र मन:स्थिति और विभिन्न परिस्थितियों में उपयुक्त को ग्रहण करने का स्वरूप पूर्णत: विशिष्ट एवं अनूठा होता है। संयमित तरीके से जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों के साथ भी होनी-अनहोनी का घटित स्वरूप अपने दु:खद भावों को अभिव्यक्त करता है, इसके लिए गतिशील जीवन के उद्देश्य के प्रति समर्पण का भाव सदैव बना रहना चाहिए। किसी परिस्थिति अथवा समयानुसार स्वयं को ढालने की प्रवृत्ति से अलग एक स्थिति यह भी होती है, जिसमें स्वयं के अनुसार परिस्थिति एवं समय का निर्धारण करना होता है, जिससे गतिशील जीवन के उद्देश्य को सार्थक उपस्थिति में परिवर्तित किया जा सके।

लक्ष्योन्मुखी प्रवृत्ति : गतिशीलता के संदर्भ को रेखांकित करने से पूर्व जीवन में कई महत्वपूर्ण विचार मानस-पटल पर अंकित हो जाते हैं, जिसमें बृहद् स्तर के उद्देश्य प्रमुख रूप से अपनी भूमिका निभाया करते हैं। हालाँकि किसी बड़े उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु छोटे-छोटे लक्ष्यों को हासिल करना पड़ता है, क्योंकि इनके आधार से अभिप्रेरणा का भाव जागरित होता है और एक लघु उद्देश्य की पूर्णता सम्भव होने लगती है। जीवन के सकारात्मक पक्षों को स्वीकार करते हुए यदि नकारात्मक स्थितियों का मूल्यांकन किया जाए तो निश्चित रूप से विपरीत परिस्थितियों के लिए स्वयं के दृष्टिकोण का स्वरूप लक्ष्योन्मुखी प्रवृत्ति से अपना सम्बन्ध स्वत: ही स्थापित करने में सक्षम होता है, जिसके अन्तर्गत गतिशील जीवन के उद्देश्य को एकाग्रता एवं ग्रहण शक्ति के द्वारा प्राप्त करने के विभिन्न प्रयत्न किये जाते हैं। यदि जीवन में लक्ष्य बनाकर सही दिशा में प्रयास किया जाए, तो सफलता अवश्य प्राप्त होती है, क्योंकि जब एक बार उद्देश्य का निर्धारण हो जाता है, तो उपलब्धि प्राप्त करना आसान हो जाता है।

सामान्य रूप से व्यावहारिक जगत् में व्यक्तिगत एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि के भीतर जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है, वह सूक्ष्म तथा स्थूलता के प्रसंगों पर लगभग खरे उतरते हैं और जो कुछ चाहा गया था, उसी अनुपात में वह प्राप्त कर लिया करते हैं। सामाजिक और मानवीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है, उनकी प्रकृति अत्यधिक भिन्न होने के कारण उन्हें लक्ष्योन्मुखी प्रवृत्ति के साथ पुरुषार्थ करने हेतु प्रेरित किया जाता है, जिससे आमूलचूल परिवर्तन की स्थितियाँ निर्मित हो सकें। सृजनात्मक अभिलाषाएँ जीवन के अनसुलझे पक्षों पर मूलभूत रूप से कार्य करने की जिज्ञासा को उत्पन्न किया करती हैं, जिसके परिणाम नवीन लक्ष्यों पर कार्य करने की उत्सुकता के रूप में प्रकट हुआ करते हैं। एक बार गतिशील जीवन के उद्देश्य में वैज्ञानिक दृष्टि का समावेश हो जाता है, तब एकाग्रता के साथ पूर्णता के परिवेश को विधिवत् तरीके से विकसित किया जा सकता है। किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने का तात्पर्य होता है कि पुन: कोई दूसरा लक्ष्य निर्धारित किया जाए और अन्तिम लक्ष्य अर्थात् गतिशील जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए नवाचार से युक्त लक्ष्योन्मुखी प्रवृत्ति को आत्मसात करते हुए सदा अग्रसर रहने का नवीन संकल्प लिया जाए।

सात्विक स्वीकारोक्ति : चिन्तन का सबल पक्ष सदैव व्यक्तिगत जीवन के लिए संजीवनी का कार्य करता है, क्योंकि इसके द्वारा सकारात्मक मनोदशा का निर्माण सुनिश्चित हो जाता है। जीवन में मन, वचन एवं कर्म की पवित्रता को एक बार स्वीकार करने के पश्चात् गुणात्मक अनुक्रम में बढ़ते रहना श्रेष्ठ स्थिति का जीवंत प्रमाण होता है। किसी भी परिस्थिति के अन्तर्गत स्वयं को गतिशील जीवन के उद्देश्य से सम्बद्ध करके सात्विक स्वीकारोक्ति के भाव को कल्याणकारी कार्यों में समर्पित कर देना वास्तविक रूप से नि:स्वार्थ सेवा का महत्वपूर्ण आधार होता है। यदि जीवन में निजी दृष्टिकोण में परिवर्तन कर लिया जाता है, तब निश्चित रूप से सत्य के प्रति संवेदनशील मन:स्थिति का निर्माण हो जाता है, और कुछ समय के पश्चात् किसी भी स्थिति में सीखने के साथ गुणों को ग्रहण करने की प्रवृत्ति भी विकसित हो जाया करती है।

सामान्यत: किन्हीं व्यक्तियों के द्वारा यह प्रश्न उठाया जाता है कि आखिर **गतिशील जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए?** जबकि उनकी पुरातन मान्यता के अनुसार जीवन की गतिशीलता को प्रतिदिन प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा रहा है। जीवन की श्रेष्ठ स्थिति के लिए अन्तर्मन किसी विशिष्ट की तलाश में रहता है तथा कभी-कभी एक अप्रत्यक्ष अनुभूति भी व्यक्ति को होती है, जिसे वह सामान्य दशाओं के अन्तर्गत अभिव्यक्त नहीं कर पाता है। जब व्यक्ति स्व-मूल्यांकन के परिदृश्य में स्वयं को रखकर देखने एवं समझने का प्रयास करता है, तब उसे इस सत्यता का

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आभास हो जाता है, जिसमें अकादमिक, तकनीकी, व्यावसायिक एवं अनुसंधान से जुड़ी शिक्षा के द्वारा प्राय: आवश्यकताओं की पूर्ति ही की जा सकती है। कई बार स्व-चिन्तन के द्वारा जीवन की वास्तविकता को अनुभव करते हुए कुछ सहज प्रश्न स्वयं व्यक्ति अपने आप से पूछता है कि मैं इस दुनिया में क्यों आया हूँ और मेरे आने का उद्देश्य आखिर क्या है? तब जाकर इस बात का पता चलता है कि गतिशील जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिए। विभिन्न परिवेश के अन्तर्गत क्यों कुछ लोग सम्पूर्ण एकाग्रता के साथ कार्यों में लीन होते हैं तथा उन्हें विपरीत परिस्थिति के भीतर अच्छाई कैसे दिख जाया करती है? इन प्रश्नों के परिदृश्य में गतिशील जीवन का उद्देश्य सन्निहित होता है, जो सदैव व्यक्ति को प्रेरणा प्रदान करता रहता है। सात्विक स्वीकारोक्ति से जुड़ी स्थितियों पर गौर किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जब गतिशील जीवन के उद्देश्यों में मानवीय पक्षधरता के लिए अधिकाधिक सहभागिता होने लगे, तब वहाँ उद्देश्य की पूर्णता सुनिश्चित हो जाती है।

उपलब्धि संतुष्टि : अनुभूति के स्तर पर संतुष्टि का स्वरूप जीवन में समाहित हो जाए और अन्तर्मन उपलब्धियों से सृजित होते हुए गतिशील जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सके, तो निश्चित रूप से आत्मिक सुख तक पहुँचना आसान हो जाएगा। निजी स्तर पर किये जाने वाले प्रयासों में सबसे अहम् पुरुषार्थ स्वयं को निर्धारित लक्ष्य के लिए एकाग्र करना एवं सीखने की प्रवृत्ति द्वारा प्रभावशाली भूमिका का निर्वहन करना महत्वपूर्ण होता है। सामान्यत: जीवन में समझौतावादी मानसिकता के निर्मित हो जाने से व्यक्ति केवल जीवन की गतिशीलता हेतु कोशिश कर पाता है, जबकि दृढ़ इच्छाशक्ति के माध्यम से गतिशील जीवन के उद्देश्य तक स्वयं की सार्थक उपस्थिति को दर्ज करते हुए पहुँचा जा सकता है।

यदि स्वयं के जीवन को लक्ष्य के साथ सम्बद्ध कर दिया जाए, तो कुछ समय के पश्चात् व्यक्ति एक निश्चित लक्ष्य के लिए कार्यरत हो जाता है और उसकी लक्ष्योन्मुखी प्रवृत्ति सदा उसे अभिप्रेरित करती रहती है। किसी भी परिस्थिति में विचलित न होकर कर्मक्षेत्र में अपनी उपयोगिता सिद्ध करते हुए सकारात्मक एवं नकारात्मक स्थितियों के मध्य कुछ ग्रहण करने की क्षमता बनाये रखना वास्तविक रूप से सात्विक स्वीकारोक्ति का प्रमाण होता है। एक निश्चित लक्ष्य पर पहुँचने के लिए छोटे-छोटे प्रयासों की आवश्यकता होती है, जिससे सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं और गतिशील जीवन के उद्देश्य की पूर्णता उस समय सुनिश्चत हो पाती है, जबकि मानव जीवन उपलब्धिपूर्ण संतुष्टि को प्राप्त कर लेता है। व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन के स्तर का मूल्यांकन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि कुछ बाधाएँ होती हैं, जिन्हें समयानुसार दूर कर लिया जाए, तो यह पक्ष समाजोपयोगी योगदान के लिए समर्थ सिद्ध हो सकता है। गतिशील जीवन की उद्देश्यपरकता को सामाजिक एवं मानवीय दृष्टिकोण के समक्ष जब प्रस्तुत किया जाता है, तब एकाग्रता के अभिप्राय क्यों बदल जाया करते हैं तथा ग्रहण शक्ति की पृष्ठभूमि किस महान् प्रेरणा का अनुसरण करने लिए तत्पर हो जाया करती है? विचारगत परिवेश की व्यावहारिकता को निभाने के लिए जीवन को उपब्धिपूर्ण बनाने की आवश्यकता होती है, जिसके अन्तर्गत इस बात का निर्णय किया जाता है कि प्रत्येक मनुष्य किसी एक विशिष्ट कार्य के लिए इस जगत् में प्रविष्ट हुआ है।

साधारण एवं महत्वपूर्ण कर्मों का लेखा-जोखा प्राय: अनुमानित तौर पर सभी के समक्ष निकलकर प्राप्त हो जाता है, लेकिन जो कुछ व्यक्ति के द्वारा किया जा रहा है, वह किस स्तर तक सीमित या असीमित है, इसका पता लगाना कठिन कार्य होता है। जीवन की प्रक्रिया में सम्मिलित होकर कहीं पहुँच जाना और स्वयं के द्वारा गतिशील जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करना, अलग-अलग स्थितियों का परिणाम होता है, जिन्हें उपलब्धिपूर्ण संतुष्टि के साथ जोड़ने की आवश्यकता है, जिससे स्वयं के जीवन पर गर्व किया जा सके। अत: सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ महान् उपलब्धियों को प्राप्त करने की दृढ़ इच्छाशक्ति का व्यावहारिक उपयोग करते हुए गतिशील जीवन के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

८६-बी सेक्टर, कमला नगर, पिपलानी, भोपाल, म.प्र., मो-९८२६४४९३८५

विद्वान् माता-पिता, आचार्यों की शिक्षा के विना मनुष्यों का जन्म सफल नहीं होता और मनुष्य भी उस शिक्षा के विना पूर्ण जीवन वा कर्म के संयुक्त करने को समर्थ नहीं हो सकते। इस से सब काल में विद्वान् माता-पिता और आचार्यों को उचित है कि अपने पुत्र आदि को अच्छे प्रकार उपदेश से शरीर और आत्मा के बल वाले करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-३.५५।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जिज्ञासा समाधान, पृष्ठ ९ का शेष.....

दस्यु, दुष्ट स्वभाव युक्त नहीं लिखा है। यह ध्यान देने योग्य बात है। जहां-जहां उन्होंने दुष्ट आदि शब्द लिखे हैं, वहां 'शूद्र' शब्द नहीं है, और जहां 'शूद्र' शब्द है, वहां दुष्ट आदि शब्द नहीं लिखे हैं। जिज्ञासा में उद्धृत महर्षि वचनों को देखकर सामान्यत: यह प्रतीति होती है कि वे शूद्र को दुष्टादि कह रहे हैं, जैसा कि जिज्ञासा में भी लिखा गया है। आइये महर्षि के इन वचनों को प्रकरण सहित सूक्ष्मता से देखें।

प्रथम उद्धरण ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका वर्णाश्रम का है। इसके पहले महर्षि लिखते हैं-''इसमें यह विशेष जानना चाहिए कि प्रथम मनुष्य जाति सब की एक है''। इस वाक्य के बाद में महर्षि ने अगले वाक्य कहे हैं जो जिज्ञासा में उद्धृत हैं। अर्थात् महर्षि कहना चाह रहे हैं कि-मनुष्य जाति के एक होते हुए भी उसमें भेद होते हैं, हो सकते हैं, यह वेद व व्यवहार सम्मत है। मनुष्यों के एक होते हुए भी उनमें किस-किस तरह भेद हो सकते हैं, भेद देखे जा सकते हैं, इसे आगे बताया। **पहला** भेद है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र वर्णों का। **दूसरा** भेद बताते हुए वे कहते हैं-''वेदरीति से इनके दो भेद हैं-एक आर्य और दूसरा दस्यु''। यहां '**इनके**' से तात्पर्य '**मनुष्यों**' से है, न कि चार वर्णों से। यदि यह भेद चार वर्णों का मानेंगे, जैसा कि जिज्ञासा कर्त्ता भी मान रहे हैं, तो फिर प्रथम तीन वर्ण तो 'आर्य' कहलायेंगे व 'शूद्र' को 'दस्यु' कहना होगा, किन्तु ऐसा है नहीं। 'इनके' शब्द से तात्पर्य 'मनुष्यों' से है जैसा कि आगे के वेद प्रमाण का अर्थ करते हुए महर्षि ने स्पष्ट लिखा है-''मनुष्यों के ये दो भेद जान ले''। ध्यान देने योग्य है कि यहां 'शूद्र' शब्द नहीं आया है, दस्यु का अर्थ शूद्र नहीं किया है। दस्यु का अर्थ किया है-दुष्ट स्वभाव युक्त डाकू आदि।

तीसरा भेद शूद्र व आर्य का बताया। इसके प्रमाण 'उत शूद्रे उत आर्ये' का अर्थ करते हुए जब शूद्र शब्द आया, तब साथ में दस्यु, दुष्ट, डाकू, दुष्ट स्वभाव युक्त आदि शब्द साथ में नहीं लिखे हैं। 'आर्य' व 'शूद्र' ये दो भेद यहां किये गये हैं। ये भेद भी मनुष्यों के हैं, चूंकि प्रसंग मनुष्यों के भेद का है। महर्षि ने यहां भी लिखा है-'' .....ये दो भेद जाने गये हैं''। **चौथे** भेद में भी कहा-''देव और असुर'' अर्थात् 'विद्वान् और मूर्ख ये दो भेद ही जाने जाते हैं।'' ये दो भेद भी मनुष्यों के हैं। यहां 'शूद्र' शब्द नहीं लिखा है। इन सब से महर्षि कहना चाह रहे हैं कि जन्म से सभी मनुष्य हैं, एक ही जाति के हैं, जो भेद हैं वे गुण-कर्मानुसार होते हैं। जाति सबकी एक है-मनुष्य जाति।

जिज्ञासा में **दूसरा व तीसरा उद्धरण** सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास का है। यहां भी इसके पहले वचन है-''एक मनुष्य जाति थी''। फिर आर्य-अनार्य आदि भेदों का वर्णन है। यहां भी महर्षि यही बताना चाह रहे हैं कि मनुष्य जाति एक है, जो भेद हैं वे गुण-कर्मानुसार हैं, जाति के आधार पर भेद नहीं है। साथ ही महर्षि यहां बताना चाह रहे हैं कि इस देश में आर्य तिब्बत से आये, तब यहां पहले कोई नहीं था। यह आक्षेप ठीक नहीं कि शूद्रों के स्थान पर कब्जा करके वे यहां बस गये। आर्य यहां आकर बसे, इन्हीं आर्यों में गुण-कर्मानुसार ये शूद्रादि भेद हुए।

यहां भी यह ध्यान देने योग्य है कि सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास के उद्धृत प्रथम वचन में प्रथम वर्गीकरण आर्य व दस्यु का है, किन्तु यहां 'शूद्र' नाम नहीं लिखा गया है। 'उत शूद्रे उतार्ये' यह दूसरा वर्गीकरण है, यहां 'शूद्र' शब्द है किन्तु दुष्ट, डाकू, दुष्ट स्वभाव युक्त, अधार्मिक आदि निन्दित शब्द नहीं हैं। यहां शुद्रों को मूर्ख-अनाड़ी-अनार्य ही कहा गया है, जो कि गुण-कर्मानुसार उचित कथन है। अर्थात् ये दो भिन्न-भिन्न वर्गीकरण हैं। दूसरे वर्गीकरण में द्विज-अद्विज/ज्ञानी-मूर्ख मात्र इसी आधार पर मनुष्यों वर्गीकरण है।

सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास के उद्धृत द्वितीय वचन ''यह लिख चुके हैं.....'' में भी मनुष्यों को दो बार वर्गीकृत किया गया है। पहले वर्गीकरण में 'आर्य व दस्यु' के रूप में भेद कहा है; वहां डाकू, दुष्ट, अधार्मिक शब्द हैं, किन्तु वहां इसकी व्याख्या में 'शूद्र' शब्द नहीं है। दूसरे वर्गीकरण में 'आर्य-अनार्य' के रूप में भेद कहा है, वहां शूद्र शब्द है, किन्तु वहां डाकू-दुष्ट-अधार्मिक इन शब्दों का प्रयोग नहीं है।

इन सब से स्पष्ट है कि महर्षि 'शूद्र' को अनार्य-अनाड़ी-मूर्ख-अनपढ़ तो मानते हैं, किन्तु उसे दुष्ट-अधार्मिक नहीं मानते। दुष्ट-अधार्मिक तो कोई भी हो सकता है, ऐसा व्यक्ति गुण-कर्म की दृष्टि से 'आर्य' नहीं कहा जा सकता, भले ही पढ़ा-लिखा होने से द्विज कहलाये। पढ़ा-लिखा न होने से शूद्र को द्विज-आर्य तो नहीं कह सकते, किन्तु धार्मिक होने से उसे 'आर्य' कह सकते हैं। ऐसे शूद्र को दुष्ट-अधार्मिक-डाकू नहीं कहा जा सकता।

दलित संगठन यदि कोई आपत्ति करते हैं, तो उन्हें ऊपर लिखी बातें बताई-समझाई जानी चाहिए। उन्हें कहना चाहिए कि आप में जो पठित-धार्मिक हैं, ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य का कार्य करते हैं, वे महर्षि व वेद की दृष्टि में शूद्र हैं ही नहीं। लोक में प्रचलित मिथ्या बातों के आधार पर महर्षि के

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वचनों को नहीं देखना चाहिए। लोक के अनुसार महर्षि के वचनों को देखेंगे, तो यह महर्षि के प्रति न्याय नहीं कहा जा सकता। आर्यसमाज के अनुसार 'शूद्र' भी होते हैं, पर वे भी आर्यसमाज में अन्यों की तरह सहभागी बन सकते हैं, उन्हें अवश्य ही सहभागी बनना चाहिए। महर्षि व आर्यसमाज ने उनके प्रति न्यायोचित व्यवहार रखा है।

'उत शूद्र उतार्ये' (अथर्ववेद १९.६४.१) इस वचन में शूद्र के साथ कोई भेदभाव या अन्याय नहीं कहा गया है। पूरा मन्त्र है–

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।।

इस मन्त्र में अपने को देवों (ब्राह्मणों) में, क्षत्रियों में प्रिय करने की प्रार्थना की गई है। शूद्रों व अर्यों (वैश्यों) में प्रिय करने की प्रार्थना की गई है। जो–जो भी देखते हैं उन सब में मैं प्रिय हो जाऊं, उनकी प्रियता का पात्र रहूँ, यह प्रार्थना की गई है। शूद्रों में प्रिय होने की कामना, शूद्रों के प्रति श्रेष्ठ भाव को बताती है।

महर्षि दयानन्द ने शूद्र के बारे में स्पष्ट लिखा है– ''मूर्खता आदि नीच गुणों से शूद्र वर्ण सिद्ध होता है।'' (ऋ. भा.भू.(सृष्टिविद्याविषय:)।

''शूद्र सब सेवाओं में चतुर, पाकविद्या में निपुण, अतिप्रेम से द्विजों की सेवा और उन्हीं से अपनी उपजीविका करे और द्विज लोग इसके खानपान, वस्त्र, स्थान, विवाह आदि में जो कुछ व्यय हो सब कुछ देवें। अथवा मासिक कर देवें। चारों वर्णों को परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख, दु:ख, हानि, लाभ में ऐकमत्य रहकर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन, मन, धन का व्यय करते रहना''। –**सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास।**

''शूद्र को योग्य है कि निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान आदि दोषों को छोड़ के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा यथावत् करना और उसी से अपना जीवन करना, यही एक शूद्र का गुण, कर्म है''। –**सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास**

''विद्याहीन, पगों के समान मूर्खपन आदि नीच गुणयुक्त हैं, वे शूद्र करने और मानने चाहियें। यजु.भा.३१.११।

महर्षि के इन व जिज्ञासा में उद्धृत वचनों के रहते, महर्षि व आर्यसमाज की शूद्र सम्बन्धी दृष्टि स्पष्ट ज्ञात होती है। इन पर कोई आक्षेप–आरोप नहीं हो सकता, यह दृष्टि उचित है, न्याय्य है, ग्राह्य है। शूद्रों को आर्यसमाज में आने व उन्नति करने का पूरा अधिकार है।

–ऋषि उद्यान, अजमेर।

आर्यजगत् के समाचार, पृष्ठ ४२ का शेष.....

हमारा दायित्व रहता है, अत: अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर इस शिविर को सफल बनायें।

–आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग, पत्र व्यवहार–आर्य राजेन्द्र कपूर (मन्त्री) आर्यसमाज मुण्डेरा बाजार, इलाहाबाद–२११०११ चलभाष ०९८८९४८२४८९, Email: rajok51@rediffmail.com

१०. आचार्य सानन्द जी का छबड़ा प्रवास–पतंजलि योग समिति छबड़ा के प्रबन्धक श्री हरिओम सेन के आग्रह पर ऋषि उद्यान अजमेर से आचार्य सानन्द जी छबड़ा (बारां राजस्थान) पधारे।

आचार्य श्री ने छबड़ा में दिनांक ०१.१२.१२ को प्रात: ७.३० से आदर्श विद्या मन्दिर में ७०० छात्रों, ८.३० से अभिनव पब्लिक स्कूल में २०० छात्रों, टैगोर पब्लिक स्कूल में ४०० विद्यार्थियों को एवं अन्त में ३.०० बजे रा.सी.मा.वि. कोटड़ी में २५० विद्यार्थियों को चरित्र निर्माण, नशा मुक्ति, गायत्री मंत्र एवं हंस जैसा विद्यार्थी बनाने आदि विषयों पर सम्बोधित किया। इसके बाद रात्रि ७.३० बजे खेड़ली ग्राम के पतंजलि ग्राम समिति के कार्यकर्ता श्री रतनसिंह खारोल एवं श्री लक्ष्मण सिंह खारोल अध्यापक के यहाँ १ घण्टे के लगभग अध्यात्म पर चर्चा की। दिनांक ०२.१२.१२ को छबड़ा में ही आर्यसमाज मन्दिर पर ९.३० बजे यज्ञ में भाग लिया एवं गायत्री मन्त्र की विस्तृत व्याख्या की। दोपहर में श्री बृजेश विजय के विशेष आग्रह पर आचार्य श्री ने पतंजलि के पूर्व अध्यक्ष श्री सत्यनारायण गालव के आवास पर पहुंचकर परिजनों को सद्वचनों द्वारा लाभान्वित किया। इसी दिन रात्रि ७.३० बजे चाँचोड़ा गाँव में मन्दिर पर ग्राम वासियों को नशा–मुक्ति पर अपने व्याख्यान दिये।

११. आर्यसमाज सैक्टर–२२ चण्डीगढ़–का वार्षिक चुनाव वर्ष २०१२–२०१३ लिए दिनांक २०.१०.२०१२ को केन्द्रीय आर्य सभा के मन्त्री श्री अविनाश चन्द्र गुप्ता एवं कर्नल धर्मवीर जी की देखरेख में सम्पन्न हुआ, जिसमें श्री विजय उप्पल को प्रधान चुना गया और उन्हें अपनी अन्तरंग सभा गठित करने का अधिकार दिया गया। **मन्त्री**–श्री रमेश्वर प्रसाद गुप्ता, **उपप्रधान**–श्री कमल कृष्ण महाजन, श्री पृथ्वीसिंह, श्री विनय सेठी, **उपमन्त्री**–श्री रविदत्त शर्मा, श्री जयप्रकाश गोयल, **संयुक्त उप मन्त्री**–श्री देशराज थापर, **कोषाध्यक्ष**–श्री बनी सिंह, **वेदप्रचार अधिष्ठाता**–श्री ईश्वर कुमार, **पुस्तकालय/औषधालय अध्यक्ष**–श्री बलदेव कृष्ण, **संयोजक–आर्यवीर दल**–श्री धन सिंह। ✱

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पुस्तक-परिचय

नाम-उत्कृष्ट शंका-समाधान, **समाधान कर्ता**-स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, **सम्पादक**-डॉ. राधावल्लभ चौधरी, **प्रकाशक**-दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन-रोजड़, गुज. **मूल्य**-४०.००, **पृष्ठ संख्या**-२८८।

भौतिकवाद की चकाचौंध में मानव मन चहुं दिशी उड़ान भर रहा है। नाना प्रकार के प्रश्नों की झड़ी मानस पटल पर उकेरता रहता है, किन्तु उनका स्थायी समाधान क्या हो सकता है? मानव अपनी संतुष्टि के लिए यत्र-तत्र सर्वत्र भटकता है। योग्य विद्वान्/विदुषी को पाने के लिए जो सरलता से सटीक उत्तर दे सके। इस हेतु स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक का चिन्तन मनन के साथ २६३ प्रश्नों का उत्तर मानव मन को आन्दोलित करता है। उन्होंने लौकिक पारलौकिक प्रश्नों का अथक परिश्रम कर समाधान किया है। वास्तव में उनकी अन्तर्भावना का साधुवाद है। प्रश्नों का उत्तर सरल व ग्राह्य है, उत्तर की उदाहरण द्वारा पुष्टि भी की है।

प्रश्नों के उत्तर की झलक उन्हीं के शब्दों के माध्यम से अवलोकित कीजिये-**शंका**-मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती। ऐसा क्यों कहा जाता है? **समाधान**-यही तो बात है, जो लोगों के दिमाग में नहीं बैठती। शरीर मरता है और आत्मा नया जन्म ले लेती है। जैसे स्कूटर को गैराज में रखकर हम उससे अलग हो जाते हैं। अंतर इतना है कि स्कूटर पर तो हम रोज बैठते हैं, फिर अलग हो जाते हैं। उससे तो जल्दी अलग हो जाते हैं, पर शरीर से पचास, साठ, अस्सी या सौ साल के बाद अलग होते हैं। तात्पर्य है कि एक न एक दिन आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। उसी क्षण का नाम मृत्यु है। उसके बाद अगला जन्म होता है। ठीक वैसे ही जैसे आप पुराने स्कूटर को छोड़कर नया स्कूटर खरीदते हैं। गीता में इसी बात को पुराने कपड़े त्याग कर नये वस्त्र धारण करने के उदाहरण से समझाया गया है। स्कूटर घिस-पिट गया, नया ले लिया। ऐसे ही शरीर जर्जर हो गया, तो छोड़ दिया, फिर नया शरीर मिल जायेगा। मरने के बाद कहानी खत्म नहीं होती, यह इसलिए कहा जाता है।

पाठक शंका समाधान के समुद्र में गोते लगायेंगे तो अवश्य मोती, माणक, हीरे-पन्ने आदि ज्ञान के बिन्दु प्राप्त होंगे। स्वामी जी ने हमारा मार्ग कठिन से सरल कर दिया है। भाव व भाषा सरल व अनूठी है। पुस्तक का मुखपृष्ठ विविध रङ्गों से अलंकृत है। पाठक हृदयङ्गम कर मन की जिज्ञासा को समझ पायेंगे। हमारी अस्थिरता स्थिरता में परिवर्तित हो जायेगी। स्वामी जी को नमन। पाठकों का मन पठन के लिए लालायित हो यही अपेक्षा है। यही समाधान की कुंजी होगी।

-देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर।

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. परोपकारी पत्रिका के ''नवम्बर द्वितीय'' अंक में आवरण के पिछले (४४) पृष्ठ पर 'परोपकारिणी सभा' का निर्माणाधीन '**प्रतीक**' देखने को मिला। सभा ने यह एक सराहनीय कार्य किया है जो कि आवश्यक भी था, इससे सभा को एक नयी पहचना मिलेगी। आशा है कि पाठकगण सभा के इस प्रतीक निर्माण में अपना पूर्ण सहयोग देंगे।

मेरे मस्तिष्क में एक विचार बहुत समय से चल रहा है कि **आर्यसमाज का भी एक प्रतीक होना चाहिये**, जो कि आर्यसमाज की प्रत्येक पत्र-पत्रिका, पुस्तक, पत्रक, आमन्त्रण-पत्र आदि पर अनिवार्य रूप से छपे। आर्यसमाज की ध्वजा पर जो चिह्न (उगते हुये सूर्य में ओ३म् लिखा हुआ) होता है, उसे भी प्रतीक रूप में मान सकते हैं, परन्तु वर्तमान में वो केवल ध्वजा तक ही सीमित है। आर्यसमाज की अधिकांश पुस्तकों, पत्रिकाओं पर ये देखने को नहीं मिलता है। मेरे विचार से इसी ध्वजा वाले चिह्न के नीचे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ये आदर्श वाक्य लिखकर, इसे आर्यसमाज का प्रतीक बनाया जा सकता है, क्योंकि ये सर्वमान्य है। सभी संस्थाओं व संगठनों का अपना एक प्रतीक होता है, जिस कारण वे समाज में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। आर्यसमाज को भी इससे एक पहचान मिलेगी। सभी ऋषिभक्त पाठकों से निवेदन है कि वे आर्यसमाज के प्रतीक से सम्बन्धित अपने विचार व सुझाव भेजकर इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग करें।

-ब्र. प्रभाकर आर्य, गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर।

२. प्रतीक सम्बन्धी सुझाव-**१.** प्रतीक नं. १ सुन्दर लग रहा है। **२.** दयानन्द सरस्वती से पहले 'ऋषि' लाल रंग में होना चाहिये। **३.** मन्त्रों का हिन्दी अनुवाद या भाव भी साथ में हो तो

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अच्छा है ताकि मेरे जैसे संस्कृत ना जानने वाले भी मन्त्रों का भाव समझ जायें। **–अनाम**

३. नवम्बर १२ के पत्र के अन्तिम पृष्ठ पर प्रतीक व मन्त्र हेतु सुझाव–१. भवन के मध्य में ऊपर ओ३म् पताका लगावें। दर्शाये गये प्रतीक में झण्डा नहीं है। **२.** स्वामी जी के चेहरे पर प्रकाश किरणें दर्शायी जावें। **३.** परोपकारिणी के नीचे बारीक अक्षरों में परोपकारिणी का निर्माण वर्ष लिखें। **४.** इसी प्रकार महर्षि के चित्र में नीचे (१८२४–१८८३) भी लिखें। **५.** चारों वेदों को चारों कोनों में–झरोखों में या जहां उचित समझें, भी दर्शाएं। **६.** मन्त्र संख्या ४ संगच्छध्वं.....सभी मनुष्यों, परिवारों, समाजों एवं राष्ट्रों के लिए उपयोगी है। **७.** प्रतीक संख्या १ स्वीकार करें। **–देशराज आर्य, म.नं. ७२५, सैक्टर–४, रेवाड़ी। ९४१६३३७६०९**

४. परोपकारिणी सभा के प्रतीक के रूप में ऋषि दयानन्द जी का वह प्रसंग अधिक प्रभावी है–जब ऋषि देखते हैं कि एक गरीब माता अपने मृतपुत्र को गंगा में प्रवाहित करती है और उसका कफन अपने पास रखती है, तभी से दयानन्द कोपीनधारी बन गये। यह है परोपकार की भावना और सच्चा त्याग। 'मूर्तिपूजा' यह अंधविश्वास का प्रतीक है। इसका विरोध आप सतत करते रहें। 'परोपकारिणी' में आपका ही लेख पठनीय लगता है। विद्वानों को चाहिये कि वे अपनी विद्वत्ता न दिखायें, कुछ रचनात्मक कार्य करें। अश्लीलता, नैतिक अध:पतन के विरुद्ध कार्य करना होगा। नई पीढ़ी का अध:पतन चिन्ता का विषय है। **–मलूवाड़े धर्मपाल, सीताराम नगर, लातूर, महाराष्ट्र।**

५. आपका **सम्पादकीय** पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता एवं ज्ञान–वर्धन होता है। सभी विद्वानों के लेख एवं समाधानों को पढ़कर आत्मा संतुष्ट हो जाती है। परोपकारी पत्रिका के द्वारा आर्यसमाज की गतिविधियों के विषय में भी ज्ञात होता रहता है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारे विद्वानों की लम्बी एवं स्वस्थ आयु प्रदान करे ताकि आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द की ज्योति जलती रहे और भारतवर्ष में ज्ञान का प्रकाश फैलता रहे।

–आशा आर्य, १४, मोहन मेकिन्स रोड़, डालीगंज, लखनऊ, मो–९८३९००१३८४

६. परोपकारी पत्रिका के अक्टूबर २०१२ के प्रथम अंक में आपके द्वारा **सम्पादकीय** में 'कितना उचित है विदेशी निवेश का भय?' आपके विचार पढ़ने को मिले' उपर्युक्त विचार से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके, आपने सच्चाई का आईना दिखाया है, इसके लिये आप बधाई के पात्र हैं। हमारी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं स्वीकार करें। **–रमेश यादव, संस्थापक अध्यक्ष–श्री कृष्ण कला साहित्य अकादमी, २७, गोकुल गंज, कैण्डीलपुरा, इन्दौर, म.प्र.। मो–९८०६६२८४१४**

७. ''परोपकारी'' का दिसम्बर (प्रथम), २०१२ का अंक: इस अंक के पृष्ठ २० पर आपने बलात्कार की घटनाओं के कुछ मुख्य कारण दिये हैं, जो बहुत ही सही हैं। चूँकि मैं विश्वभर में भ्रमण करता रहा हूँ, इसलिए इस विषय पर मैं कुछ और कहना चाहूँगा–सन् १९६० से १९६४ के समय की बात है, जब लन्दन में बलात्कार की घटनायें बहुत बढ़ गईं थी, उस समय उनकी जागरूक मीडिया ने बहुत बड़ा एक अभियान चलाया था कि यदि स्त्रियों को, लड़कियों को बलात्कार से बचना है, तो वे ऐसे कपड़े पहनें जो उनके अंगों को उजागर न करें और सही ढंग के कपड़े–वस्त्र ही पहनें, जो शालीनता लिए हुए हों–फ्रान्स के अन्धे फैशन की तरफ न दौड़ें। आज हमारे देश में उपरोक्त चेतावनियों की अत्यन्त आवश्यकता आन पड़ी है क्योंकि हमारे नवयुवक–नवयुवतियाँ सिने जगत् व अन्य आये दिन के फैशन–शो से प्रभावित हो रहे हैं। एक भेड़–चाल फैशन के मामले में इन सिने–तारिकाओं से अथवा उसी प्रकार के भोंडे–शो जो अब खेलों की स्पर्धा में भी घुस चुके हैं, हमारे नवयुवक–युवतियों को गलत मार्ग पर ले जा हैं, जिससे उनके अर्ध–नग्न वस्त्र पहनी इन महिलाओं को देखकर, जनता के कुछ व्यक्ति गलत अर्थ लगाकर, अभद्र व्यवहार व बलात्कार तक कर बैठते हैं। अत: हमारे मीडिया को व सामाजिक संस्थाओं को सजग होना पड़ेगा और अपने–अपने परिवार से व शैक्षणिक संस्थाओं से इस अभद्र फैशन–शो, जो अर्ध–नग्न तक की स्थिति में हमारी कन्याओं को ले जाता है–बन्द करना होगा।

बम्बई में एक सोमानी का प्रसिद्ध मेनेजमेन्ट कॉलेज है। जहाँ, प्रत्येक युवती विद्यार्थी को सप्ताह में कम से कम एक निश्चित दिन साड़ी पहन कर आना अनिवार्य है। उसी प्रकार, युवक विद्यार्थियों को जीन्स छोड़कर, सही ढंग की पतलून व कमीज पहनकर आना आवश्यक है। ऐसा अनिवार्य रूप से होने पर फिर युवकों–युवतियों में सही भारतीय वस्त्र पहनने के संस्कार पड़ते हैं और इस प्रकार वे बलात्कार के शिकार होने से बचते हैं। वे आगे अपने विवाहित जीवन में आने वाली पीढ़ी को भी सही मार्ग–दर्शन दे सकते हैं। तो क्या हम अपने परिवारों में व शैक्षणिक संस्थाओं में ऐसे कार्यक्रम नहीं चला सकते?

दूसरे, अब हमारी गरीब बस्तियों के पास के जितने भी अँग्रेजी माध्यम के स्कूल हैं, उनमें बच्चों को टाई पहनना–(उलटी–सीधी) अनिवार्य है, इसे भी बन्द करवाना अत्यन्त आवश्यक है।

–सतीशचन्द्र गुप्ता, मुम्बई, मो–०९८२०५८७६०९

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

-१ से १५ दिसम्बर तक

जो कांपते नहीं हैं-''आखिर हमें बुढ़ापे से डर क्यों लगता है? क्या बुढ़ापा वास्तव में कोई डरने की चीज है? इस प्रश्न का समाधान वेद देता है। वेद कहता है कि वृद्ध वे होते हैं, जो कांपते नहीं हैं, स्थिर होते हैं, हर परिस्थिति में अपने को सन्तुलित बनाये रखते हैं। वृद्धावस्था आने तक समाज में जो अनुभव लिया, उसी का यह परिणाम है कि व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अडिग रहता है, वह जानता है कि मनुष्य जीवन है, तो कठिनाइयाँ आयेंगी ही। क्यों न इन्हें हंसकर पार किया जाये। जो व्यक्ति बड़ी आयु का होने पर भी कठिनाइयों के सामने घुटने टेक देता है, वह अभी बालक ही है, क्योंकि उसने संसार से सीख नहीं ली।'' ऋग्वेद ५.२०.२ के मन्त्र 'ये अग्ने न ईरयन्ति०'' की व्याख्या करते हुये **आचार्य सत्येन्द्र जी** ने ये विचार रखे। आगे उन्होंने कहा कि डर उस व्यक्ति को लगता है, जिसे स्वयं पर विश्वास नहीं होता। इसीलिये लोग ज्योतिषियों के पास जाकर अपना समय और धन बरबाद करते हैं।

फिर ईश्वर प्रसन्न कैसे हो?-रविवारीय कार्यक्रम में यज्ञोपरान्त धर्म पिपासुओं को सम्बोधित करते हुए **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि यदि हम लौकिक व्यवहार ही ठीक से नहीं कर सकते, तो ईश्वर के साथ उचित व्यवहार कैसे कर सकते हैं? हमारे व्यवहार से यदि हमारी लौकिक माँ प्रसन्न नहीं है तो सबकी माँ 'ईश्वर' प्रसन्न कैसे हो सकता है? सायं कालीन सत्र में गुरुकुल ऋषि उद्यान के ही स्नातक **आचार्य सानन्द जी** ने कहा कि ''समाज की इतनी हानि दुर्जनों की दुर्जनता से नहीं हुयी, जितनी सज्जनों की निष्क्रियता से हुयी है, अत: समाज के वरिष्ठ व्यक्तियों को सदा क्रियाशील रहना चाहिये।'' आ. सानन्द जी वर्तमान में विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों, ग्रामों में जाकर नशा मुक्ति पर प्रवचन देते हैं व युवा पीढ़ी को नशे से बचने की प्रेरणा देते हैं।

यज्ञशाला में अन्य महानुभावों ने भी ब्रह्मचारियों व आश्रमवासियों का मार्ग दर्शन किया। **मुमुक्षु मुनि जी** ने कर्त्तव्य-कर्म, **बालेश्वर मुनि जी** ने पुरुषार्थ व **रमेश मुनि जी** ने मानव जीवन पर प्रकाश डाला। **आचार्य योगेन्द्र आर्य जी** ने गायों के बारे में अपने विचार रखे व गाय की रक्षा के लिये सभी को प्रेरित किया। आपने गुरुकुल ऋषि उद्यान में ही अध्ययन किया है और वर्तमान में **हरियाणा गोशाला संघ के अध्यक्ष** पद पर रहते हुए **गो-रक्षा** का कार्य कर रहे हैं। सायं कालीन रविवारीय कार्यक्रम में ब्र. कृष्णदेव, ब्र. सोमेश एवं ब्र. सुरेश जी ने मधुर भजनों की सुन्दर प्रस्तुति दी।

सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार-कार्य-दिनांक २९ नवम्बर से २ दिसम्बर तक आर्यसमाज पंचकुला सेक्टर-९ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर व्याख्यान। व्याख्यान का विषय था-मुण्डकोपनिषद् की कथा। कार्यक्रम में डॉ. वीरेन्द्र अलंकार, डॉ. विक्रम विवेकी, पं. विश्वविद्या, पं. नरदेव, महेश विद्यालंकार व नरेश 'निर्मल' भी उपस्थित थे।

दिनांक २७ नवम्बर-पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में ''वेदाध्ययन की आवश्यकता'' पर व्याख्यान, जिसमें डॉ. नरेश बत्रा, रमेश जीवन आदि भी विद्यमान थे।

दिनांक ३ दिसम्बर से ९ दिसम्बर तक आर्यसमाज कालका नई दिल्ली में निम्न विषयों पर व्याख्यान-३ दिसम्बर-मृत्यु क्या है?, ४ दिसम्बर-पुनर्जन्म, ५ दिसम्बर-त्रैतवाद, ६ दिसम्बर-मृत्यु और उसके भय से मुक्ति, ७ दिसम्बर-मन का स्वरूप, ८ दिसम्बर-ऋषि का अद्वितीय चिन्तन, ९ दिसम्बर आर्यसमाज की उन्नति। ५ दिसम्बर-डॉ. सुरेन्द्र जी की ज्येष्ठ पुत्री का विवाह संस्कार कराया। १० दिसम्बर-राजेन्द्र व्यास जी के साथ वकील पण्ड्या उज्जैन के परिवार में विवाह संस्कार करवाया और उज्जैन के ही ओमप्रकाश जी व आर्यसमाज के अन्य व्यक्तियों से सम्पर्क किया। ११ से १४ दिसम्बर यज्ञ-गोष्ठी, वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ (गुजरात)

आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-३ दिसम्बर-वैदिक विद्वत् परिषद् की गोष्ठी में, पंजाबी बाग दिल्ली। ४, ५, ६ दिसम्बर-आर्यसमाज कुरवई विदिशा (म.प्र.) के उत्सव में व्याख्यान। कार्यक्रम के आयोजक राममुनि जी के ६ पुत्र और ५ पुत्रियां हैं, सभी अपने-अपने घर पर दैनिक संध्या व यज्ञ करते हैं। उनके परिवार में लगभग ४०-४५ व्यक्ति है, सभी वैदिक धर्म के संस्कारों से पूरित हैं। ७, ८, ९ दिसम्बर-होशंगाबाद के वार्षिकोत्सव में प्रवचन। ११ से १४ दिसम्बर यज्ञ-गोष्ठी, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुजरात) में। **-ब्र. प्रभाकर आर्य, गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. गुड़गांव में वेदप्रचार सप्ताह-आर्यसमाज राम नगर, गुड़गांव द्वारा एक सप्ताह के लिए २१ नवम्बर से २७ नवम्बर २०१२ तक विभिन्न खुले स्थानों पर यज्ञ-भजन-प्रवचन के माध्यम से वेद का ज्ञान जन-जन तक पहुँचाया गया। जिन इलाकों में प्रचार किया गया उनमें ८ मरला, मॉडल टाऊन रामनगर, शिवाजी नगर, नई बस्ती तथा कृष्ण नगर प्रमुख थे। इस अवसर पर वेदज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डॉ. योगेश-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार तथा युवा संगीतज्ञ आचार्य सतीश 'सत्यम्' पधारे हुए थे। प्रथम चार दिन आचार्य गवेन्द्र ने यज्ञ कराया तथा उसका महत्त्व बताया। अलग-अलग स्थानों पर बहुत संख्या में पहुँचकर श्रोताओं ने धर्मलाभ प्राप्त किया। अगले तीन दिन २५ से २७ नवम्बर तक आचार्य डॉ. योगेश ने महर्षि दयानन्द के जीवन वेद तथा सन्तति निर्माण पर प्रवचन दिए। युवा संगीतज्ञ आचार्य सतीश 'सत्यम्' ने ईशभक्ति तथा महर्षि दयानन्द के भजन प्रस्तुत किए। आचार्य गवेन्द्र तथा आचार्य डॉ. योगेश ने सभी स्थानों पर श्रोताओं की भारी संख्या को देखकर कार्यक्रम को अत्यन्त सफल बताया।

२. समर्पित वैदिक परिवार द्वारा पारमार्थिक आयोजन-सेठ लक्ष्मी नारायण स्मृति संस्थान, हिण्डौन हाउस गोपालपुरा बाईपास, जयपुर स्थित केन्द्र से पारमार्थिक गतिविधियों का संचालन करता है, उनमें श्वास रोगियों को प्रति पूर्णिमा औषधि युक्त खीर का सेवन प्रमुख है। केन्द्र के संचालक डॉ. प्रमोदपाल के अनुसार शरद पूर्णिमा की चाँदनी में विशेष आयोजन के साथ औषधि का सेवन कराया जाता है। गत २८ अक्टूबर १२ को शरद् पूर्णिमा पर आयोजन **भेषज-अग्निहोत्र** के साथ आरम्भ हुआ, जिसने पीड़ितों के आरम्भिक उपचार का काम किया। इसके पश्चात् श्री यशपाल 'यश' ने पीड़ितों को सरल यौगिक क्रियाएँ समझाईं और चन्द्रमा की रजत किरणों में उन्हें औषधियुक्त खीर का सेवन कराया। इस अवसर पर १७३ रोगियों ने औषध-पान किया। यह औषधि-वितरण एक दशक से जारी है और पीड़ित लाभान्वित हुए हैं। अग्निहोत्र के पश्चात् औषध वितरण से पूर्व प्रसिद्ध आर्य भजन गायकों ने अपनी प्रस्तुतियों से मधुरता बिखराई।

३. दीपावली में ४१ संस्थानों पर हवन-आर्यसमाज नेमदार गंज (नवादा-बिहार) द्वारा दीपावली के शुभ अवसर पर स्थानीय ४१ दुकानों में हवन-यज्ञ का कार्य सम्पन्न कर देर रात तक वैदिक मन्त्रों की गूँज को पूरे बाजार में गुंजायमान किया गया। सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत' राम किशोर साह, मनोज कुमार 'सौम्य', संजयकुमार 'मोक्षानन्द', हर्षवर्द्धन आर्य के प्रयास से यह सफलता प्राप्त हुई। ग्रामवासियों एवं दुकानदारों ने पारस्परिक सहयोग कर ऋषि निर्वाण की पावन रात्रि को 'एक दीपक बुझ गया ढेरों दीपक को जलाकर' को निरूपित किया। **-सत्यदेव।**

४. गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ का वार्षिकोत्सव पौष शुक्ल तृतीया, सोमवार, १४ जनवरी २०१३ को प्रातः ९.०० बजे से सायं ५.०० बजे तक होगा, जिसमें सामवेद पारायण महायज्ञ (पारायण यज्ञ ०९ जनवरी २०१३ से प्रारम्भ है) की पूर्णाहुति एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार प्रातः १० बजे, भजन-प्रवचन एवं ब्रह्मचारियों के रोचक बौद्धिक कार्यक्रम प्रातः ११ से सायं ४ बजे तक, ब्रह्मचारियों का आकर्षक शारीरिक बल प्रदर्शन अपराह्न ४ से ५ बजे तक होगा।

५. आर्यसमाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम, रामघाट मार्ग, अलीगढ़ ने अपना **वार्षिक महोत्सव** बड़े ही हर्षोल्लास एवं गरिमामयी उपस्थिति के साथ मनाया, जिसमें अनेकों रचनात्मक व क्रियात्मक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। कार्यक्रम की भव्यता हेतु पूरे महानगर में बैनर-पोस्टर लगाये व सभी प्रमुख समाचार पत्रों का कवरेज कराया गया।

प्रतिदिन योग शिविर प्रातः ६.०० बजे से ७.३० तक डॉ. पपेन्द्र आर्य, डॉ. के.पी. आर्य, योग शिक्षकों के द्वारा दर्जनों योग प्रेमी महानुभावों के बीच विधिवत् चला। तत्पश्चात् ८.०० से ९.०० बजे तक वैदिक-यज्ञ पण्डित राजपाल शास्त्री व पं. सुरेन्द्र शास्त्री आर्य पुरोहित के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञोपरान्त भक्ति-संगीत बिजनौर से पधारे-भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी ने प्रस्तुत किए एवं वेद प्रवचन में डॉ. रूपचन्द्र दीपक लखनऊ के सारगर्भित उपदेश जनता जनार्दन को आकर्षित करते रहे।

मध्याह्न में २.०० से ४.०० बजे तक प्रतिदिन एक निःशुल्क शिविर लगाया गया, जिनमें अनेक चिकित्सा विधाओं के विशेषज्ञों जैसे-आयुर्वैदिक, होम्योपैथिक, एलोपैथिक (सर्जन, दन्तचिकित्सा, नेत्र चिकित्सा, फिजीशियन, आर्थो.), एक्यूप्रेशर, चुम्बकीय, प्राकृतिक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

चिकित्सा के परामर्श एक ही स्थान पर उपलब्ध कराये। जिसमें रोगों से कराहती, तड़पती मानवता की सेवा की।

कार्यक्रम के सायंकालीन सत्र में प्रथम तीन दिन सत्यार्थप्रकाश के ४-४ समुल्लासों से एवं अन्तिम दिन २ समुल्लास एवं संस्कार विधि से प्रतियोगिता हुई। जिसका निर्देशन आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी ने किया।

संस्था का मुख्य कार्यक्रम 'दिवस आयोजन' में प्रथम दिन आर्यपितृ दिवस के रूप में, द्वितीय दिन आर्य मातृ दिवस के रूप में, तृतीय दिन आर्य युवक दिवस के रूप में तथा चतुर्थ दिन आर्य राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया गया। प्रारब्ध और पुरुषार्थ, यज्ञ, दान, पूजा और संगतिकरण एवं अष्टांग योग जैसे गम्भीर विषयों को पं. रूपचन्द्र दीपक जी ने व्यावहारिक ज्ञान के साथ बहुत सरल ढंग से प्रस्तुत किया।

६. किशनपोल महिला आर्य समाज, जयपुर-ने अपना **७५वाँ स्थापना दिवस** चैम्बर भवन ऑफ कॉमर्स जयपुर में बड़ी धूमधाम से मनाया। यज्ञ की ब्रह्मा विदुषी बहन आचार्या पुष्पा शास्त्री व वेदपाठ श्रुति शास्त्री द्वारा किया गया। यज्ञ कार्य श्री नृसिंह जी पारीक द्वारा सम्पन्न कराया गया। डॉ. रामपाल जी विद्या भास्कर ने सत्य के महत्व व जीत पर प्रकाश डाला। स्वामी सुमेधानन्द जी ने संस्कारों द्वारा लक्ष्य प्राप्ति पर प्रकाश डाला। डॉ. प्रभा पारीक ने ऋषि जीवन पर विवेचनात्मक रूप से प्रकाश डाला। इस अवसर पर ''महिला समाज का इतिहास व स्मारिका' का भी प्रकाशन करवाया गया, जिसका विमोचन स्वामी सुमेधानन्द जी व रामरखा जी द्वारा किया गया।

७. दिनांक २५ से २८ नवम्बर तक **आर्यसमाज श्रीगंगानगर** में **वेदप्रचार सप्ताह**-चारों वेदों के सौ-सौ मन्त्रों से यज्ञ का संचालन किया गया, उसकी समाप्ति अन्तिम दिन अथर्ववेद के १०० मन्त्रों से आहुतियां देकर हुई। ब्यावर से आये भजनोपदेशक श्री अमरसिंह ने अपने भजनों से ईश्वरभक्ति तथा स्वदेश प्रेम के विचारों को मुखरित किया। तत्पश्चात् कन्या गुरुकुल हाथरस की कन्याओं ने सामूहिक भजन के द्वारा श्रोता समुदाय को भगवद्भक्ति के सागर में स्नान करने का अवसर प्रदान किया। यज्ञ की ब्रह्मा विदुषी डॉ. निष्ठा वेदालंकार ने आर्यसमाज के प्रथम दो नियमों की रोचक व्याख्या कर आस्तिकता के वास्तविक स्वरूप को बताया। डॉ. भवानीलाल भारतीय ने प्रसिद्ध गायक एवं प्रचारक स्व. सुखलाल आर्य मुसाफिर के जीवन दृष्टान्त को उपस्थित कर आर्यसमाज की राष्ट्रीय विचारधारा तथा स्वदेश-भक्ति का विशद निरूपण किया।

८. स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, उत्तरप्रदेश-स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला, मेरठ में आगामी पौष शुक्ल द्वितीया, रविवार, वि.सं. २०६९ तदनुसार दिनांक १३.०१.२०१३ को प्रातः १० बजे प्रभात आश्रम के संस्थापक पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में **'वैदिक वाङ्मय में सरस्वती का स्वरूप'** विषय पर राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी आयोजित की गई है। विद्वज्जनों से निवेदन है कि अग्रलिखित विषयों पर अपना शोधलेख वॉकमेन चाणक्य ९०१-फॉन्ट में टंकित कर pavamanil1986 @gmail.com पर ईमेल करें। आप द्वारा शोधगोष्ठी में प्रस्तुत सभी उपयुक्त लेख त्रैमासिक शोधपत्रिका ISSN-२२२९-३६२८ 'पावमानी' में प्रकाशित किये जाते हैं।

शोधगोष्ठी में अग्रलिखित बिन्दुओं पर आप अपना शोधलेख प्रस्तुत कर सकते हैं-**१.** वैदिक साहित्य में सरस्वती का आध्यात्मिक स्वरूप, **२.** वेदों में देवताओं का स्वरूप, **३.** वैदिक साहित्य में सरस्वती का दैविक स्वरूप, **४.** वैदिक साहित्य में सरस्वती का नदी-स्वरूप, **५.** ब्राह्मण ग्रन्थों में सरस्वती का आध्यात्मिक स्वरूप, **६.** ब्राह्मण ग्रन्थों में सरस्वती का भौतिक स्वरूप, **७.** ब्राह्मण ग्रन्थों में सरस्वती का दैविक स्वरूप, **८.** आरण्यक एवं उपनिषदों में सरस्वती का स्वरूप, **९.** सरस्वती के सम्बद्ध वर्णन का सामाजिक संदेश, **१०.** सरस्वती नदी का वर्तमान स्वरूप, **११.** वैदिकोत्तरवर्ती साहित्य में वर्णित सरस्वती पर वैदिक प्रभाव।

-सम्पर्क : डॉ. दुर्गाप्रसाद मिश्र, आचार्य वाचस्पति ०९८३७६४७४२७,०९३१९००२४०२।

९. वैदिक धर्म प्रचार शिविर प्रयाग महाकुम्भ मेला २०१३-आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग पिछले कई दशकों से गंगा, यमुना के पावन तट पर ज्ञान की सरस्वती बहाने के हेतु वैदिक धर्म प्रचार शिविर लगती रही है। आगामी महाकुम्भ मेला २०१३ जो १३ जनवरी से २५ फरवरी तक चलेगा। इसमें सभा द्वारा बृहद वैदिक प्रचार शिविर लगाया जायेगा। इसमें समस्त आर्यजन सादर सपरिवार आमन्त्रित हैं, जिससे महाकुम्भ को आर्य महाकुम्भ में परिवर्तित किया जा सके। शिविर में भोजन एवं आवास की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क है, परन्तु पूर्व पंजीकरण अपेक्षित है। कृपया अपने पहुंचने की सूचना यथाशीघ्र भेजें। जिससे व्यवस्था में सुविधा हो। इस शिविर में विद्वानों, अतिथियों के अतिरिक्त भारत के अनेक प्रान्तों से पधारे तीर्थयात्रियों का अतिथि सत्कार भी

शेष पृष्ठ ३७ पर .....

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर जे/ए जे/४०/2012-2012 तक प्रेषण : ३० दिसम्बर,२०१२ RNI. NO. ३९५९/५९

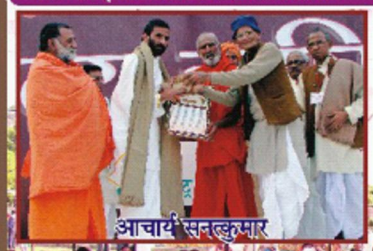
आचार्य सनत्कुमार

ब्र. शक्तिनन्दन

पंडित नरदेव

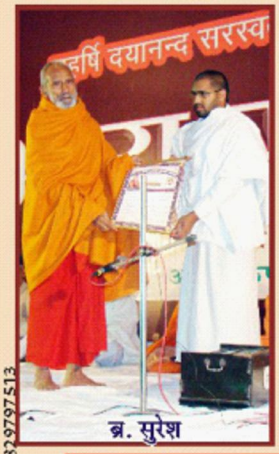
ब्र. सुरेश

आचार्य सानन्द

ब्र. प्रभाकर

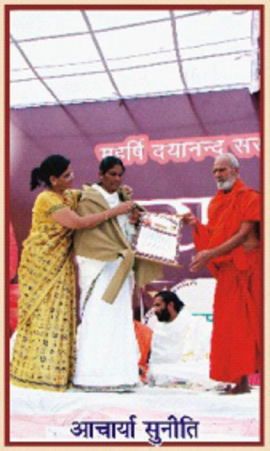
आचार्या सुनीति

आवरण : मित्तल 9829797513

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१